बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं की राजनैतिक चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं की राजनैतिक चेतना का तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी

की

पी-एच0डी0 (समाजशास्त्र)

उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

2002

शोध निर्देशक

डॉ0 वी.एन. सेठ

एम.ए., एम.फिल, पी-एच.डी.

डायरेक्टर कालेज डवलपमेन्ट काउन्सिल

छत्रपति साहू जी महा0 वि0वि0

कानपुर (उ0प्र0)

सह शोध निर्देशक

डॉ0 एस0एस0 गुप्ता

एम.ए., पी-एच.डी.

रीडर पं0 जे.एन.पी.जी. कालेज

बांदा (उ0प्र0)

शोधकर्ता

प्रमोद कुमार शिवहरे

पं0 जवाहर लाल नेहरू परास्नातक महाविद्यालय, बांदा (उ0प्र0)

CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY, KANPUR

Ph. No. (R) : 91-512-2369955
Fax & (O) : 91-512-2575331
Univ. Fax : 91-512-2570006
Res. : 17/3, Mall Road, Kanpur

Dr. V.N.Seth

M.A., M.Phil., Ph.D.(Sociology)

Chairman,
Co-ordination and Implementation Committee
U.P. SLET 2002
Training and Placement Officer
Former Director,
College Development Council
CSJM University, Kanpur

FORMERLY
i) **Pricipal,**
Pt. J.N.College, Banda, (U.P.)

ii) **Member,**
Executive Council,
CSJM University, Kanpur

iii) **Dean,**
Faculty of Arts,
CSJM University, Kanpur

iv) **Member,**
Academic Council,
CSJM University, Kanpur

v) **Convener,**
Board of Studies in Sociology,
CSJM University, Kanpur

vi) **Member,**
Executive Council,
Bundelkhand University, Jhansi

vii) **Reader and Head,**
Dept. of Sociology,
Pt. J.N.College, Banda(U.P.)
Christ Church College, Kanpur

viii) **UGC Teacher Fellow,**
Punjab University, Chandigarh
Centre of Advanced Study
in Sociology,
Delhi University, Delhi

Ix) **Research Fellow,**
International Project
Dept. of Humanities and
Social Sciences,
IIT, Kanpur

x) **DAAD Fellow,**
Frederich Alexander University,
Erlangen, Nurenberg (Germany)
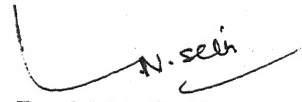
xi) **President,**
Bundelkhand Univ. Teacher's Assoc.

CERTIFICATE

Certified that Sri Promod Kumar Shivhare has worked for his Ph.D. Thesis on the topic "बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय के छात्र छात्रओं की राजनैतिक चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन" Under our supervision and this research study is his original work.

Kanpur
28 Dec 2002

V.N. Seth
Dr. V.N. Seth
Supervisor

Dr. Shiv Sharan Gupta
Co-Supervisor

घोषणा पत्र

मै प्रमोद कुमार शिवहरे, घोषणा करता हूँ कि समाजशास्त्र विषय के अर्न्तगत 'महाविद्यालय के छात्र छात्राओ में राजनैतिक चेतना' का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डाक्टर आफ फिलास्फी (पी.एच.डी.) उपाधि हेतु प्रस्तुत यह शोध प्रबन्ध मेरी स्वयं की मौलिक रचना है। इसके पूर्व ये शोध कार्य किसी अन्य के द्वारा कही भी प्रस्तुत नही किया गया है।

अपना यह शोध कार्य अपने परम पूज्यनीय निर्देशक डा० वी०एन०सेठ, डायरेक्टर कालेज डेवलपमेन्ट काउन्सिल छत्रपतिशाहू जी विश्वविद्यालय कानपुर के पथ प्रदर्शन में एवं डा० एस०एस० गुप्ता, रीडर, समाजशास्त्र विभाग, पं० जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय के सह निर्देशन में किया है।

प्रमोद कुमार शिवहरे

आभार

भारत, प्राचीन से विश्व गुरू के पद पर आसीन रहा है । हमारा प्राचीन साहित्य एवं उस पर आधारित समस्त दर्शनो मे ज्ञान के स्वरूप और ज्ञान प्राप्ति के साधनो पर विशेष रूप से प्रकाश डाला है मेरा अहोभाग्य है जो संसार के सर्वोच्च विचारो की भूमि मे जन्म लेने का अवसर प्राप्त हुआ है।

किसी भी देश की शक्ति और सम्पन्नता का आधार शिक्षा है। शिक्षा उस देश के जीवन-दर्शन और आकार -प्रकार अर्थव्यवस्था और शासन तन्त्र पर निर्भर करती है। वर्तमान मे राजनीति का अपराधीकरण और अपराधियो का राजनीतिकरण हो जाना ही शिक्षा की दुर्दशा को प्रकट करता है। क्या वास्तव मे हमारी नैतिकता इतनी गिर गयी है कि हम प्राचीन सम्मान को बनाये रखने लायक नही बचे शायद है । यही वो बिन्दु है जो शोध कर्ता के स्मृति पटल पर चल चित्र की भाति छाये रहते है इनसे छुटकारा दिलाने के लिए शोधार्थी ने एक ऐसे व्यक्ति को उभारने का प्रयास किया है जिनका कर्तव्य शिक्षा कि शाश्वत मूल्यो को पुर्नस्थापित करने में अपनी अहम् भूमिका प्रदान- की है।

प्रस्तुत अनुसंधाान को पूरा कराने का सम्पूर्ण श्रेय College development councel (छत्रपति शाहू जी महराज विश्व विद्यालय कानपुर) के Director पूर्व प्राचार्य जे. एन. पी. जी0 कालेज बाँदा तथा मेरे शोध ग्रन्थ के निर्देशक श्रद्धेय डा0 वी0 एन0 सेठ को है जिनका मै आजीवन ऋणी रहूँगा । डा0 सेठ ने राजनीतिक समाज शास्त्र जैसे गम्भीर विषय मे अपने चिन्तन के द्वारा सामाजिकता का जो स्वरूप प्रस्तुत किया वह शोधार्थी के लिये एक मार्ग दर्शन के रूप में सामने आया । उदार व्यक्तित्व एवं मानवता के संरक्षक डा0 सेठ का मै हृदय से

अभारी हूँ जिन्होने प्रारम्भ से अन्त तक इस कार्य को पूर्ण कराने में अपना अमूल्य समय देकर मेरा पथ प्रदर्शन किया ।

अनुसंधान के शीर्षक प्रणयन का संकल्प लेने मे मै अपने पूज्यनीय गुरू तथा शोध ग्रन्थ के सह निर्देशक डा0 एस0 एस0 गुप्ता, रीडर, समाज शास्त्र विभाग (पं. जे. एन. पी.जी. कालेज बांदा) के प्रति ह्वदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होन मेरी रूचि को भापकर उक्त शीर्षक पर कार्य करने का सुझाव प्रदान किया एवं स्थानीय होने के नाते अपना बहुमूल्य समय का परित्याग करते हुये सहयोग देते रहें ।

पं. जवाहर लाल नेहरू के प्राचार्य श्री आई.जे. सिंह का अभारी हूँ जिन्होने मुझे शोध कार्य मे सदैव सहायता प्रदान की है ।

मै अभारी हूँ पं. जे.एन.एल.पी.जी. कालेज समाजशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डा0 जसवन्त प्रसाद नाग, डा0. निर्मलाशर्मा डा0 दिव्या चौधरी का जिनका समाजशास्त्र जैसे अन्तर्राष्ट्रीय विषय का प्रारम्भ से शिष्य रहा हूँ यह मेरा अहोभाग्य, आप लोगो ने सदैव मेरा पथ प्रदर्शन किया हैं ।

परिवार नामक प्रारम्भिक पाठशाला के रूप में ही मनुष्य का समाजीकरण होता है इसी को आधार मानकर मै अपनी पूज्यनीय माता श्री मती राजादेवी एवं पूज्यनीय पिता श्री रामसेवक शिवहरे का जन्म जन्मान्तर ऋणी रहूँगा जिनका मुझें सदैव अर्शीवाद मिलता रहा । लार-प्यार डॉट एवं नाराजगी के साथ अवरूद्ध शोध कार्य को अग्रसारित करने हेतु प्रोत्साहित करने का श्रेय मेरे बडे भाई अनिल कुमार शिवहरे, जो एक सफल व्यवसायी है, मै उनका आजीवन ऋणी रहूगां । सुखदेव सिंह महाविद्यालय के संस्थापक प्रबन्धक श्री चन्द्रपाल जी कुशवाहा का मै ह्वदय

से अभारी है जिन्होने महाविद्यालय के प्राचार्य पद से आवश्यकतानुसार कार्ययुक्त करके अनुसंधान कार्य को पूर्ण कराने मे सहयोग प्रदान किया।

विशेष अभारी हूँ सम्बन्धित महाविद्यालय छात्र-छात्राओ का जिन्होन समुचित उत्तर देकर शोधकार्य को सफल बनाया ।

अंत मे मै उन महानुभावो को प्रति आभार ज्ञापित करता हूँ जिन्होने विभिन्न प्रकार के स्रोतो सूचनाओ का संकलन कराने मे एवं इस कार्य को व्यवस्थित रूप प्रदान करने मे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देते रहे है ।

प्रस्तुत अनुसंधान राजनैतिक समाजशास्त्र के किसी भी पक्ष की समपुष्टि कर सकें तो मै अपना श्रम साध्य समझूंगा ।

स्थान -न्यूमार्केट बांदा
उ0प्र0, 210001

विनयावत
प्रमोद कुमार शिवहरे

सारणी-सूची

क्र0सं0	सारणी का नाम	पृष्ठ संख्या
3.1	सूचनादाताओ की आयु	53
3.2	सूचनादाताओ का धर्म	54
3.3	सूचनादाताओ की आयु समूह	55
3.4	सूचनादाताओं की कक्षा का स्तर	56
3.5	सूचनादाताओ की कक्षा/सकांय के स्तर का विभाजन	56
3.6	सूचनादाताओ का जन्म स्थान	58
3.7	सूचनादाता भूत प्रेत मे विश्वास करते है अथवा नही	58
3.8	सूचनादाता नित्य पूजा करते हैं	59
3.9	सूचनादाता दूसरो के पूजा सीान मे जाना पसन्द करते है।	60
3.10	सूचनादाता क्या धार्मिक कर्मकाण्ड पसन्द करते है	61
3.11	सूचनादाताओ के शुभकार्य मे जाते समय बिल्ली रास्ता काट जाये या कोई छीक दे तो वे क्या करेगे ।	62
4.1	सूचनादाताओं के माता पिता /संरक्षक की आय	65,66
4.2	सूचनादाताओ की माता का व्यवसाय	67
4.3	सूचनादाताओ के परिवार की मासिक आय	67,68
4.4	सूचनादाताओ की वैवाहिक स्थिति	68
4.5	सूचनादाताओ की वैवाहिक आयु	69
4.6	सूचनादाता मे वैवाहिक सम्बन्धी निर्णय कौन करेगा	70
4.7	सूचनादाताओ का विवाह किस जाति समूह मे होने की सम्भावना है	71

4.8	सूचनादाता का विवाह किस रीति से होगा	72
4.9	सूचनादाता दहेज लेना पसन्द करेगा	73
4.10	सूचनादाता परिवार नियोजन आवश्यक समझते है।	74
4.11	सूचनादाता के अनुसार परिवार नियोजन आवश्यक होने के कारण	75
4.12	सूचनादाता के अनुसार परिवार नियोजन आवश्यक न होने के कारण ।	75,76
4.13	सूचनादाता क्या एक पुत्र का होना आवश्यक मानते है	76
4.14	सूचनादाता एक पुत्र का होना क्या आवश्यक मानते है (कारण)	77
4.15	सूचनादाता एक पुत्र का होना आवश्यक क्यो नही मानते (कारण)	78
4.16	सूचनादाताओं के परिवार के प्रकार	79
4.17	सूचनादाता निम्न प्रकार के परिवार मे रहना पसन्द करते है।	80
4.18	सूचनादाता के पिता/संरक्षक का व्यवसाय	80,81
4.19	सूचनादाता के पिता /संरक्षक की शिक्षा	82
5.1	सूचनादाताओ के जाति समूह के आधार पर अर्न्तराष्ट्रीय चेतना मे राजनैतिककरण उत्तरो के प्राप्तांक	99
5.2	सूचनादाताओ के जाति समूह के आधार पर राष्ट्रीय चेतना में राजनैतिक करण उत्तरो के प्राप्तांक	101
5.3	सूचनादाताओ के जाति समूह के आधार पर प्रादेशिक चेतना मे राजनैतिककरण उत्तरो के प्राप्त	102
5.4	सूचनादाताओ के जाति समूह के आधार पर क्षेत्रीय चेतना में राजनैतिक करण के प्राप्तांक	103

5.5	सूचनादाताओ के जाति समूह के आधार पर मीडिया चेतना मे राजनैतिक करण उत्तरो के प्राप्तांक	104
5.6	सूचनादाताओं के जाति समूह के आधार पर सम्पूर्ण राजनैतिककरण उत्तरो के प्राप्तांक	105
5.7	सूचनादाताओ में जाति समूह के आधार पर राजनैतिक चेतना का स्तर ।	107

विषय सूची

प्रमाण पत्र

घोषणपत्र

आभार

सारणी सूची

प्रथम अध्याय :प्रस्तावना 1–28

1. अध्ययन का उद्देश्य
2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व
3. शोध प्रश्न
4. साहित्य का सिंहावलोकन
5. प्राकल्पना का निर्माण
6. सैद्धान्तिक पक्ष
7. प्राकल्पनाओ का परीक्षण

अध्याय द्वितीय : अध्ययन पद्धति 29–52

1. शोध प्रारचना का प्रारूप
2. अध्ययन क्षेत्र
3. निर्दशनविधि
4. शोध प्राविधि
5. साक्षात्कार अनुसूची
6. राजनैतिककरण का पैमाना
7. संख्यकीय परिक्षण
8. शोध अनुभव

अध्याय तृतीय : सूचनादाताओ की सामाजिक पृष्ठभूमि 53–64

सूचनादाताओं की सामाजिक पृष्ठभूमि

अध्याय चतुर्थ : सूचनादाताओ की परिवारिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि 65–84

सूचनादाताओ की परिवारिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि

अध्याय पंचम : राजनैतिक चेतना का अध्ययन 85–110

1. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर
2. राष्ट्रीय स्तर पर
3. प्रादेशिक स्तर पर
4. क्षेत्रीय स्तर पर
5. मीडिया स्तर पर

अध्याय षष्ठ : निष्कर्ष 111–124

1. सरांश
2. विश्लेषण

अध्याय सप्तम : परिशिष्ट

1. पुस्तक विवरण एवं सन्दर्भ
2. सक्षात्कार अनुसूची

: प्रथम अध्याय :

प्रस्तावना

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शोध प्रश्न

साहित्य का सिंहावलोकन

प्राकल्पना का निर्माण

सैद्धान्तिक पक्ष

प्राकल्पनाओ का परीक्षण

प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की राजनैतिक चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन से सम्बन्धित है।उत्तर प्रदेश में बुन्देलखण्ड आर्थिक दृष्टि कोण से पिछडा क्षेत्र है तथा प्रस्तुत अध्ययन मे बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कुछ महाविद्यालयो के छात्र-छात्राओं की राजनैतिक चेतना का अध्ययन किया गया है ।

हमारा प्रदेश भारत का विशाल प्रदेश है। इसमें सभी धर्म सभी जाति समुदाय एवं वर्ग के लोग रहते है । इनमें आपस मे प्रेम भाईचारा सदभावना आदि हमेशा रही है आजादी के बाद हमारे देश मे बहुत से सामाजिक परिवर्तन हुये है जिसमे राजनीतिक परिवर्तन की भी विशेष भूमिका रही हैं जनतन्त्र की स्थापना के बाद हमारे देश मे राजनीति का महत्व निरन्तर बढता ही गया है। जिसके परिणाम स्वरूप देश मे राजनीति करण की प्रक्रिया भी उसी अनुपात मे बढी है आज हमारे देश का हर समूह हर समुदाय हर व्यक्ति एक -एक करके राजनीति से जुड रहा है। राजनीतिकरण की इस प्रक्रिया मे अब पुरूषो के साथ महिलाये भी अधिक संख्या मे राजनीति से जुडी जा रही है।उनमे भी राजनीति चेतना जागरूक हुयी है।

राजनीतिक दलो का उदय तथा एक दल का दूसरे दल मे विलय राजनीति सक्रियता मे तेजी आन्दोलन राजनीतिक हिंसा की बढती लहर विभिन्न,वर्गो एवं समूहो में राजनीतिक वेचैनी बढती शिक्षा के साथ राजनीतिक जागरूकता दलो एवं नेतृत्व की तीब्र प्रतिष्पर्धा आदि राजनीति के ऐसे अनेक पहलू है जो देश मे बढते राजनीति के विभिन्न अंग बन गये है राजनीति करण का अभिप्राय एक समूह या एक व्यक्ति का राजनीतिक व्यवस्था के साथ जुडता है व्यक्ति व्यवहारिक रूप से

नही वैचारिक रूप से भी राजनैतिक व्यवस्था में जुडता है। इसके द्वारा व्यक्ति का राजनीतिक से सम्बन्धित अभिवृत्तियों, दृष्टिकोणो, विचारो एवं व्यवहार तथा क्रिया कलापों मे विकास वृद्धि एवं परिवर्तन होता है इस प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यक्ति केवल राजनीति में शिक्षित एवं प्रशिक्षित ही नही होता साथ ही वह राजनीति को भलीभांति सीखता, विचारो के अनुसार व्यक्तिगत व सामाजिक हितो की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील होता है।

जनतान्त्रिक मूल व्यवस्था के विकासित होने पर राजनीति करण की प्रवृत्ति बढती है। यही कारण है कि हमारे देश में राजनैतिक जागरूकता का प्रसार अधिक हुआ है। इसमें राजनीतिक सहभागिता की निरन्तर वृद्धि हो रही है और राजनीतिकरण प्रवृत्ति का धोतक हैं। राजनीतिकरण की प्रक्रिया अब केवल महानगरों तक ही सीमित नही है। अब यह प्रक्रिया देश के हर गॉव हर कस्बें एवं आदिवासी क्षेत्र में पहुच चुकी है ।राजनीति चेतना एवं सहभागिता का परिणाम अब स्पष्ट से परिलाक्षित होने लगा है इसमें सामान्य जन जीवन प्रभावित होता जा रहा है। और राजनीतिक उपलब्धियों की जानकारी हर व्यक्ति को उत्साहित कर रही है। वह राजनीति से जुडे राजनीति से जुडना हर व्यक्ति के लिये प्रत्यक्ष रूप से सम्भव नही फिर भी कुछ लोग विभिन्न राजनीतिक क्रिया कलापो से जुडने लगे है। इसमें फलस्वरूप राजनीतिक सहभागिता मे वृद्धि हो रही है ।

चूंकि राजनीति ने हर क्षेत्र में अपना विस्तार इतना अधिक बढा लिया है कि हर जाति, हर धर्म, हर विभाग, हर व्यवसाय इसमें जुड गया है। इसलिये अब हर व्यक्ति यह मानने लगा है कि इस सहभागिता के मूल मे ही उसका विकास सम्भव है उन्नति के शिखर पर पहुचने के जितने भी साधन है व्यक्ति उनमे राजनीतिक सहभागिता को ही वरीयता देता है क्योकि राजनीतिक भागीदारी व्यक्ति

का अपने आर्थिक एवं सामाजिक विकास को प्राप्त करने मे अधिक उपयुक्त लगी है राजनीति प्रभावकारिता इसका एक ही मुख्य कारण है।

आज साधारण व्यक्ति की भी यही धारणा बन गयी है कि वह राजनीतिक प्रभाव से सरकार को अपने हित मे सहमति के लिये बाध्य कर सकता है और यह राजनीतिक दलो एवें उनके सहयोग से ही सम्भव हो सकता है। प्राय: यह भी देखा गया है कि विभिन्न वर्ग या राजनीतिक दल सामूहिक रूप से समस्या के प्रति सरकार का ध्यान आकर्षित कराने मे घेराव,धरना हडताल, आन्दोलन आदि के द्वारा अपने हितो की पूर्ति भी करने मे सफल हो रहे है। और इन सब क्रिया कलापो को देखकर आम जनता प्रभावित हो रही है और साथ ही उसके महत्व को समझने लगी है विभिन्न राजनीतिक दलो एवं वर्गो की इन क्रिया कलापो से प्राप्त होने वाले लाभ, आम जनता पहचानने लगी है। यह उपलब्धि एवं राजनीतिक चेतना बढाने मे सहायक हो रही है।

मैक्स वेबर (1968) के अनुसार ''राजनीति मनुष्य समाज मे पायी जाने वाली एक सामान्य प्रक्रिया है। यह मानव जाति के समस्त इतिहास मे पायी जाती है विभिन्न युगो मे इसके विभिन्न रूप रहे है यह विभिन्न सिद्धान्तो पर अधारित रही है तथा इसमें बहुत अधिक भिन्नताये रखने वाली संस्थाओ का जन्म दिया है" **Max weber (1968 :218)** कहते है' Politics is a common activity of human being . It fills humen history it has assumed different forms over the ages, it has been basadon different principles and has produced the most varied. "

अब भारतीय समाज में राजनैतिक जागरूकता छात्र/छात्राओं मे तेजी से बढ रही है ।जिसके परिणाम स्वरूप आज कई छात्राये राजनैतिक दलो में सक्रिय रूप से कार्य कर रही है और इस राजनैतिक चेतना का असर बहुत कुछ छात्र

/छात्राओ मे पडा है जिसके कारण आज अनेक छात्र/छात्राओं ने अपने कदम आगे बढाये हैं।

भारतीय समाज में आर्थिक एवं सामाजिक विषमता अन्य साधनो की तुलना में बहुत कुछ अधिक है भौगोलिक दृष्टि से भी यहां अनेक विषमताऐं दिखाई देती है ऊंच नीच जाति के स्तरो पर ही नही मानव समाज विभाजित है बल्कि शिक्षित प्रशिक्षित, धनवान,नगरीय, ग्रामीण भिन्न-2 प्रकार के समूहो मे विभक्त हैं। भौगोलिक एंव परिस्थितिक दृष्टि से नगरीय लोगो का भी विभाजन महानगरीय, नगरीय उपनगरीय एवं कस्बे के रूप मे दिखायी पडता है दूसरी ओर नगर और ग्राम के रूप मे भी मानव समुदाय विभक्त दिखाई पडता है और यही नही सभ्य और जंगल में बसे हुये आदिवासी के रूप मे भी विभक्त है राजनीतिक प्रभावकारिता अधिक है तो वहॉ राजनैतिक चेतना भी अधिक दिखाई पड़ती है इसके विपरीत जहॉ पर विकास की किरण पूर्णतया नही पहुची है, वहा राजनीतिक प्रभावकारिता एवं चेतना अपेक्षा कृत कम दिखाई पडती है विश्व के आज अनेक देशो में देखा जा रहा है कि जिस देश जाति के लोग अल्प संख्यक के रूप मे पाये जाते है सामूहिकता की भावना उनमें परस्पर अधिक दिखलायी पडती है क्योकि उनमें सदैव भय की भावना बनी रहती है उन्हे एक जुट हो कर रहना आवश्यक है क्योकि समूह मे भी या भीड मे व्यक्ति अपने को अधिक शक्तिशाली समझने लगता है। अकेले की अपेक्षा तथा व्यक्ति साथ ही साथ समूह मे रहकर वह असम्भव कार्य भी सम्भव कर सकता है। इसलिए प्रत्येक राष्ट्रीय नागरिक को राष्ट्रीय राजनीतिक के विषय मे सचेत रहना चाहिये जिससे हमारे समाज का विकास हो और हमें तथा समाज को आगे बढने का मौका मिले। वास्तविक रूप से यह विषय राजनीतिक समाज शास्त्र से सम्बन्धित है।

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के द्वारा छात्र एवं छात्राओं मे राजनैतिक चेतना का समाज शास्त्रीय अध्ययन करने का प्रयास है प्रमुखतः अध्ययन के दो प्रमुख उद्देश्य है।

पहला यह कि विद्यार्थी मे राजनीतिकरण का किस स्तर तक प्रचार महाविद्यालय में हुआ है। दूसरा यह कि क्या राजनैतिक चेतना का स्तर लिंग, शिक्षा, जाति, एवं वर्ग से प्रभावित होता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन मे महाविद्यालय के द्वारा छात्र एवं छात्राओं के स्नातक एवं परास्नातक विद्यार्थियों का उच्च जाति पिछडे वर्ग एवं अनुसूचित जातियो का तथा विभिन्न वर्गी के आधार पर अध्ययन किया गया है।

यह अध्ययन आर्थिक रूप से पिछडे क्षेत्र मे किया गया है। बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश का आर्थिक दृष्टिकोण से पिछडा क्षेत्र है एवं यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या पिछले क्षेत्र मे राजनैतिक चेतना कम होती है अथवा अधिक होती है।

अतः इस अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. महाविद्यालय के विद्यार्थियो में राजनैतिक चेतना के स्तर का मापन ।
2. राजनैतिक चेतना का छात्र एवं छात्राओं की तुलनात्मक अध्ययन ।
3. परास्नातक स्तर के विद्यार्थियो का स्नातक स्तर के विद्याथिर्यो की राजनीतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन ।
4. उच्च जाति के पिछर्डे वर्ग एवं अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियो की राजनैतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन ।
5. राजनैतिक चेतना का संख्यात्मक मापन ।

वस्तुतः प्रभाव, बल, दमन,हिंसा और आतंक है।जिसे अग्रसारित करने का श्रेय वर्तमान नयी युवा पीढी वर्ग से आपेक्षित है। राजनैतिक चेतना के अन्य उद्देश्यों मे विश्वविद्यालय एवं माहविद्यालय मे छात्र छात्राओ मे किन आधारो पर राजनीतिक विकसित होती है। राजनीति मे प्रवेश के पश्चात किस प्रकार के छात्र छात्राओं का उत्साहवर्धन, शोषण, सम्मान, दमन तमाम इस प्रकार की औपचारिकताए बडे राजनीतिक दलो के द्वारा की जाती है। राजनैतिक चेतना मे छात्रो की अपेक्षा छात्रो की अपेक्षा छात्राओ का प्रतिशत जाति के आधार पर वर्ग के आधार पर आर्थिक सामाजिक स्थिति के आधार पर इसके अतिरिक्त अन्य में कम अथवा अधिक पाया जाता है।

अध्ययन का महत्व (आवश्यकता)

प्रस्तुत अध्ययन में पढ रहे छात्र/छात्राओं की राजनैतिक चेतना का तुलनात्मक समाज शास्त्रीय अध्ययन है। आदिकाल मे समकालीन मानव समाज में राजनीति सबसे महत्वपूर्ण है और राजनीतिक के इर्द गिर्द सारी मानव संस्थाए एवं मानव सम्बन्ध आधारित है ये अध्ययन राजनैतिक समाज शास्त्र के अन्तर्गत है।

राजनैतिक समाजशास्त्र का मुख्य उद्देश समाज तथा समाज मे निर्णय लेने वाले व्यक्तियो के बीच तथा निर्णय लेने वाली संस्थाऐ सामाजिक शक्तियों मे निरन्तर होने वाली अन्तरक्रिया को एक राजनैतिक प्रक्रिया के रूप मे अध्ययन करता है।

राजनैतिक समाज शास्त्र राजनैतिक व्याख्या में एक वास्तविक तथा नया मोड प्रस्तुत करता है। राजनीति का लयकार प्रमुखतः समाधिक सन्दर्भ सत्ता से है, सत्ता से तात्पर्य एक व्यक्ति या समाज द्वारा कार्यवाही करने के निर्णयय एवं

उनमें कार्यान्वित करने की क्षमता चाहे दूसरे व्यक्तियों या समूहो के विरोध के बावजूद भी है।

मैक्सबेवर ने सत्ता को एक ऐसी शक्ति रूप मे स्पष्ट किया है जिसे वैधानिक हिंसा का अधिकार प्राप्त होता हैं। राज्य की परिभाषा करते हुये **मैक्स बेवर** (1991:28) लिखता है कि राज्य मुनष्यो पर मनुष्यों के प्रभुत्व का सम्बन्ध है। वैधानिक अर्थात, (वैधानिक समझाने वाला) हिंसा के द्वारा समार्पित सम्बन्ध ।

Max weber ने अपनी पुस्तक पोलिकिल सोसलॉजी (1971:28-29) मे कहा है कि " The stet is the relation of men dominating men, a relation supported by means of ligitinate (i,-e considered to be legitimate) evidence .

सत्ता को समझने से पूर्व शक्ति को समझ लेना आवश्यक है क्योकि इन दोनो मे घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

मैक्स बेवर (1971) के अनुसार मे शक्ति उन लोगो मे निहित होती है जो दूसरे के व्यवहार को उनकी इच्छा के विरूद्ध प्रभावित कर सकते है । **मैक्स वेवर** (1971) मे कहते है कि

जब शक्ति इस शक्ति को वैधानिक स्वीकृति मिल जाती है तो उसे सत्ता कहते है।

सभी समाजो और उसकी सभी संस्थाओं उनमें बनने वाले सभी सम्बन्ध और अन्तक्रिया सत्ता से सम्बन्धित या सत्ता के ईद गिर्द रहते है चाहे वे परिवार धार्मिक संगठन या विश्वविद्यालय या श्रमिक संघ हो ।

कार्लमार्क्स ने अत्यन्त प्रभावशाली ढंग राजनैतिक शक्ति की प्रकृति तथा उसके सामाजिक, आर्थिक संगठन के सम्बन्ध को उजागर किया है। **Marx and Engeles (1962)** नें आर्थिक संरचना एवं उपसंरचना के सम्बन्ध में कहा है। कि

" In the words of Marx and Engels – The economic structure of society always furnished the real basis starting from which alone we can workout the ultimate explanation of the whole super structure of judicial and political institution as well as of the religious philosphical and other ideas of a given historical period."

मार्क्स के अतिरिक्त बहुत से सामाजिक विचारक जैसे कि अरब का विचारक IBM Khaldun का कहना था कि विचार धारा सत्ता की उपसंरचना है। मार्क्स विचार धारा के विरोध मे कौटिल्य,मैक्यावली,पैरटो,यास्का, मैक्यावली ही प्रमुख है। मैक्यावली ने शासकीय अभिजात वर्ग व्यक्तिगत प्रतिमा क्षमताएं की सृजनात्मक भूमिका के योगदान पर बल दिया है। जो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक दबावो से प्रभावित नही है ।

मैक्यावली ने सत्ता की प्रभुशीलता मे नेतृत्व की भूमिका को प्रभावी माना है यद्यपि दोनो विचारक एक दूसरे के विरोधी है लेकिन फिर भी दोनो ने समाज और राजनीति के सम्बन्ध की राजनीति के अध्ययन के लिए आवश्यक माना है राजनैतिक चेतना से तात्पर्य जनता के राज्य सरकार और सामाजिक संस्थाओं के बीच की अर्न्तक्रिया की जागरूकता किसी भी समाज मे राजनैतिक का प्रसार किस हद तक युवा पीढी मे फैला है वो समाज के विकास व होने वाली गतिविधियो के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

क्या राजनैतिक चेतना का शिक्षा या उच्च शिक्षा से विशेष सम्बन्ध है या नही ? तथा क्या राजनैतिक चेतना केवल पुरूषो का अधिकार है इस ओर

शोध दृष्टिकोणो को ध्यान मे रखते हुऐ प्रस्तुत अध्ययन युवा पीढी के उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे है छात्र/छात्राओ की राजनैतिक चेतना का समाज शास्त्रीय अध्ययन है।

सामान्यत: युवा छात्र/छात्राओ ने राजनीति और समाज की अनिवार्यता सम्बद्ध को स्पष्ट करके एक नवीन समग्रतावादी दृष्टि कोण का विकास किया। युवा राजनीतिज्ञो ने ही तीव्र राजनैतिक परिवर्तन से उत्पन्न सामाजिक, आर्थिक दशाओ और आर्थिक विकास के परिणामों का अध्ययन करके वर्तमान राजनीति तथा राजनीतिज्ञो के गुणों अवगुणो को उजागर किया है। राजनैतिक चेतना ने समानतावादी मूल्यो पर आधारित लोकतान्त्रिक राज्य व्यवस्था और रूढवादिता पर आधारित समाज व्यवस्था के सह अस्तित्व ने दोनो पक्षों के पारस्परिक प्रभाव के अध्ययन को आवश्यक बना दिया है ।

धार्मिक समूहों, जातियो, नातेदारियो, बिरादारियो आर्थिक सरचनाओ और पराम्परगत सांस्कृतिक मूल्यो तथा सामाजिक उनमेषो का तथ्यात्मक विश्लेषण करके ही भारतीय राजनीति मे दिखाई देने वाले तनावो तथा सफलताओ को समझा जा सकता है।

प्रत्येक अर्धविकसित देश अथवा विकासशील देश के नागरिक का कर्तव्य होता है कि वह अपने देश को विकास के पथ पर आगे लाये तथा सुख समृद्धि लाने मे अपना योगदान दे जिसे करने के लिए अपने समाज की संरचना को भलीभॉति समझना होगा। राजनैतिक समस्याओं आवश्यकताओ एवं आकांक्षाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करनी होगी ये सभी कार्य राजनैतिक चिन्तन अथवा राजनैतिक चेतना से ही सम्भव है। भारत जैसे विकास शील देश मे राजनैतिक चेतना की अत्यधिक महत्ता पाई जाती है जिसका आधार धर्म

निरपेक्ष एवं समतावादी समाज की शिक्षा मे आगे बढना तथा विकास योजनाओ को सफलता पूर्वक आगे बढाना है। राजनैतिक चेतना के ही द्वारा राजनीति मे व्याप्त बुराइयो जैसे भ्रष्टाचार, श्वेतवसन अपराध अनुशासनहीनता को दूर किया जा सकता है ।

प्रशासनिक सेवाओ मे उच्च पदो पर आसीन अधिकारियो के लिए राजनैतिक चेतना द्वारा ही राजनैतिज्ञ अपने सीमित ज्ञान के आधार पर विभिन्न आवश्यक सामग्री एवं ज्ञान प्रदान करते है।

राजनीति क्या है? राजनीति शब्द मूलतः संस्कृत भाषा का है जिसका अर्थ होता है राजा की नीति किन्तु वर्तमान सम्बन्ध मे इस शब्द का जिस अर्थ मे प्रयोग होता है वह इससे भिन्न और व्यापक हैजैसा कि रार्बट ने लिखा है कि मानव समुदायो के ऊपर शासन करने की कला को ही राजनीतिक कहते है।

जार्ज कैटलिन (1962 :79)''समस्त राजनीति स्वभावतः शक्ति और संघर्ष से सम्बन्धित है ।''

मैक्स बेवर के अनुसार ''राजनीति का अर्थ है शक्ति के लिए संघर्ष अथवा उन लोगो को प्रभावित करने की कला जिसके हाथो मे सत्ता है परस्पर राज्यो के वीच जो संघर्ष चलता है। अथवा राज्य के भीतर विभिन्न संगठित समुदायो के बीच होने वाला संघर्ष दोनो ही राजनीति मे आते है ।''

शैल्डन बेलिन (1960:11)''राजनीति एक ऐसी प्रकिया है जिससे हम परिस्थितयों के अनुसार दूसरो के साथ ऐसे सम्बन्ध स्थापित करने का निरन्तर प्रयत्न करते हैं जिनसे अपने लक्ष्य की अधिक से अधिक पूर्ति हो सके ।

राजनीति शक्ति मे भागीदारी अथवा राज्यो के अन्दर के समूहों के वीच शक्ति विभाजन के प्रभाव का सिद्धान्त है।

प्रस्तुत अध्ययन विषय वस्तु की बहुकोणीय एवं गहन अभिव्यक्ति है। इससे जहाँ स्वयं को सही नतीजे मिलते है वही अगामी सकारात्मक कदम उठाने मे मार्ग दर्शन होता है छात्राओं मे राजनीतिक चेतना एवं सहभागिता के अध्ययन हेतु नवयुवको को विशेषकर छात्रो छात्राओं के साक्षात्कार से उनकी वास्तविक सोच का सज्ञांन कराया है जो इस दिशा मे हमें आगे बढाने के लिए बहुत होगी। राजनीतिक चेतना की अभिवृद्धि तथा मिलने वाले लाभ उनके सामाजिक स्तर को और सम्मानजनक बनाते है। ऐसे अध्ययन से लोकतन्त्र प्रक्रिया मे छात्रो को प्रदत्त अधिकारो के उपयोग मे वृद्धि होती है और विभिन्न समस्याओं का स्वत: निदान हो जाता है। फलस्वरूप खोज परक अध्ययन की निरन्तरता बनाये रखना आवश्यक हैं। इससे छात्र सम्बन्धित प्रचलित कानूनो की उपयोगिता तथा उनमें तथा उनमें परिवर्तन की दिशा पर प्रकाश पड सकता है उनके पिछडेपन को दूर करने और उनके उत्पीडन व शोषण से मुक्ति दिलाने की दिशा मे अग्रसर होने का सम्मान प्राप्त हो सकता है ।

नि:सन्देह यह अध्ययन छात्रो में राजनैतिक गतिशीलता को स्पष्ट करने मे सहायक सिद्ध हो सकता है।

शोधप्रश्न (Research Question)

प्रस्तुत अध्ययन के उद्‌दश्यो को प्रस्तुत करते हुए निम्न शोध प्रश्न के प्रति उत्तर प्राप्त किये जायेगे ।

1. महाविद्यालय मे राजनैतिक चेतना का क्या स्तर है ?
2. क्या महाविद्यालय मे छात्रो की अपेक्षा छात्राओ में राजनैतिक चेतना अधिक होती है ?

3. क्या राजनैतिक चेतना जाति पर भी निर्भर करती है?- क्या राजनैतिक चेतना मे उच्चजाति, पिछडा वर्ग, अनुसूचित जाति वर्ग मे अन्तर होता है?
4. क्या धर्म भी राजनैतिक चेतना को प्रभावित करता है ?
5. क्या सामाजिक वर्ग राजनैतिक चेतना को प्रभावित करता है?
6. क्या जो विद्यार्थी आम सामायोजन संगठनो और समितियों मे सदस्या रहते है उनमे राजनैतिक चेतना अधिक होती है ?

क्या जो विद्यार्थी राजनीतिक दलो के सक्रिय सदस्य है क्या उनमें राजनैतिक चेतना अधिक होने की सम्भावना है?

सम्बन्धित साहित्य का सिंहवलोकन : (Survey of Related Literature)

राजनैतिक सहभागिता मे बहुत सी ऐच्छिक कियाये सम्मिलित है। जो राजनैतिक कियाय को प्रभावित करती है जैसे शासक का चुनाव तथा सार्वजनिक नीति का राजनीति विज्ञान विभिन्न रूप से उपरोक्त गतिविधियों को जे0 एल0 **बुडवार्ड तथा इ0 मेयर ने अपनी पुस्तक "Polictical Activities of American Society** में निम्न प्रकार से समझाया हैं ।

1.वोट डालने की प्रक्रिया।
2. सम्भावित दबाव का समूह को किसी एक के नाते उनका समर्थन करना ।
3. सांसदो से प्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क करना और संचार करना ।
4. राजनैतिक दंगो की गतिविधियों में सहभागिता करना ।
5. दूसरे नागरिको से राजनीतिक मतो के ऊपर अन्त:क्रिया करना ।

भारतीय राजनीति का समाज शास्त्रीय परिस्थिति के आधार पर अध्ययन करने में प्रमुख निम्न है।

'The Nadars of Tamilnadu' Robert L. Hardgyarve. 'Essays in the political sociology of south India' (1979) Robert L Hardgyarve, 'Caste and politics in India' (1970) Rajani Kothari, 'The modenity of tradition & political development in India' (1967) Rudolf and Rudolf, 'Caste association and political process in Gujrat' (1975) 'Ghanshyam shah, 'Moderniztion of India Tradition' (1973) yogendra Singh, 'Politics of developing nation (1960) Amod coalman, 'Modernization north politics in India' (1984) B.R. mehata.

हैरल्ड लासवैल (1951)ने राजनीति की परिभाषा इस प्रकार की है ''राजनीति का अध्ययन प्रभाव एवं प्रभावशाली है का अध्ययन है।

"The study of politics is the study of influence and the influential ".

''किसी भी समाज के अन्दर अर्न्तक्रियाओं की ऐसी पद्धति से होता है जिसके माध्यम से ....बाह्यकारी अथवा अधिकारिक विनिधान किये जाते है। तथा उनको कार्य रूपमे परिणित किया जाता है ।''

डेविड ईस्टन (1960) अपनी पुस्तक **पोलिटिकल सिस्टम** मे लिखा है।

'authoritative allocation of values ; लासवेल एवं कैपलेन (1950 में) अपनी पुस्तक 'power and Society' में राजनैतिक व्यवस्था को 'of severe deprivation' बताया है तथा डल Dahl (1963) अपनी पुस्तक शModern political analysis' मे राजनैतिक व्यवस्था को 'Of power rule and authourity' बताया है यह सभी परिभाषायें वैधनिक रूप स्वीकृत दण्ड के पक्षधर है । Max weber (1946) ने 'politics as a vocation में अपनी पुस्तक from max weber,: Essays in sociology,ed. 'Gerth and wright mills में ठीक ही कहा है कि राजनैतिक व्यवस्था मे शक्ति न्यायोचित तागा है जो राजनैतिक व्यवस्था की क्रिया में विकसित होता है।

विचारको के विचारो का विश्लेषण करने पर राजनैतिक राजनीति के दो प्रमुख लक्षण सामने आते है पहला कि यह शक्ति के परिवेश मे क्रियान्वित होती है। क्योकि अधिकारिक के साथ शक्ति का तत्व अनिवार्य रूप से संलग्न रहता है और दूसरा यह कि राजनीति के लिये संघर्ष का तत्व अनिवार्य नही है। राजनीति के शक्ति का सत्ता के अनिवार्य रूप से सम्बन्धित होने का स्वाभाविक परिणाम यह निकलता है। कि राजनीति कुछ संरचनाओ एवं कुछ संगठनो की स्थिति की अपेक्षा रखती है और तब राजनीति कुछ संस्थात्मक ढांचो के अन्तर्गत सीमाबद्ध होकर संचालित होती है।और इसकी प्रकृति निजी न रहकर सार्वजनिक हो जाती है।

राजनीति :

वीसन्ज एण्ड वीसन्ज (1969) मे कहा है कि ''राजनीति वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई संगठित समुदाय अपने नेताओं को खोजकार प्राप्त करता है तथा अपने नीतियां के बारे मे निर्णय करता है।''

इसे बडी कुशलता के साथ सक्षिप्त रूप मे इन शब्दो मे रखा गया है कि ''सघर्षो का निर्णयों में रूपान्तरण'' इस व्यापक परिभाषा के आधार पर राजनीति मनुष्यों के किसी भी ऐसे समूहों में वर्तमान रहती है। जिसमें कि सदस्यो के लक्ष्यों एवं हितो में परस्पर टकराव है: किसी कार्यकलाप मे महाविद्यालय के विभाग मे चर्च के कमिकस्तरो में यहाँ तक कि चर्च के अन्दर एकत्रित होने वाले समाज मे भी।''

राजनीति को शक्ति के लिए संघर्ष कहकर समझा जा सकता है अधिकाधिक अथवा सरकारी नीतियों का निर्माण जिनके अन्तर्गत सघर्ष व विरोध का तत्व मौजूद हो वह भी कुछ लोगो के द्वारा राजनीति कहा जाता है। बहुत से लोगो की ओर से इस बात का प्रतिवाद किया गया है कि राजनीति की परिभाषा

शक्ति के लिये सघर्ष के रूप में दी जाती है कम से कम वह केवल मात्र शक्ति के लिए सघर्ष नही हो सकती। दूसरी ओर श्लाइसर (1963)ने कहा है कि ''यह धारणा व तर्क कि राजनीति का लक्ष्य शक्ति प्राप्त करना है। इतनी सहजल से नकारा नही जा सकता ।बहुत बार यह स्थापित करने के प्रयत्न किये जाते है कि चाहे राजनीति का अन्तिम लक्ष्य कुछ भी क्यो ने हो इसका निकटवर्ती लक्ष्य शक्ति ही है।

श्लाइसर ने अपनी पुस्तक इन्टरनेशनल रिलेशन (1963 :252) में कहा है कि But the Continution that power is purpose of politics may not be dismissed so easily it is sometimes contended that what ever may be that ultimate end of politics, power, is the immedate end. "

डब्यू ए0 ग्रीन 1964 के अनुसार ''राष्ट्र का उद्भव तब होता है जबकि एक केन्द्रीय राजनैतिक शक्ति किसी राष्ट्र के समस्त नागरिको के निश्चित सामान्य हितों को एकीकृत करती है तथा उनका प्रबन्ध करती है।जबकि वह शक्ति शासक वर्ग के अधिकांश अर्थात अपेक्षाकृत बडे भाग के दृष्टि कोण से वैद्य होती है अर्थात उसकी शक्ति वैधानिक व औचित्य होती है और व्यवहारिक वह सब एक ऐसे विश्व के अन्तर्गत जहाँ स्थायी रूप से युद्ध अथवा युद्ध की धमकी की स्थिति वर्तमान है। अपने शब्द की सम्प्रभुता को अपना सर्वोच्च सामूहिक लक्ष्य मानते है।

''डब्लू0 ए0 ग्रीन (1964) ने कहा है कि

The state arises when contralized political power . Manager and integrates the difined public interest of all the citizen of a nation . When this power is legitimized in the eyes the majority of the ruled and when they

come to regard their nationals sovereignty . As the supreme collective and in the midst of a permanent conditions of war and threat of war"

हम शक्ति की परिभाषा निम्न प्रकार कह सकते है **राबर्ट हैडल (1962)** के अनुसार 'ए' बी0 के अन्दर उस सीमा तक शक्ति रखता है कि जिस सीमा तक यह 'बी' से ऐसा कोई कार्य कराने की क्षमता रखता हो जो कि वह जैसे (अर्थात 'ए' के प्रयत्न के बिना) नही करेगा ।''

राबर्ट हैडल (1962) ने कहा है कि

"A has power over B to the extent that he can get b to do samething that B would not otherwise do."

राजनीति व्यक्ति चेतना की तर्क संगति अभिव्यक्ति है इस कारण समाज वैज्ञानिक को के लिये यह एक मार्मिक चर्चा का विषय रहा है। यद्यपि समाज शास्त्र के विकास के युग से ही समाजशास्त्री राजनीतिशास्त्र राजनीति व्यवहार एवं राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन मे रूचि लेते रहे है फिर भी इसे मुख्य रूप से समाज शास्त्र का अध्ययन क्षेत्र माना जाता रहा है।

यूरोप मे मैक्सवेबवर, मिचेल, पेरेटो, सिमफ्राइड आदि विद्वानो ने समाज शास्त्र तथा राजनीति शास्त्र को एक दूसरे के इतना समीप ला दिया कि प्रारम्भिक समाज वैज्ञानिको ने अपने अध्ययन विशिष्ट समाजशास्त्र अथवा राजनीति दृष्टि कोण तक ही सीमित न रखकर एक समग्र रूप में किये है। जैसे छांपविले कार्लमार्क्स, पेरेटो, मोस्का, स्पेंन्सर तथा मैक्स वेवर आदि देनो ही विषयो के विचारक माने गये है।

19वी. शदाब्दी मे राज्य एवं सामाजिक विद्वानो मे विभिन्नीकरण एवं दृष्टिकरण की तथा राजनीति मे व्यवहारात्मक अन्दोलन (जिसमें की संस्थागत अध्ययनो की अपेक्षा व्यक्तियों के वास्तविक व्यवहार के अनुभाविक एवं वैधानिक अध्ययनो पर बल दिया जाता है) तथा अन्त: समाज शास्त्र को अभी पथक विषय

के रूप मे स्वीकार नही किया गया है। आज भी इसे समाजशास्त्र एवं राजनीति शास्त्र विभागो के अन्तर्गत ही पढाया जाता है वी0 एस बविष्कार ने भारत मे इस विषय पर कार्यो की समीक्षा करते हऐ इस बात पर बल दिया यद्यपि इसकी शुरूआत **के0 राधवन की पुस्तक 'होमरूल एण्ड कास्ट (1971)** से ही हो गयी थी। परन्तु फिर भी व्यवसायिक समाज वैज्ञानिको मे इस विषय मे 1950 के पश्चात ही रूचि लेना शुरू किया है। इसमें हुए प्रमुख कार्यो से 'आन्द्रे बेटई' की राजनीतिक व्यवस्थाओं की प्रकृति एवं व्यवस्थाओं तथा इनके अध्ययन की समस्याओं और जाति वर्ग एवं शक्ति की विवेचना एम0अन0 श्री निवास, रजनी कोठारी, एफ0 जी0 वेलो आन्द्रे बेटई, एस0 सी0 दुबे, टी. के. ओमन, योगेश अटल द्वारा राजनीतिक की विवेचना की। योगेश अटल के स्थानीय समुदायो के सन्दर्भ में राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन ए0 आर0 देसाई के भारतीय राष्ट्रवादी आन्दोलन का अध्ययन, रजनी कोठारी के राष्ट्र निमार्ण ये भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की भूमिका, धनागरे एन0 जी0 एस0 कीनी इत्यादि विद्वानो द्वारा चुनाव एवं मतदान व्यवहार का अध्ययन योग्रेन्द्र सिंह द्वारा राजनीतिक आधुनिकी करण की विवेचना तथा दयाकृष्ण के राजनीतिक विकास का अध्ययन आदि को सम्मिलित किया जा सकता है।

भारतीय राजनीतिक समाज शास्त्र के क्षेत्र मे किये गये अधिकांश अध्ययन प्रजातान्त्रिक प्रक्रियाओ तथा प्रजातन्त्रिक संस्थाओ के विकास मे जनसहभागिता से सम्बन्धित है। इसके विचारानुसार अधिकांश अध्ययनो मे राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित व्यवहार को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारको का ही पता लगाने का प्रयास किया गया है तथा इस प्रकार यह अध्ययन राजनीतिक समाज शास्त्र के केवल एक पक्ष पर केन्द्रित है अतः राजनीतिक विकास का समाज शास्त्र के अर्न्तगत रखा जाना चाहिए ।

केंग (1990) नें अपने शोध लेख"**The Ideology of intellectuals and chinese student protest movement** " ने लिखा है कि चीनी विद्यार्थियो द्वारा 1989 के प्रजातन्त्र के पक्ष में अन्दोलन चीन के अभिजातवर्गीय वुद्धिजीवी द्वारा प्रेरित हुआ था केंग (1990) में लिखते है कि Chinese sutdents participating in the 1989 prodemocracy protests were significantly influenced by recent forment among elite chinese intellectuals. The democracy movement was shaped by an overall ideology of intellectuals, but also by specific & contrasting currents of thought. Here differences among natural scientists social scientists & literary intellectuals are examined with regard to their views on democrocy & social change. The Influence of each on students is considered & it is suggested that senior intellectuals were not the immediate guides of the movement."

Magister Sandro croce sulla scheda teorie ratiche del voto cattolico ने **Religioni societa (1990)** में इटली के मतदाताओ के व्यवहार मे की गई शोध का सिंहावलोकन किया ।बताया कि किश्चयन प्रजातन्त्रिक सदल मतदान का प्रारूप इटली के उत्तरी एवं दक्षिणी क्षेत्रीय अन्तरो की अभिव्यक्ति है तथा राजनैतिक अन्तर धार्मिक समबद्धता पर अपना प्रभाव रखते है।

आप लिखते हैं कि -

"A review of research on Italian electoral behavior problematizes the notion of a unified and consistent cothalic vote. Voting patterns in the christian Democrat Party reveal regional differences between northern & Southern Italy & indicate the political differences usually take preference over religious affiliations. Historical shifts in regional allegiance to the christian Democrats are also traced."

Lamentowicz wojtek ने अपनी कृति **"Political culture and institution buildings (1990)** में पूर्वी यूरोपियन पूर्वीयूरोप मे 1953 पौलैण्ड मे तत्काल प्रजातन्त्रिक कार्यक्रम के अन्तर्गत सरचनात्मक परिवर्तनो के पैमाने की व्याख्या की है। 1989 के संसदीय चुनाव पौलैण्ड मे कुछ समस्यायें सस्थाओं के समाजिक और राजनैतिक संगठनो की प्रजातात्रिक बदलाव मे उत्पन्न हुयी थी। आप लिखते है कि " An analysis of models of structural changes in Eastern Europe since 1955 in relation to current democrotization programs in poland .An attempt is made to redifine the meanings of the programnatic goals of postcommunism : humanization rationlization economic liberalization, poletical democratization following the 1989 parliamentary election in poland some dilemmas of the transition to democratic social political order become apparent, its attainnent may be threatened if loyalty to particular palitical leaders becomes more important than trust in institutional networks legal procedures, impersonal market competion."

सरफराज अहमद ने अपने अध्ययन "Impact of area of Residence and SES on the Acquisition of prejudice Among college students " (1991) में 500 ग्रामीण नागरिक विद्यार्थियों का अध्ययन करके उन पर जाति पूर्वागृह पैमाना का अध्ययन करके बताया कि नगरीय विद्यार्थियो की अपेक्षा ग्रामीण विद्यार्थियो मे जाति के प्रति पूर्वागृह अधिक है।

मै इनके वाक्यो को उद्घृत करता हूँ। कि "A caste prejudice scale and the rural and urban forms of the SES Scale were administered on a sample of 500 College students (Rural 210 urbon 290). The rural college students scored high on all the dimensions of caste prejudice and the difference between the rural and urban students was observed to be highly significant . However

no significant impact of SES on the caste prejudice of college students was observed.

Leslie Sklair (2002) ने अपने शोध पत्रक the transnational capitalist class and global politics Deconstructing the carporate state connection में वैश्वीकरण की राजनीति के सम्बन्ध मे दो प्रश्न उठाये है पहला ये गतिविधियाँ कौन सा स्वरूप ग्रहण करती है। दूसरा ये प्रजातन्त्र को बढावा देती या उसे कमजोर करती है। ये इस नतीजे मे पहुचे है कि वैश्वीकरण स्वतन्त्र व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा अन्तोगत्वा गरीब लोगो को खुशहाली प्रदान करेगें। मै इनके वाक्यो को उद्घृत करता हूँ कि "I shall focus on global politics, and attempt to address two sets of questions : (i) what forms do these activities take ? and (2) do they enhance or underline democracy ? ....this all in the name of globalization, free trade and enternational competitiveness and the hope that, some how, it will make poor people better off."

Barry schofield (2002) ने अपने प्रपत्र "Partners in power : Governing the sell sustaining community मे निष्कर्ष निकालते है कि वैश्वीकरण एक दशक के पहले के वौद्धिक भ्रम अब अलग आगे जा रहा है अवधारणात्मक (इनफ्लेशन) अभी भी समस्या बनी हुयी है अब वैश्वीकरण के विभिन्न प्रकार के अध्ययनो से स्पष्टता उभर रही है।

मै इनके वाक्यो के उद्घृत करता हूँ कि In conclusion then we could argue that globalization is beginning to move beyond the entellectual confusions of a decade ago. While conceptual inlation is still a problem it can be made to mean too much -----some clarity is emerging, especially through studies of its relevance in particular fields (See, e.g,. the pleth ora of titles on the

specific subfield of globalization : Tomlinson 1999., Buelens 1999., Rajput and swarup 1998 ; Singh and Thand 1996 : Rothstein 2001 Roller 1997., :Wahab and copper., 2001 Edwards and Usher 2000,. Organization for Economic cooperation and development 1997., Ballard and couture 1998 ; Singh 1999; Twining 2000., findlay 1999.)"

विक्टर डिसूजा ने अपने प्रपत्र **Social structure and political Institution:The Panchayati Raj** मे बताया कि राजनैतिक संस्थाओं के ऊपर प्रभाव का अध्ययन है भारत मे इसका अत्यन्त महत्व है विशेष रूप से पंचायती राज 1959 की स्थापना पश्चात इनका निष्कर्ष है कि पंचायती राज सस्थाओं के क्रियान्वन मे समाजिक संरचना का बहुत महत्व है यह संस्थाओ को दो तरीके से प्रभावित करती है पहला विभिन्न जाति समूह के प्रतिनिधित्व को कार्यकारणी मे लाना, दूसरा ऐसा संगठनो के प्रभावो को कम करना जो सामाजिक संरचना के समरूप नही है वे कहते कि –

"We may therefore, conclude that social structure is an inportant factor in the functioning of panchayati- Raj institutions. It influences these institutions in two main ways : first by bringing about a differential representataion of the variouse caste groups in the executive bodies and secondly by reducing the effectivess of the members of these bodies whose represensation is not in conformity with the social sturucture .

Shannon C. Stimson (1993) ने अपने लेख **"Utility, property and polotical participation games mill on democratic reform ."** मे बताया कि वर्तमान व्यवस्था मे खुले या स्वतन्त्र मतदान ने कम से कम दो प्रकार से भ्रष्टाचार को बढावा दिया है प्रथम इसके द्वारा स्पष्ट रूप से धार्मिक वर्ग की उस क्षमता

को बढावा मिला है जिसके द्वारा वे अपने दुष्कृत से पुरित हितो को जो व्यक्ति उनके नीचे है, उनपर वोट देने का दवाव डाल कर उन्हे चुनाव सम्बन्धी वैधिता प्रदान करते है ।

अगर एक गरीब व्यक्ति एक धनी व्यक्ति से यह नही छिपा सकता है कि उसे कैसे बोट डालना है। अमीर व्यक्ति एक हद तक ये जानता है कब उसका मूल्य इसकी वस्तु नियन्त्रित करता है और वह उससे निश्चित हो सकता है। मै इनके वाक्यों को उद्‌घृत करता हूॅ कि "In the partiamentary Review for the session of 1826 –27 and 1827 –28, mill contributed an article arguing that the prevaiting system of open voting promoted the corruption of politics in at least two ways. first, it obviously enhanced the ability of the wealthy to give a veneer of electoral legitimacy to their own sinister interests by exerting pressure on those beneath them to cast votes in their support . If the poor man can not conceal from the rich man how he votes . the rich man knowns to a certainty when his price commands his commodily and he can make sure of it."

Mahendra prasad Singh ( ) ने अपने लेख **political parties and political Economy of federalism: A paradigm shift in Indian politics** मे बताया कि ये दो निस्संदेह राजनीतिक विकास के वृहत दृष्टिकोण के पहलू है जिसमे से एक विशेष रूप से इन विकासो की व्याख्या की एक आशाजनक दिशा वह है, जिससे भारतीय राजनीति मे एक दृष्टान्त स्वरूप बदलाव का भाव भी सम्मिलित है जो कि एक मूलत: लोकतान्त्रिक व्यवस्था से एक अधिक संघीकृत राजनैतिक गति की व राजनीतिक की भूमिका व इस संक्रमण मे वर्ग निर्माण से संबन्धिता है।

यह विचार भारतीय राजनीतिक की वर्तमान विद्धतात्मक साहित्य मे पर्याप्त रूप से नही खोजा गया है।

"The two are, of course facets of the larger process of political development. One particularly promising direction of explation of these development is in terms of a paradigm shift in Indian politics from anessentially parliamentary to a more feferalised mode of political dynamics and the roles of political parties and class formation in this transtion . This perspective has not been sufficiently explored in the recent scholarly literature on Indian politics."

Baohuizhang (2000) ने अपने लेख (Asian profile) The political Economy of china's 1994 fiscal reform में बताया कि इस अध्ययन मे चीन के वर्तमान केन्द्रीय स्थानीय सम्बन्धो को समझने के सूचक विन्दु भी है जो तत्सम्बन्धी अन्य अध्ययनो के विपरीत है जो चीन की केन्द्रीय शक्ति की पवन की भविष्यवाणी करते है इस शोध मे यहाॅ तक विद्यमान है कि चीन की केन्द्रीय शक्ति के पास अभी भी चीन मे होने वाला घटना को प्रभावित करने की महत्वपूर्ण क्षमता प्राप्त है।

1980से केन्द्रीय सत्ता मे सापेक्ष अवसान वास्तव मे केन्द्र की उन अभिप्रायिक नीतियो के परिणाम का एक भाग है जिसमे वह स्थानीय आर्थिक उन्नति को सुविधा प्रदान करता है व कुछ भाग मे नीतियो के अभिप्रायिक प्रभाव का परिणाम है।

"This study also has implications for understanding the current central local relations in china unliks some studies that predict the collapse of chinese central authority . This research argues that central authority, still

retains significant power to influence what is huppening in china . The relative decline of central power since the 1980 was in part the result of intentional plolicies of the center to ficilitate local economic growth and in part the result of unintended effects of its policies."

Chandra mohan Reddy and S.V. udhaya kumar ने अपने लेख **"class imagery and political ideology : some further observations in India"** मे बताया कि केरल के वादियो के वर्तमान अध्ययन से यह पता लगा हैकि जो उनकी दलगत निष्ठाओ या सम्बद्धताओ से परे है कि यह उनके तमिलनाडु के सहकर्मियो के विपरीत उन्हे एक सर्वाहारात्मकदृष्टिकोण की ओर प्रेरित करता है। मै इनके वाक्यो को उदघृत करता हूँ

" It has been found in the present study that the kerala respondents regardless of their party affiliation tend to have a proletarian out took unlike their counter parts in Tamil Nadu . It is this renders that the kerala workers are notable more proletarian."

राजनैतिक विकास की प्रक्रिया :

इस सम्बन्ध मे **'पाई'** **(1965) ने अपनी पुस्तक पोलिटिकल डेवलपमेन्ट में** " कहा है कि "ऐतिहासिक आधार पर पश्चिम मे राजनैतिक विकास का यह आयाम घनिष्ठ रूप से मताधिकार विस्तार के साथ -साथ संख्या के नये भागों के राजनैतिक प्रक्रिया में प्रदेश के साथ सम्बन्धित था। जनसामान्य की भागीदारी की इस प्रक्रिया का परिणाम था निर्णय करने की प्रक्रिया का विखराव व फैलाव और इस प्रकार भागीदारी के द्वारा चमन एवं निर्णय पर कुद प्रभाव पडा। कुछ नये राज्यो मे जन सामान्य की भागीदारी के साथ निर्वाचन की प्रक्रिया का संयोग नही किया गया वरन् वह केवल मात्र इसी रूप में पाया जाता है कि अभिजनो के द्वारा उनको लक्ष्यो की प्राप्ति के लिये इच्छानुसार ढंग से प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिये प्रयोग कर लिया जाये। यहा पर यह बात भी भलीभॉति जान लेनी चाहिऐ कि भागीदारी की यह सीमित मात्रा भी राष्ट्र निर्माण मे अपनी भूमिका का निर्वाह करती है। क्योकि यह राष्ट्रीय अस्तित्व की एक नई भावना व उसके प्रति वफादारी को पैदा करने वाले एक साधन का प्रतिनिधित्व करती है ।"

"Histerically in the west this dimension of political Development was closely associated with the widening of suffrage and the eduction of New elements of the populetion in to the political process . This process of mass participation meant a diffusion of decision making and participation brought some in influence on choice and decision in some of the new states. however mass participation has not been coupled with on electrolal process but has been essentially a new form of mass response to elite manipulation, it should be recognized that even such limited

participation has a role to play in nation building science it represents a means of creating loyalties and a new feeling of national identity ."

राजनैतिक वफादारी का अर्थ केवल मात्र कुछ राजनैतिक अधिकारो जैसे कि मताधिकार का प्रयोग किया जाना ही नही है वनन् इसका तात्पर्य जनसामान्य का विभिन्न ऐसी क्रियाओ में संलग्न होना है जिनका प्रभाव राजनैतिक प्रक्रियाओ पर पडता है ।तथा जो सरकार के द्वारा निर्णय लिये जाने की प्रक्रिया से सम्बन्धित है इन प्रक्रियाओं का विश्लेषण कर इनको चार भागों मे बाटा जा सकता हैं

1. निर्वाचन मे हिस्सा लेना अर्थात मतदान करना ।
2. अपने हितो से सम्बन्धित समूह अर्थात हित समूहों को समर्थन प्रदान करना व उनकी सदस्यता ग्रहण कर उनको मजबूत करना ।
3. विधायको के साथ व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनके साथ प्रत्यक्ष रूप से विचार विनमय करना तथा अपने विचारो से उनको अवगत कराना ।
4. राजनैतिक दूसरे की गतिविधियों मे सक्रिय रूप से अपना दावा स्थापित की क्षमता को अर्जित करना ।
5. दूसरे नागरिको के साथ राजनैतिक क्षेत्र की ज्वलन्त समस्याओं व घटनाओं पर मौखिक रूप से बातचीत व विचार विनमय करना इस प्रकार के विचार विनमय के द्वारा स्पष्ट जनमत के निर्माण मे सहायता मिलती है।

सैद्धान्तिक पक्ष :

हम 21 वीं शताब्दी मे पर्दापण कर चुके और आज कम्प्यूटर, इन्टरनेट, सटेलाइट, तथा इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी से सम्पूर्ण विश्व सिकुडकर बहुत छोटा गॉव सा हो गया है। और विश्व के सबसे दूर के स्थान भी आपस मे बहुत जुड गये है। अत: दुनिया के किसी भी कोने मे कोई भी घटना हो रही हो

उसकी सूचना तत्काल ही समाज को प्राप्त हो जाती है। भारत विश्व का सबसे बडा प्रजान्त्रिक राष्ट्र है और प्रजातन्त्र की सफलता तभी सम्भव है जब वहॉ के नागरिको मे उचित प्रकार की राजनैतिक चेतना व जागरूकता होगी लोगो को उनके संविधान के बारे मे कर्तव्यों एवं अधिकारो के बारे मे सही जानकारी होनी चाहिये अतः प्रस्तुत अध्ययन छात्र और छात्राओ की राजनैतिक चेतना के स्तर का अध्ययन करा रहा है तथा हम इस शोध के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त कर रहे है कि पढे लिखे नागरिको मे किस स्तर की राजनैतिक चेतना है।

शोधकर्ता का यह मत है कि क्योकि पुरूषो की स्वाभाविक सहभागिता और सामाजिक अन्तः किया के अनेकानेक अवसर उपलब्ध है अतः छात्रों मे छात्राओं की तुलना में राजनैतिक चेतना अधिक होने की सम्भावना है। प्रस्तुत अध्ययन मे यह भी मत है कि राजनैतिक चेतना शिक्षा के सकारात्मक रूप से सह सम्बन्धित है। उच्चशिक्षा के स्तर मे राजनैतिक चेतना को जाति और वर्ग के आधार पर भी प्रभावित माना जा सकता है।

प्राकल्पनाओ का जिनका परीक्षण किया जाना है :

उपरोक्त सैद्धान्तिक मत एवं उद्देश्यो को ध्यान में रखते हुये निम्न लिखित प्राकल्पनाओ का परीक्षण किया जाना है।

1. छात्राओ की तुलना मे छात्रो की राजनैतिक चेतना अधिक होने की सम्भावना है।
2. स्नातकोत्तर विधार्थियों मे स्नातक स्तर के विधार्थियो की तुलना में अधिक होने की सम्भावना है।

3. उच्च जाति के विद्यार्थियो मे पिछडे वर्ग एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियो से अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है।
4. उच्च वर्ग के विधार्थियो में मध्यम या निम्न वर्ग के विद्यर्थियो की तुलना मे अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है।
5. जो विद्यार्थी राजनैतिक दलो के सक्रिय सदस्य है। उन विद्यार्थियो मे गैर राजनैतिक दलो वाले विधार्थियो की तुलना मे अधिक राजनैतिक चेतना हो होने की सम्भावना हैं ।

प्राकल्पना के सन्दर्भ मे **जार्ज लुण्डवर्ग ने (1951)** मे कहा है कि

''परिकल्पना एक काम चलाऊ निष्कर्ष अथवा सामान्यी करण है जिसकी सत्यता की परीक्षा करना शेष होता है।''

इस ज्ञान व अनुभव के आधार पर हम अपने अध्ययन विषय के विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध मे एक सामान्य अनुमान पहले से ही लगा सकते है यह सामान्य अनुमान शोधार्थी के लिए मार्ग निर्देशक बन जाता है प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की राजनैतिक चेतना है इस आधार पर हमने कुछ उपकल्पनाये तैयार की थी जिन्हे उपरोक्त बिन्दुओ पर स्पष्ट किया गया था।

: अध्याय द्वितीय :

अध्ययन पद्धति

शोध प्रारचना का प्रारूप

अध्ययन क्षेत्र

निर्दशनविधि

शोध प्राविधि

साक्षात्कार अनुसूची

राजनैतिककरण का पैमाना

संख्यकीय परिक्षण

शोध अनुभव

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालय के छात्र छात्राओं की राजनैतिक चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन है। इस अध्याय के अन्तर्गत शोध में प्रयोग किये गये अध्ययन पद्धति का वर्णन किया गया है। **कार्ल पियर्सन (1949)** ने ठीक कहा है कि ''सत्य तक पहुँचने के लिए कोई संक्षिप्त पथ नही है। समाज का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें वैज्ञानिक पद्धति की सहायता के बिना किसी भी विषय के सम्बन्ध मे वास्तविक ज्ञान सम्भव नही चाहे अध्ययन विषय कुछ भी हो।

वैज्ञानिक पद्धति अथवा स्पष्ट प्रणाली में सर्वप्रथम हम अध्ययन विषय को चुनते है और फिर अवलोकन द्वारा उस विषय से संम्बन्धित समस्त तथ्यों को एकत्रित करते है।'' तथा बाद में इन तथ्यों से उनकी समान विशेषताओं के आधार पर वर्गीकरण कर रहे है। और अन्त में तथ्यो के विश्लेषण व परीक्षण द्वारा उस विषय से सम्बद्ध कोई निष्कर्ष निकालते या नियमों को प्रतिपादित करते है । इस प्रकार पांच चरणो में वैज्ञानिक पद्धति को विभक्त किया जा सकता है।

1. विषय का चुनाव
2. अवलोकन द्वारा प्रत्यक्ष होने वाले तथ्यों का संकलन
3. तथ्यों का वर्गीकरण
4. तथ्यो का परीक्षण
5. नियमों का प्रतिपादन

जार्ज ए0 लुण्डवर्ग ने वैज्ञानिक पद्धति के निम्नांकित चार चरण बताये हैं।

1. कार्यवाही कार्य कर प्रकल्पना

2. तथ्यो का अवलोकन तथा लेखन
3. संकलित तथ्यो का वर्गीकरण व संगठन
4. समान्यीकरण (सामान्य नियम बना लेना)

सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रो के सिद्धान्तों मूल्यो तथा मान्यताओं मे गहन परिवर्तन आगे स्वाभाविक हैं। यह परिवर्तन केवल परिवर्तन मात्र नही है बल्कि विद्धानो ने इसे युगकारी क्रान्ति की संज्ञा दी है।

ग्रीन एं0 डब्ल्यू ने तो यहा तक कह दिया –

''परिवर्तन का उत्साह पूर्वक स्वागत जीवन का प्राय: ढंग सा बन गया है।''

" The enthusiastic & reception of change become almost away to life"

मानव समाज केवल तर्क के आधार पर ही वास्तविक जगत मे व्याप्त सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, एवं आर्थिक रहस्यो को उदघाटित करने में असमर्थ है ये वास्तविक रहस्य स्वाभाविक मानवीय क्षमताओं से कही अधिक सूक्ष्म एवं उलझे हुये है। इन रहस्यों को सुलझााने एवं परिशुद्धता की सर्वोच्च श्रेणी को प्राप्त करने हेंतु क्रमबद्ध अध्ययन एवं आवश्यक वैज्ञानिक प्राविधियों एवं उपकरणों के विकास के साथ ही साथ मानव मस्तिष्क अनवरत परिक्रम करता है।

द न्यू सेन्चुरी डिक्शनरी (1927) के अनुसार

''तथ्यो या सिद्धान्तो की खोज के लिए किसी वस्तु या किसी के लिए विशेष सावधानी पूर्वक किया गया निरन्तर सावधानी पूर्वक एक जांच या अन्वेषण कहलाता है।

P.V.young (1975) में लिखा है कि शोध वैज्ञानिक योजना है जिसका उद्देश्य–

1. तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियो के द्वारा नवीन तथ्यो का अन्वेषण अथवा पुराने तथ्यो की पुर्नपरीक्षा करना ।

2. उनमे पाये जाने वाले अनुक्रमों अन्त: सम्बन्धो कार्य कारण व्याख्याओं तथा उनको संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना ।
3. विश्वसनीय मानव व्यवहार के अध्ययन को सुगम बनाने के लिए नये वैज्ञानिक उपकरणों अवधारणाओं एवं सिद्धान्तो का विकास करना।''

शोध प्रारचना का प्रारूप :-

जैसा कि पहले ही कहा गया है कि कोई भी सामाजिक शोध बिना किसी लक्ष्य या उद्देश्य के नही होता है। इस उद्देश्य या लक्ष्य का विकास और स्पष्टीकरण शोध कार्य के दौरान नही होता बल्कि वास्तविक अध्ययन प्रारम्भ होने से पूर्व हो इसका निर्धारण कर लिया जाता है। शोध के उद्देश्य के आधार पर अध्ययन विषय के विभिन्न पक्षो के उदघटित करने के लिये पहले से बनाई गई योजना की रूपरेखा का शोध प्रारचना कहते है।

एकॉफ अपनी पुस्तक **डिजाइन आफ सोशल रिसर्च** में कहा कि -

''निर्णय क्रियान्वित करने की स्थिति आने से पूर्व ही निर्णय निर्धारित करने की प्रक्रिया को प्रारचना कहते है।''

"Design is the process of making decisions before the situation arises in which the decision is to be carried out"

इस दृष्टि कोण से उद्देश्य प्राप्ति के पूर्व ही उद्देश्य का निर्धारण करके शोध कार्य की जो रूपरेखा बना ली जाती है उसे शोध प्रारचना (research design) कहते है अत: यह स्पष्ट है कि सामाजिक शोध प्रारचना के तीन प्रकार है और शोधकर्ता अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये सर्वाधिक उपर्युक्त समझ कर इनमें से किसी एक प्रकार को चुन लेता है। और वह कौन सा प्रकार है यह मालूम होते ही शोध कार्य की प्रकृति व लक्ष्य स्पष्ट होते जाते है। उदाहरणार्थ

यदि हमें यह ज्ञात हो जाये कि शोध प्रारचना अन्वेशणात्मक हो तो स्वत: ही यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी समाजिक घटना के अर्न्तनिहित कारणों की खोज करना ही उस शोध का उद्‌देश्य है।

इस प्रकार शोध कार्य मे तथ्यो का विवरण मात्र होगा अथवा नवीन नियमों को प्रतिपादित किया जायेगा अथवा उस शोधकार्य मे परीक्षण व प्रयोग का अधिक महत्व होगा इन सब बातों का ध्यान मे रखकर शोध कार्य आरम्भ करने से पूर्व जो एक रूपरेखा बनाई गई है उसी की शोध प्रारचना (Research Design) कहते हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि शोध कार्य के उद्‌देश्य को ध्यान मे रखते हुये उसे एक निश्चित प्रकार (Type)के अर्न्तगत लाने के लिए तथा शोधकार्य मे उपस्थित होने वाली स्थितियों का सफलता पूर्वक सामना करने के लिए शोध की जो रूपरेखा बताई जाती है उसी को शोध प्रारचना कहते है।

डोनाल्ड सिलसिंगर एण्ड मेरी स्टवेन्सन (1930) के मतानुसार –

अनुसंधान वस्तुओं धारणाओ एवं प्रतीकों के ज्ञान वृद्धि सत्यता अथवा प्रमाणिकता के सामान्यीकरण के उद्‌देश्य से किया गया। दक्षता पूर्वक कार्य है चाहे ज्ञान किसी सिद्धान्त के लिए हो अथवा कला के लिए ।''

प्रो0 जॉन वैस्ट (1977) के मतानुसार –

''अनुसंधान संगठित ज्ञान की खोज एवं विकास के लिए किया गया व्यवस्थित कार्य है।''स्पष्टत: अनुसंधान का प्रमुख उद्‌देश्य नवीन तथ्यो तथा सिद्धान्तो की खोज करना है लेकिन साथ ही साथ यह बात ध्यान देने योग्य है। कि अनुमानित विचारो का असम्बद्ध तरीको से कोई स्थान नही होता है। समस्या से सम्बन्धित सर्वेक्षण एवं विश्लेषित अध्ययन के कुछ निष्कर्ष निकालने से पूर्व उसका

अभिकल्प तैयार करना उतना ही आवश्यक प्रतीत होता है। जितना की भवन निर्माण के पूर्व उसका मानचित्र तैयार किया जाना अनुसंधान को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है। सभी शोधो का एक ही आधारभूत उद्देश्य ज्ञान की वृद्धि है पर इस उद्देश्य की पूर्ति विभिन्न प्रकार से हो सकती है और उसी के अनुसार शोध प्रारचना का रूप भी अलग अलग हो सकता है। **प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषणात्मक एवं परीक्षणात्मक शोध प्रारचना का प्रयोग किया गया है।**

1. अन्वेषणात्मक अथवा निरूपणात्मक शोध प्रारचना - (Exploratory or formulative Design)

जब किसी शोध कार्य का उद्देश्य किन्ही सामाजिक घटना में अन्तर्निहित कारणो को ढूंढ निकालना होता है तो उससे सम्बद्ध रूपरेखा को अन्वेष्णात्मक शोध कहते है।

इस प्रकार शोध प्रारचना मे शोध कार्य की रूपरेखा इस ढंग से प्रस्तुत की जाती है कि घटना की प्रकृति व धारा प्रवाहों की वास्तविकताओं की खोज की जा सकें। समस्या या विषय के चुनाव के पश्चात परिकल्पना का सफलातापूर्वक निर्माण करने के लिए इस प्रकार की प्रारचना का बहुत महत्व है। क्योकि इसकी सहायता से हमारे लिए विषय का कार्य कारण सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है। जैसे इस शोध मे ही सबसे पहले कारको का ज्ञान आवश्यक है जो कि इस प्रकार के कारणो को उत्पन्न करते है। अन्वेषणात्मक शोध इन्ही कारको को खोज निकालने की एक योजना बन सकती है। इस प्रकार कभी-कभी समस्या के चुनाव और शोधकार्य के लिए उसकी उपयुक्तता के सम्बन्ध में हमे अन्य किसी स्रोत से कुछ ज्ञान प्राप्त नही हो पाता है। इस अवस्था मे अन्वेषणात्मक शोध प्रारचना की सहायता से हमें पर्याप्त सहायता मिल सकती है। उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट

है कि अन्वेष्णात्मक शोध प्रारचना उन आधारो को प्रस्तुत करती है जो एक सफल शोध कार्य के लिए महत्वपूर्ण होते है। अनुसन्धान उस अनुभव को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है जो कि अधिक निश्चित अनुसन्धाान के हेतु सम्बद्ध प्रारकल्पना के निरूपण में सहायक होगा । ''

2. परीक्षणात्मक शोध प्रारचना – (Experimental Research Design)

भौतिक विज्ञानो की भांति समाजशास्त्र भी अपने शोध कार्यो में परीक्षा प्रणाली का प्रयोग का अधिकाधिक यर्थाथता लाने का प्रयत्न कर रहा है भौतिक विज्ञानों में जिस प्रकार कुछ निश्चित नियन्त्रित अवस्थाओं में रखकर विषय का अध्ययन किया जा सकता है उसी प्रकार नियन्त्रित दशाओं मे रखकर निरीक्षण–परीक्षण के द्वारा समाजिक घटनाओं का व्यवस्थित अध्ययन करने की रूपरेखा को परीक्षणात्मक शोध प्रारचना कहते है।

श्री चैपिन ने लिखा है –

''समाजशास्त्रीय शोध मे परीक्षणात्मक प्रारचना की अवधारणा नियन्त्रण की दशाओं के अन्तर्गत निरीक्षण द्वारा मानवीय सम्बन्धो के व्यवस्थित अध्ययन की ओर सकेंत करती हैं'' और अधिक संक्षेप मे कह सकते है कि प्रयोगशाला पद्धति के द्वारा विषय का अध्ययन परीक्षणात्मक शोध का ही दूसरा नाम है।

3. वर्णनात्मक शोध प्रारचना – (Descriptive Research Design)

विषय या समस्या के सम्बन्ध में वास्तविक तथ्यो के आधार पर वर्णनात्मक विवरण प्रस्तुति करना वर्णनात्मक शोध प्रारचना का मुख्य उद्देश्य है। इसके लिए यह आवश्यक होता है कि विशेष के सम्बन्ध मे हमें यर्थाथ तथा पूर्ण सूचनाओं प्राप्त हो जाये क्योकि इसके बिना अध्ययन विषय या समस्या के सम्बन्ध में हम

जो कुछ भी वर्णनात्मक विवरण प्रस्तुत करेंगे। वह वैज्ञानिक न होकर के केवल दार्शनिक ही होगा।वैज्ञानिक वर्णन का आधार वास्तविक व विश्वसनीय तथ्य ही है।

अतः यदि हमें किसी समुदाय की जातीय संरचना, शिक्षा का स्तर, आवास व्यवस्था आयु समूह परिवार के प्रकार आदि का वर्णनात्मक व्रिवरण प्रस्तुत करना है। तो हमारे लिए यह आवश्यक है कि अपने उद्देश्य को सामने रखते हुये प्रारचना (Research Design) को विकासित किया जाये। जिस शोध प्रारचना का उद्देश्य वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना होता है उसे वर्णनात्मक शोध प्रारचना कहते है ।

अध्ययन क्षेत्र –

प्रस्तुत अध्ययन अन्वेषणात्मक एवं परीक्षणात्मक शोध प्रारचना के अर्न्तगत किया गया हैं यह अध्ययन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के सम्बद्ध महाविद्यलय के छात्र छात्राओं जो स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर अध्ययन कर रहे है। तक सीमित है कुछ महाविद्यालय के छात्र छात्राओं के अलग-अलग है और कुछ महाविद्यालय सह शिक्षा केन्द्र है। इनमें कला संकाय विज्ञान संकाय के छात्र-छात्रायें है। इसके अतिरिक्त कुछ व्यावसायिक संस्थाओं के भी छात्र-छात्रायें है। जैसे कि मेडिकल कालेज इन्जीनियरिंग कालेज एग्रीकल्चल कालेज आदि ये प्रयत्न किया गया है। कि इस अध्ययन मे सभी विभिन्न प्रकार के श्रेणियों के विद्यार्थियो का अध्ययन किया जा सके इन सब में पढ रहे विद्यार्थियो की सख्ंया 60-70 हजार है।

प्रस्तुत अध्ययन में विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्र -छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन है। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्धं 32 महाविद्यालय तथा प्रोफेशनल इन्स्टीट्यूट निम्न है-

1.	पं0 जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय	बॉदा
2.	राजकीय महिला महाविद्यालय	बॉदा
3.	जिला परिषद कृषि महाविद्यालय	बॉदा
4.	अतर्रा महाविद्यालय	अर्तरा
5.	गोस्वामी तुलसीदास राजकीय महाविद्यालय	कर्वी
6.	महामती प्राणनाथ महाविद्यालय	मऊ
7.	वीर भूमि राजकीय महाविद्यालय	महोबा
8.	डा0 हेडगेबार राजकीय महाविद्यालय	चरखारी
9.	बी0 एन0 बी0 महाविद्यालय	राठ
10.	राजकीय महिला महाविद्यालय	हमीरपुर
11.	राजकीय महाविद्यालय	हमीरपुर
12.	राजकीय महाविद्यालय	मौदहा
13.	डी0 बी0 महाविद्यालय	उरई
14.	गांधी महाविद्यालय	उरई
15.	सनातन धर्म महाविद्यालय	उरई
16.	जब्बार हुसैन बालिका महाविद्यालय	उरई
17.	फुन्दी सिंह लोदा राजकीय महाविद्यालय	उरई
18.	कालपी महाविद्यालय	उरई
19.	एम0 पी0 महाविद्यालय	उरई
20.	पं0 जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय	ललितपुर
21.	राजकीय महाविद्यालय	ललितपुर

22.	राजकीय महाविद्यालय	महरौनी
23.	राजकीय महाविद्यालय	तलभेट
24.	बुन्देलखण्ड महाविद्यालय	झांसी
25.	वि0वि0 महाविद्यालय	झांसी
26.	आर्य कन्या बालिका महाविद्यालय	झांसी
27.	गुरू हरि किशन महाविद्यालय	झांसी
28.	पं0 रमेश प्रसाद रिछारिया महाविद्यालय	झांसी
29.	राजकीय महिला विद्यालय	झांसी
30.	अग्रसेन महाविद्यालय	मऊरानीपुर

व्यावसायिक शिक्षण संस्थान –

1.	बुन्देलखण्ड मेडिकल कालेज	झांसी
2.	बुन्देलखण्ड इन्जीनियरिंग कालेज	झांसी

उपर्युक्त समस्त महाविद्यालय मे से आठ महाविद्यालय शोध कार्य हेतु चुने गये है। जो अग्रलिखित है।

1.	पं. जवाहर लाल नहेरू महाविद्यालय	बांदा
2.	राजकीय महिला महाविद्यालय	बांदा
3.	बी0 एन0 वी0 महाविद्यालय	राठ
4.	डी0 बी0 महाविद्यालय	डरई
5.	बुन्देलखण्ड महाविद्यालय	झांसी
6.	वि. वि. महाविद्यालय	झांसी
7.	बुन्देलखण्ड मेंडिकल कालेज	झांसी
8.	बुन्देलखण्ड इंजीनियरिंग कालेज	झांसी

संसाधनो एवं शोध उपाधि मे समय की सीमा को देखते हुये प्रस्तुत अध्ययन मे यह ध्यान रखा गया है कि कला विज्ञान तथा कृषि संकाय के विद्यालयों तथा व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में इन्जीनियरिंग मेडिकल विधी संकाय के विद्यार्थियों का समावेश है। यह भी ध्यान मे रखा गया है कि छात्रो का चुनाव करते समय स्नातक तथा परस्नातक स्तर के विद्यार्थियों उच्चजाति, पिछडी एवं अनुसूचित जाति के है।

इस दृष्टि कोण सें चयनित 8 महाविद्यालयो के विभिन्न संकायो सें परास्नातक एवं स्नातक स्तर के क्रमशः 25 छात्र 25 छात्राओं के साक्षात्कार हेतु चुना गया है।

निर्दशन विधि – (Purposive Sample)

प्रस्तुत अध्ययन में मुख्य दृष्टिकोण यह था कि प्रत्येक वर्ग प्रत्येक जाति, प्रत्येक संकाय के स्नातक एवं परस्नातक स्तर मे छात्र छात्राओं का अध्ययन किया जाये । अतः **इसमें उद्देश्य पूर्ण निदर्शन प्रणाली का प्रयोग किया गया है** इस दृष्टि कोण को देखतें हुये छात्रों का चुनाव जाति वर्ग संकायों के आधार पर किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन ने निर्धारित महाविद्यालयों मे छात्र संख्या 60-70 हजार है उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक महाविद्यालय के संकायो एवं जाति तथा वर्ग के आधार पर 25-25 छात्राओं को चुना गया तथा चुने हुये सूचनादाताओं साक्षात्कार सूची के माध्यम से सूचनाओं का संकलन किया गया हैं।

निर्दशन से आशय –

समूह के प्रतिनिधि सदस्यों को चुनकर उन्ही से जानकारी प्राप्त करना और उस जानकारी को सम्पूर्ण समूह अथवा 'समग्र' के लिए ठीक मानना या मोटे तौर

पर कह सकते है कि समग्र मे से चुने ऐसे 'कुछ' को जो कि समग्र का उचित प्रतिनिधित्व करता है कि निदर्शन अथवा प्रतिदर्शन ग्रहण पद्धति कहा जाता है । अर्थात समग्र का उचित प्रतिनिधित्व करने वाली कुछ इकाइयों को निदर्शन कहते है।

जैसा कि गुड एवं हॉट (1952) मे लिखा हैं –

''एक निदर्शन जैसा कि नाम स्पष्ट है किसी विशाल सम्पूर्ण का छोटा प्रतिनिधि है।''

A Sample as the name applies, is a smaller representation of large whole "

फेयरचाइल्ड ने अपनी डिक्शनरी आफ सोशलॉजी मे मिलट्रेड पार्टन के शब्दो का उल्लेख करते हुयें लिखा है ''एक निश्चित संख्या में व्यक्तियों मामलो या निरीक्षणो को एक समग्र विशेष मे से निकालने की प्रक्रिया या पद्धति अथवा अध्ययन हेतु एक समग्र समूह मे से एक भाग को चुनना निदर्शन पद्धति कहलाती हैं''

"Sampling method is the process as method of drawing a difinite number of individuals cases. or observation from a particular universe, Selecting part of a total group for ingestigation."

इसी सम्बन्ध मे टिर्प्पेट ने लिखा है –

''बडे समूह मे से एक छोटा भाग लेने की विधि समान्यता भली प्रकार समझी और विस्तृत रूप में काम मे लाई जाती है गृहस्वामिनी दुकान मे पनीर खरीदने से पहले उसका एक टुकडा नमूने के रूप मे लेगी और एक रूई धुनने वाला व्यक्ति केवल रूई के टुकडे को देखकर ही उस रूई की पूरी गांठ खरीद लेगा।''

" The practice of taking a small part of a large bulk to represents the whole is fairly generally understood and widely used the house wife will sample a piece of cheese of the shop before making a purchase and a cotton spineer will by a bale of cotton having seen only a sample of it "

एडोल्फ जेन्सन (Adolph Jenson) ने लिखा है-

"सविचार या उद्‌देश्यपूर्ण निर्दशन से अर्थ है इकाइयों के समूहो की एक संख्या को इस प्रकार चुनना कि चुने हुये समूह मिलकर उन विशेषताओ के सम्बन्ध मे यथा सम्भव वही औसत अथवा अनुपात प्रदान करे जो कि समग्र मे है और जिनकी सांख्यकीय जानकारी पहले से ही है ।

"Purposive sampling denotes the method of selecting a number groups of units in such a way that the selected groups together yield as nearly as possible the same overages or proposition as the totality with respact to those characteristics which are already a matter of statisfical Knowledge ."

शोध प्रविधि - (Research Techniques) -

शोध मे निम्नलिखित प्रवाधियों में से एक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

1. अवलोकन
2. साक्षत्कार
3. अनुसूची
4. व्यक्तिक अध्ययन पद्धति
5. प्रश्नावली, आदि

प्रस्तुत अध्ययन चूंकि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के राजनैतिक चेतना का अध्ययन है **अतः प्रस्तुत शोध मे साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है** अनुसूची मे सूचनादाताओं से अव्यैक्तिक पंक्ति सम्बन्धी प्रश्न पारिवारिक पृष्ठभूमि आर्थिक पृष्ठभूमि एवं राजनैतिक चेतना की विधिवत वैज्ञानिक आकडे एकत्रित करने हेतु सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये है । सम्बन्धित प्रश्न शोधकर्ता ने सूचना दाताओं का साक्षात्कार करके किया है।

पूर्व परीक्षण -

शोध के उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुये अनुसूची का निमार्ण किया गया तत्पश्चात इसकी लगभग 5 प्रतिशत सम्बन्धित महाविद्यालयो के छात्र एवं छात्राओं के ऊपर इस अनुसूची का परीक्षण किया गया कुछ प्रश्न ऐसे थे जो छात्रो को स्मरण सूची मे समझ नही आ रहे थे। जैसे राजनैतिक सहभागिता के सम्बन्ध मे प्रश्न इसके बाद प्रश्नो को अधिक स्पष्ट और विशिष्ट बनाया गया । प्रश्न रखा गया क्या वह चुनाव मे सहभाग लेते है । पूर्व परीक्षण से मिली जानकारी के अनुसार अस्पष्ट भ्रामक प्रश्न दिये गये और साक्षात्कार हेतु अनुसूची तैयार की गयी। अध्ययन साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा उत्तरदाताओं से उत्तर प्राप्त करने की विधिवत चेष्टा की गई है। साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा उत्तरदाता के आयु, जाति, धर्म, सामान्य जानकारी अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय प्रादेशिक, तथा क्षेत्रीय राजनीति के सन्दर्भ आदि मे प्रश्नो को पूछकर उत्तरदाता की योग्यता तथा राजनैतिक चेतना से सम्बन्धित जानकारियाँ प्राप्त की गई ।

इस सम्बन्ध में प्रो0 गुडे एवं हॉट (1952) मे लिखा है कि -

''विज्ञान निरीक्षण से प्रारम्भ होता है और फिर सत्यापन के लिए अन्तिम रूप से निरीक्षण पर ही लौटकर आना पड़ता है।''

Goode and Hatt (1952:119) कहते है कि -

"Science begins with observation and must utimately raturn to observation for its final validation ":

संक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि ''कार्यकरण अथवा, पारस्परिक सम्बन्ध को जानने के लिए स्वाभाविक रूप से घटित होने वाली घटनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण ''

इस सम्बन्ध मे डा0 पी0 वी0 यंग (1954) के अनुसार –

"निरीक्षण को नेत्रो द्वारा सामूहिक व्यवहार एवं जटिल सामाजिक संस्थाओं के साथ –साथ सम्पूर्णता की रचना करने वाली पृथक इकाइयों के अध्ययन की विचारपूर्ण पद्धति के रूप मे प्रयुक्त किया जा सकता है।

P.V. young 1954 : 199

"Observation is a systematic and delibevate Study Through eye of the spontaneous occuraances at the time they occur."

ऑक्फोर्ड कान्साइज डिक्सनरी (1961:169) के अनुसार –

घटनाएं कार्य कारण अथवा पारस्परिक सम्बन्धो के सम्बन्ध जिस रूप मे वे उपस्थिति होती है का यथार्थ निरीक्षण एवं वर्णन है।

"Accutate watching nothing of phenomena as they occur in nature with regard to cause and effect or mutual selations"

साक्षात्कार (Interview) –

सामाजिक अनुसंधान की पद्धतियों मे साक्षात्कार पद्धति का स्थान सर्वोपरि है । अन्य व्यक्तियें के आन्तरिक विचारो को जानने में यह एक उपयोगी पद्धति है। साक्षात्कार समूह अथवा व्यक्तियों के पारस्परिक सर्म्पक की क्रमबद्ध प्रणाली है। जिसके माध्यम से अन्य व्यक्तियों अथवा समुदाय के जीवन के अपरिचित तथ्यो का ज्ञान होता है । जब तक दोनो मिलने वाले पक्ष समान सामाजिक स्तर पर आकर विचार विमर्श को तैयार नही होते तब तक साक्षात्कार होना सम्भव नही है।

पी0 वी0 यंग (1953) के अनुसार –

''साक्षात्कार को एक क्रमबद्ध प्रणाली माना जा सकता जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के आन्तरिक जीवन मे अधिक अथवा कम काल्पनिकता से प्रवेश करता है।

जो कि उसके लिए समान्यता या तुलनात्मक रूप से अपरिचित''

P.V young (1953:242)

"The Interview may be regarded as a systematic method by which one person enters more or less imaginatively in to the inner life of another who is generally a comparative stranger to him" :

गुडे एवं हाट 1952 मे अनुसार –

''साक्षात्कार मूलरूप मे एक समाजिक प्रक्रिया है''

Interview is fundamentally a process of social interaction"

पायो यंग के अनुसार –

''साक्षात्कार क्षेत्रीय कार्य की एक पद्धति है जो एक व्यक्ति या व्यक्तियों के व्यवहार की देखभाल करने कथनों को अंकित करने वा समाजिक या सामूहिक अन्तक्रिया के वास्तविक परिणामों का प्रेक्षण करने के लिए प्रयोग मे ली जाती है।

The interview is a techique of field work which is used to watch the behavior of an individual to record statement, to observe the concrete result of social process , it usually involves interaction. between two persons"

अनुसूची –

सामाजिक अनुसंधान में विश्वसनीयता लाने के परोक्ष साधनो की अपेक्षा प्रत्यक्ष साधनो पर बहुत अधिक जोर दिया जाने लगा हैं। ऐसे साधनो मे अनुसूची का महत्वपूर्ण स्थान है यह सामाजिक घटनाक्रम अथवा सामाजिक व्यवहार

या सामाजिक समस्या के सम्बन्ध में सामग्री एकत्रित करने की बहुत उपयोगी पद्धति है। प्रेक्षण और साक्षात्कार को वैज्ञानिकता प्रदान करने और उसे गहरी जानकारी संग्रहीत करवाने मे यह पद्धति बहुत सफल रहती है।

अनुसूची ऐसे प्रश्नों की एक तालिका होती है। जिसकी अध्ययनकर्ता अपने प्रेक्षण अथवा साक्षात्कार के समय स्वयं पूर्ति करता है।

बोगार्डस (1936) ने अनुसूची को परिभाषित करते हुये लिखा है:-

''अनुसूची तथ्यो को प्राप्त करने के लिए एक औपचारिक प्रणाली का प्रतिनिधित्व करती है जो वस्तुनिष्ठ रूप में है। एवं आसानी से प्रत्यक्ष अनुभव किये जाने योग्य है। अनुसूची स्वयं अनुसंधानकर्ता द्वारा भरी जाती है।''

बोगार्डस ने अपनी पुस्तक इन्ट्रोडक्सन सोसल रिसर्च (1936:45) में कहा कि -

The Schedule represents a formal method for securing facts that are in objective form and easily discernible--------the schedule is filled out by investigator himself."

गुडें एवं हाट (1952) के अनुसार -

अनुसूची एक नाम है जो साधारणतया प्रश्नों के एक समूह के लिए लागू होता है जो एक साक्षात्कारकर्ता के द्वारा दूसरे व्यक्ति से आमने सामने की स्थिति में पूछे व भरे जाते है।

"The schedule is the name usually applied to a set of questions which are asked and filled inby an interview in a face situation with another person.

मोसर 1958 ने लिखा है -

'' जब तक यह साक्षात्कार कर्ता द्वारा संचालित होती है यह स्पष्ट रूप से औपचारिक प्रलेख हो सकती है जिसमें आकर्षण की अपेक्षा कुशल क्षेत्र संचालन ही उद्देश्य में विचार है।

"Science it is handled by interviewers it can be fairly formal document in which efficiency is the operative Consideration in design."

हम यह कह सकते है कि अनुसूची का तात्पर्य एक ऐसे प्रपत्र से होता है जिसमें प्रश्नो अथवा उन आधारो का समावेश होता है जिनके अनुसार अध्ययनकर्ता स्वयं क्षेत्र मे जाकर अवलोकन करता है या स्वयं सम्बन्धित व्यक्तियों से मिलकर उनका साक्षात्कार करता है।

विशेष –

प्रस्तुत अध्ययन के साक्षात्कार और इसमें प्रस्तुत शोध के उद्देश्य को ध्यान मे रखते हुये शोधकर्ता ने एक अनुसूची का निमार्ण किया है तथा व्यक्तिगत रूप से निदर्शन में चुने गये विद्यार्थियों का प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया है साक्षात्कार अनुसूची मे विद्यार्थियों की आयु जाति पढाई का स्तर उनके पारिवारक स्तर इत्यादि के अतिरिक्त राजनैतिक चेतना का एक राजनैतिककरण के पैमाने का निर्माण कर उससे ऐसे प्रश्न पूछे गये है। जिसमें राजनैतिक चेतना को सत्य की रूप मे अध्ययन किया जा सके ।

प्रश्नावली अथवा प्रश्न समूह –

सामाजिक अनुसंधान की विभिन्न पद्धतियों मे प्रश्न समूह या प्रश्नावली पद्धति बहुत उपयोगी मानी जाती है और इसका प्रयोग बहुत अधिक प्रचलन मे है। प्रश्न समूह प्रश्नो की एक सूची होती है जब किसी समाजिक समस्याय के बारे मे शोध करना हो तो उससे सम्बन्धित आवश्यक प्रश्न बना लिये जाते है और उनको व्यवस्थित रूप मे एक सूची मे अंकित कर लिया जाता है। इस सम्बन्ध में विभिन्न विज्ञानविमत है।

पी0वी0 यंग 1958 के अनुसार -

"मापने योग्य सामाजिक घटना के अध्ययन में सहायक यन्त्र के रूप में सामाजिक वैज्ञानिक प्रश्न समूह का उपयोग करते हैं"

"Social Scientists use the questionnaire chiefly as a supplementary tool in studying easurable social phenomenon"

इसका तात्पर्य प्रश्नो की उस क्रमबद्ध तालिका से होता है । जो विषय वस्तु के सम्बन्ध में सूचनाएं प्राप्त करने मे योग देती है ।

विल्सनगी (1950:314) ने अपनी पुस्तक सोशल साइन्स रिसर्च मैथम में कहा है कि-

प्रश्नावली डी संख्या मे लोगो से अथवा कोई चुने हुये समूह से जो विस्तृत क्षेत्र में फैला है सीमित मात्रा मे सूचना प्राप्त करने की सुविधा जनक प्रणाली है।

Wilson gee (1950:314)

It constitutes a convenient method of obtaining a limited amount of information from a large number of persons or from a small selected group which is widely scattered"

वैयक्तिक सामाजिक पद्धति (Case –Study Method)

सामाजिक अनुसंधान के क्षेत्र मे एकल विषय अध्ययन या वैयक्तिक अध्ययन पद्धति बहुत प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मानी जाती है। समाज विज्ञान के क्षेत्र में इस पद्धति का प्रयोग सर्वप्रथम हरबर्ट स्पेन्सर ने किया था लेकिन व्यवस्थित ढंग से प्रयोग मे लाने का श्रेय लीप्ले को है जिसने फ्रांस के परिवारो के आय व्यय के अपने अध्ययन इसी सहायता से किये थे।

इसे परिभाषित करते हुये विसेन्ज ने लिखा है कि -

''एकल विषय अध्ययन की पद्धति गुणात्मक विश्लेषण का एक स्वरूप है जिसमें एक व्यक्ति परिस्थति या संख्या का बहुत सावधानी से प्रेक्षण किया जाता है।''

The case is form of qualitive analysis involving the very careful and complete observation of a person. Situation or an institution"

राजनैतिकीकरण पैमाना -

प्रस्तुत अध्ययन छात्र छात्राओ मे इस स्तर की राजनैतिक चेतना है उसका सही मापन करने की दृष्टिकोण से एक राजनैतिक करण का पैमाना बनाया गया है। राजनैतिक के दो प्रमुख तत्व होते है।

1. राजनैतिक चेतना
2. राजनैतिक सहभागिता

राजनैतिक चेतना -

राजनैतिक चेतना की बात को यहॉ राजनैतिक करण के समनार्थी के रूप मे प्रयोग किया गया है। राजनैतिक चेतना का अर्थ होता है राज्य तथा उसकी सरकार के बारे मे इसके निवासियों की चेतना ।

राजनैतिककरण की परिभाषा **डोनियल गोल्डरिच** को द्वारा **1968** ने परिभाषित की गयी एक व्यक्तिगत चेतना में योगदान और संसार की राजनीतिक तथा सरकार मे सम्बद्ध के रूप मे की गयी है।

Daniel goldrich (1968) : As a continum of individual awarness and involvement in the world of politics and .goverments."

राजनैतिक सहभागिता -

डाउजे और ह्युज (1972:290) राजनैतिक सहभागिता की परिभाषा कर रहे है। ''वे इच्छापूर्ण कार्य जिनके द्वारा समाज सदस्य प्रशासंको के चयन मे योगदान

करते है । और प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जनता (समाज) नीति के निमार्ण में सहयोग देते है।

Dowse and Hughes (1972 :290) " ने सहभागिता को निम्न ढंग से समझाया है ""Those voluntary achivities by which members of society share in the selection of rulers and, directly or indirectly, in the formation of public policy"

Since political rules may vary from anactive to highly participation milbrathe's(1965) typology. Classifying political activity seems to be by more appropriate . He has distinguished three types of political participation, viz., spectator activity transitional activities and gladiatorial activities. spectator activity is the initiation in political activity having the lowest level of involvement like wearing the badge etc.

The transitional activites are higher level of political activity which includes attending political meetings are rallies or making monetary contributions or Contacting a public official are political leader. Gladiatorial activities include a high degree of participation . Such as campaigning for condidate or holding a public and party office, contesting election etc."

छात्र छात्राओं में राजनैतिक पैमाने के लिए निम्न राजनैतिक करण पैमाने बनाये गये हैं

1. अन्तराष्ट्रीय चेतना पैमाना
2. राष्ट्रीय चेतना पैमाना
3. प्रादेशिक चेतना पैमाना
4. क्षेत्रीय चेतना पैमाना
5. मीडिया चेतना पैमाना

उपर्युक्त प्रत्येक पैमाने मे वैषायिक प्रश्न पूछें गये है और उत्तरो को सांख्यकीय आधार पर मापा गया है।

अधिकतम सबसे ज्यादा - 64

न्यूनतम सबसे कम - 00

प्रस्तुत अध्ययन मे वस्तुनिष्ठता को ध्यान में रखते हुये सांख्यिकी के ढ़ंग से रखे गये है। और इनमे आर्थीडिक मीन और आर्थीडिक मीडियम निकाले गये है।

साख्यिकी परीक्षण -

सूचनाओं की वस्तुनिष्ठता बनााये रखने के दृष्टि कोण से जहॉ सम्भव हुआ है वहॉ आकडो की व्याख्या साख्यिकी के प्रयोग द्वारा की गई है इसके साथ -साथ राजनैतिक चेतना के आकडें पूर्ण रूप से सांख्यिकीय पर आधारित है राजनैतिक चेतना में प्रश्नो के उत्तर मे सांख्यकीय की गई है।

उदाहरण कि तौर पर यदि प्रश्न अपने भारत में कितने प्रकार के राजनैतिक दल है, यदि सूचनादाता ने 3 या 3 से अधिक उत्तर दिये है उसे 3 अंक यदि 2 सही उत्तर दिये है 2 अंक और 1सही उत्तर दिया है तो एक अंक यदि गलत उत्तर बताये या उत्तर नही दिया तो 0 अंक मिलेगे ।

राजनैतिक प्रकार से पूछी गई सूचनाओं को साख्यिकीय मैं परिवर्तित कर सूचना दाताओ के बारे में वास्तविकता का पता चलता है।

शोध अनुभव -

वास्तविक शोध वह है जो कठिनाइयों का अनुभव कराये साथ ही साथ सत्य तक पहुॅचाने का मार्ग तथा जीवन मूल्य भी बताए । शोध ऐसा होना चाहिए शोधार्थी के दिमाक मे केवल सिद्धान्त और आंकडे ही न ठूसती हो बल्कि शोध ऐसा होना चाहिये जो व्यक्तितत्व का विकास अवरूद्ध न होने दें ।

1. Pilot Study - शोध प्रविधि निर्माण के पहले शोधकर्ता ने सारे अध्ययन क्षेत्र का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण किया । कई महाविद्यालयों के छात्र छात्राओं से अनौपचारिक ढंग से सम्पर्क किया ताकि साक्षात्कार और अनुसूची बनाने में सुविधा हो।
2. **पूर्व परीक्षण** - जब साक्षात्कार तैयार हो गया तो हमने लगभग 10 छात्र एवं 10 छात्राओं से सम्पर्क कर अनुसूची मे सूचनाऐं प्राप्त की जो प्रश्न छात्र /छात्राओं के स्पष्ट रूप से समझ में नही आ रहे है या जिनकी कुछ शब्दावली में किसी प्रकार का भ्रम था उनको दूर और संशोधित कर दिया गया है और पुनः अनुसूची का निर्माण कर लिया गया ।

साक्षात्कार - प्रस्तुत अध्ययन मे साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। तथा साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग कर उत्तर दाताओ से उत्तर प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया है । शोधार्थी ने साक्षात्कार के पूर्व उत्तरदाताओं को अपना परिचय एव अपने उद्देश्यों से अवगत कराया एवं उनमें सहयोग करने तथा वास्तविक जानकारी देने का अनुरोध किया । साक्षात्कार के दौरान कई परेशानियां अवश्य आयी किन्तु शोधार्थी ने अत्यन्त सावधान से सभी कठिनाइयों को समाप्त किया साक्षात्कार के माध्यम से बहुत अन्तर दृश्य प्राप्त हुय और बहुत बहुमूल्य सर्वेक्षण हुये पहलीबार यह जानकारी मिली कि बातचीत और समाज शास्त्रीय साक्षात्कार में कितना महान अन्तर है।

प्रस्तुत अध्याय मे विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालय के छात्र/ छात्राओं की राजनैतिक चेतना का समाज शास्त्रीय अध्ययन है एवं प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत शोध मे प्रयोग किये गये पद्धति का वर्णन किया गया है ।

विश्व के अनेक रहस्यात्मक तथ्य दिये है अैर तथ्यों में कुछ पुरानापन होता हे फलस्वरूप मनुष्य अपनी जिज्ञासा प्रवृत्ति से प्रेरित होकर उन तथ्यो खोजने अथवा उनमें नयापन, नई झलक और नये दृष्टिकोण लाने के लिये प्रयत्नशील रहता है और इसी प्रयत्न के उद्देश्य मानकर स्पष्टीकरण करना ही शोध कहलाता है।

शोध के उद्देश्य को आधार मानकर अध्ययन विषय को विभिन्न पक्षों को उदघाटित करने के लिए पहले से एक बनाई गई योजना की रूपरेखा को शीघ्र प्ररचना कहते हैं। वस्तुतः शोध प्ररचना तीन प्रकार की होती है किन्तु प्रस्तुत अध्ययन मे अन्वेषणात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है।

चूँकि अध्ययन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय एवं उससे सम्बद्ध समस्त महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं के राजनैतिक चेतना के सन्दर्भ मे है जिनकी संख्या 60-70 हजार है संशोधनो एवं शोध उपाधि मे समय सीमा को दृष्टिगत रखते हुये मात्र 8 महाविद्यालय से 400 सूचनादाता चयनित किये गये है जिसमे स्नातक एवं परास्नातक स्तर के कमशः 25-25 छात्र छात्रायें है साथ -साथ यह भी ध्यान मे रखा गया है कि सूचनादाता उच्च, पिछडी एवं अनुसूचित जाति के हो ।

अब अध्ययन के अन्तर्गत सूचनादाताओं से सूचनाओं के सकंलन हेतु विभिन्न प्रविधियों का उल्लेख किया गया है और मुख्य रूप से सूचना संकलन साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण कर उत्तरोको प्राप्त किया गया है। जिसमें सूचनादाताओं से अव्यैक्तिक सम्बन्धी प्रश्न परिवारिक पृष्ठभूमि आर्थिक पृष्ठभूमि तथा राजनैतिक चेतना के सम्बन्ध में विधिवत वैज्ञानिक आकडे एकत्रित करने हेतु सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये है ।

प्रस्तुत अध्यााय मे छात्र छात्राओं की राजनैतिक चेतना का आकलन करने हेतु एक राजनैतिक करण पैमाना बनाया गया है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय स्तर के राजनैतिक प्रश्न पूछे गये है जिसमे न्यूनतम अंक 0 तथा अधिकतम अंक 64 निर्धारित किया है परिणाम स्वरूप राजनैतिक प्रकार से पूछी गयी सूचनाओं की साख्य कीय मे परिवर्तित कर सूचनादाताओ के बारे मे वास्तविकता का पता चलता है।

: अध्याय तृतीय :

सूचनादाताओ की सामाजिक पृष्ठभूमि

सूचनादाताओ की सामाजिक पृष्ठ भूमि

सूचनादाताओं की सामाजिक पृष्ठिभूमि - प्रस्तुत अध्याय में विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्र छात्राओ में राजनैतिक चेतना के वास्तविक जानकारी करने की दृष्टिकोण से सूचनादाताओं की व्यक्तिगत पृष्ठभूमि जिसमें सूचनादाताओँ की आयु, धर्म, जाति शिक्षास्तर, ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश, आय वैवाहिक स्थिति इत्यादि के सम्बन्ध मे आकडे एकत्रित किये गये है ।

छात्र-छात्राओं की राजनैतिक चेतना की वास्तविक जानकारी के लिए आवश्यक है कि उनकी आयु, जाति, समूह उनके संकाय उनकी कक्षा, धर्म, जन्मस्थान, परिवार का स्तर आदि के बारे मे आकडे एकत्रित किये जाए।

सूचनादाताओ की आयु निम्न सारणी मे दी गई है।

सारणी क्रमांक 3.1

सूचनादाताओं की आयु

क.स0	सूचनादाताओ की आयु	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	16 - 20वर्ष	128	64.00	67	33.50
2.	21 - 25वर्ष	71	35.00	84	42.00
3.	26 - 26वर्ष	1	.50	35	17.50
4.	31 - 35वर्ष	0	0	14	7.00
	योग	200	100.00	200	100.00

सूचनादाताओ की आयु - उपरोक्त सारणी 3.1 को देखने से यह प्रतीत होता है कि सूचनादाताओं की आयु मुख्यत: 3 आयु समूह वर्गो मे देखने को मिली है । 16 से 20 वर्ष 21 से 25 वर्ष एवं 26 से 30 वर्ष में छात्राओं की उम्र

64.00, 35.5 .50 पर छात्राओं का प्रतिशत जबकि इन्ही वर्ग समूहो में छात्रों का प्रतिशत 33.50, 42.00,17.50 प्रतिशत कुछ छात्र 31 से 35 वर्ष आयु समूह मे आते है।घी 7.0 प्रतिशत है इस समूह मे छात्राओं का प्रतिशत शून्य हैं ।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्र-छात्रायें 16 से 25 वर्ष वर्ग समूह की युवा एवं युवतिया है।

राजनैतिक चेतना अध्ययन के दृष्टिकोण से मुख्यतः 16 से 25 वर्ष के आयु समूह के छात्रा छात्राये उत्तरदाता है।

सारणी क्रमांक 3.2

सूचनादाताओं का धर्म

क.स0	सूचनादाताओ का धर्म	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	हिन्दू	195	97.50	195	97.50
2.	इस्लाम	5	2.50	5	2.50
3.	थ्सक्ख	0	0	0	0
4.	इसाई	0	0	0	0
	योग	200	100.00	200	100.00

1. सूचनादाताओ का धर्म –

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3.2 को देखने से प्रतीत होता है कि सूचनादाता मुख्य रूप से दो धर्म समूह के है पहला , हिन्दु और दूसरा इस्लाम इसमें हिन्दू छात्र एवं छात्राओं की सख्या बराबर अर्थात 195, 195 है जो क्रमांशः 97.50 97.50 प्रतिशत है इस प्रकार मुस्लिम सूचनादाता क्रमशः 5-5 छात्र छात्रा है जो कि 2.50, 2.5 प्रतिशत है। किन्तु सिक्ख और ईसाई उत्तरदाताओं की

संख्या शून्य है। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन में प्रमुख रूप से हिन्दू छात्र और छात्राये सूचनादाता है।

सारणी क्रमांक 3.3

सूचनादाताओं का जाति समूह

क.स0	सूचनादाताओ का जाति समूह	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	उच्चजाति	129	64.00	100	50.00
2.	पिछडी जाति	49	24.50	69	34.50
3.	अनुसूचित जाति	17	8.50	26	13.50
4.	अन्य	5	2.50	5	2.50
	योग	200	100.00	200	100.00

सूचनादाताओं का जाति समूह –

भारतीय सामाजिक व्यवस्था के जाति संरचना का प्रमुख महत्व है। यद्यपि भारत में औद्योगिकीकरण एवं नगरीयकरण की प्रक्रिया बहुत तीब्र है एवं अनेक स्तर पर पश्चिमी समस्यों के समकक्ष आधुनिकीकरण की प्रक्रिया चल रही है परन्तु भारतीय सामाजिक व्यवस्था की यह एक विशिष्ट विशेषता जाति संरचना एवं उससे सम्बन्धित प्रक्रियायें अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है इस दृष्टिकोण से छात्र छात्राओं मे जाति समूह के सम्बन्ध मे सूचना प्राप्त किये गये है सारणी 3.3 मे स्पष्ट होता है कि सूचनादाताओं में 129 छात्रायें एवं 100 छात्र उच्चजाति समूह के है । पिछडी जाति समूह में 49 छात्राऐ एवं 69 छात्र है तथा अनुसूचित जाति समूह मे केवल 17 छात्राओं एवं 26 छात्र है

इनमे उच्चजाति समूह में सूचनादाताओ का विवरण सबसे अधिक (64.5 प्रशित छात्र) है जबकि पिछडी जाति को (24.5 प्रतिशत छात्राये 34.50) छात्र है और अनुसूचित जाति मे 17 छात्र है अन्य मे इस्लाम धर्म के दोनो समूह मे 5 छात्र है।

अतः छात्र छात्राओं मे राजनैतिक चेतना के मूल्यांकन जाति समूहों की भमिका को समझने मे मदद मिलेगी ।

सारणी 3.4

सूचनादाताओ की कक्षा का स्तर

क.स0	सूचनादाताओ की संख्या	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	स्नातक	146	73.00	124	62.00
2.	प्रास्नातक	54	27.00	76	38.00
	योग	200	100	200	100

सारणी 3.5

सूचनादाताओ की सकांय एव कक्षा का स्तर में विभाजन

क.स0	संकाय	कक्षा		
		स्नातक	प्रास्नातक	योग
1.	कला	132	74	206
2.	शिक्षा	40	10	50
3.	विधी	26	17	43
4.	मेडिकल	6	–	6
	योग	276	130	400

शोधकर्ता की यह मान्यता थी कि छात्रो के स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर राजनैतिक चेतन मे भिन्नता है इस दृष्किोण से सभी छात्र छात्राओं सूचनाओं को स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर रखें उनके संकायों के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त की । सारणी 3.4 मे स्पष्ट होता है कि चयनित सूचनादाताओ मे सबसे अधिक छात्रायें एवं छात्र कला संकाय से सम्बन्धित है। यह स्नातक स्तर पर 36.5 प्रतिशत छात्राओं एवं 29.5 प्रतिशत छात्र है एवं परास्नातक कला स्तर पर 17.5 प्रतिशत छात्रायें एवं 19.5 प्रतिशत छात्र है इसी प्रकार न्यूनतम श्रेणी मे मेडिकल स्नातक स्तर पर 1 प्रतिशत छात्राये एवं 2 प्रतिशत छात्र है।

सारणी से यह भी पता चलात है कि चयनित सूचनादाताओं मे 73 प्रतिशत स्नातक छात्रायें एवं 62 प्रतिशत छात्र तथा 27 प्रतिशत परास्नातक छात्रायें एवं 38 प्रतिशत छात्र है।

सारणी क्रमांक 3.6

क.स0	सूचनादाताओ का जन्म सीान	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	ग्रामीण	26	13.00	96	48.00
2.	नगरीय	174	87.00	104	52.00
	योग	200	100.00	200	100.00

उपरोक्त सरणी क्रमांक 3.6 से प्रतीत होता है कि ग्रामीण सूचनादाताओं की अपेक्षा नगरीय सूचनादाताओ की संख्या अधिक है अर्थात नगरीय सूचनादाताओं की सख्या 278 जो 69.5 प्रतिशत एवं ग्रामीण स्थानो जन्म लेने वाले सूचनादाताओं की संख्या 122 जो 35.0 प्रतिशत जिसमे - से नगरीय छात्राओ की संख्या 174 जो 87.00 प्रतिशत एवं छात्रो की सख्या 104 जो 52.00 प्रतिशत है। दूसरी ओर ग्रामीण छात्राओं की संख्या 26 जो 13.00 प्रतिशत है एवं छात्रो की संख्या 96 जो 48 प्रतिशत है।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन मे नगरी क्षेत्र मे छात्र छात्राओं का ग्रामीण स्थान की तुलना में अधिक प्रतिशत है।

सारणी क्रमांक 3.7

सूचनादाता भूत प्रेत मे विश्वास रखते है या नही

क.स0	विवरण	छात्रा	प्रतिशत	छात्र	प्रतिशत
1.	ळै	53	26.00	29	14.50
2.	न्ही	147	73.00	85	85.50
	योग	200	100.00	200	100.00

सूचनादाता अधिकांश मात्रा में भूतप्रेत मे विश्वास नही रखते। सर्वाधिक 147 छात्रा एवं 171 छात्र सूचनादाताओ का मानना है कि यह केवल अंधविश्वास है जो कम पढें लिखे लोग होते है और विज्ञान को नही मानते उनको भूत प्रेत के अंधविश्वास मे लेकर लोग ठगते है जहॉ पर शिक्षित वर्ग रहता है वहॉ पर भूत प्रेत पर विश्वास नही किया जाता भूतप्रेत पर अधिकांशतः निम्नवर्ग, एवं अनुसूचित जाति जनजाति के लोग विश्वास करते है जो पढे लिखे नही होते है।

दूसरी ओर 53 छात्रा 29 छात्र क्रमशः 26.50 प्रतिशत एवं 14.50 प्रतिशत सूचनादाताओं का मानना है। कि प्रेत योनि होती है जिस प्रकार मानव एक प्रजाति है उसी प्रकार भूत प्रेत भी एक प्रकार की प्रजाति जो आदृश्य रूप में है ये प्रजाति दिखायी न देकर अपनी कार गुजारी करती रहती है।

उपरोक्त सारणी 3.7 से स्पष्ट है कि 53 छात्रा रख 29 छात्र क्रमशः 26. 50 प्रतिशत एवं 14.50 प्रतिशत सूचनादाता भूतप्रेत पर विश्वास रखते है तथा 147 छात्रा तथा 171 छात्र क्रमशः 73.50 प्रतिशत एवं 85.50 प्रतिशत सूचनादाता भूत प्रेतो पर विश्वास नही करते हैं।

सारणी क्रमांक 3.8

सूचनादाता नित्य पूजा करते है या नही

क.स0	विवरण	छात्रा	प्रतिशत	छात्र	प्रतिशत
1.	व्ळॉ	109	54.50	59	9.50
2.	कभी -कभी	88	44.00	132	66.00
3.	बिल्कुल नही	3	1.50	9	4.50
	योग	200	100.00	200	100.00

प्रस्तुत अध्ययन मे राजनैतिक चेतना को स्पष्ट करने के लिए उपरोक्त प्रश्न भी पूछा गया था जिससे स्पष्ट है कि अधिकांश छात्राये नित्य पूजा करती है इनका मानना है कि इस संसार को एक ऐसी आदृश्य सत्ता है जिस सृष्टि का निर्माण किया है और सृष्टि को चला रही है अतः उस सत्ता की नित्य प्रति पूजा की जानी चाहिए । अधिकाशं यात्रा के सूचनादाता नित्य प्रति पूजा तो करना चाहते है किन्तु अधिक व्यस्त होने के कारण कभी-कभी पूजा करते है । कुछ छात्र छात्राओं का मानना है कि संसार ईश्वर नही है यह दिखावा मात्र है उनका मानना है है जो भी अपराध होते है वे धर्म की आड में ही होते है जो है वे मनुष्य का कर्म है यदि मनुष्य अच्छा करेगा तो उसको अच्छा प्रतिफल ही मिलेगा

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3.8 से प्रदर्शित होता है कि 109 छात्र एवं 59 छात्र क्रमाशः 54.50 प्रतिशत 9.50 नित्य प्रति अपने अराध्य को पूजते है 88 छात्राये 132 छात्र क्रमशः 44 प्रतिशत 66% समय अभाव के कारण कभी कभी पूजा करते है लेकिन उनका समर्थन पूजा करने के साथ मे है 3 छात्रा 9 छात्रा क्रमशः 1.5% एवं 9% सूचनादाता नास्तिक है अर्थात वे कभी पूजा नही करते नही धर्म पर विश्वास करते ।

सारणी क्रमांक 3.9

क्या सूचनादाता के पूजा स्थलो मे जान्य पसन्द करते है या नही

क.स0	विवरण	छात्रा	प्रतिशत	छात्र	प्रतिशत
1.	ळॉं	171	85.50	188	94.00
2.	न्ही	29	14.50	12	6.00
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी क्रमांक 3.9 से स्पष्ट हो रहा है कि अध्ययन सूचनादाता को किसी जाति, धर्म,, मजहब के पूजाग्रहो मे जाने में परहेज नहीं है। इससे सूचनादाताओं की चेतना का पता चलता है कि सूचनादाता सभी धर्मो को एक मानता है 171 छात्रा एवं 188 छात्र क्रमशः 85.50 एवं 94.00 प्रतिशत सूचनादाताओ का मत है कि सभी धर्मो को एक मानकर पूजा स्थलो मे जाना चाहिएं किन्तु 29 छात्र क्रमशः 12 छात्र क्रमशः 14.50 एवं 6.00 सूचनादाताओ का मत है कि मात्र अपने धर्म के पूजा स्थलो मे जाना चाहिऐ इस मत से ऐसा प्रतीत होता है कि सूचनादाता को अत्याधुनिक विज्ञान के विकसित हो जाने पर भी मानसिकता को बदला नही जा सका है।

स्पष्ट है कि 85.50 प्रतिशत छात्रां एवं 94.00 प्रतिशत छात्र सूचनादाता दूसरो के पूजा स्थलों पर जाना पसन्द करते है जबकि 24.50 प्रतिशत छात्राये एवं 6. 00 प्रतिशत छात्र अपने ही धर्म के पूजा स्थलो मे जाना पसन्द करते है।

सारणी क्रमांक 3.10

सूचनादाता धार्मिक कर्मकाण्ड मे विश्वास रखते है या नही

क.स0	विवरण	छात्रा	प्रतिशत	छात्र	प्रतिशत
1.	हॉ	192	96.00	183	91.50
2.	नही	8	4.00	17	8.50
	योग	200	100.00	200	100.00

धरती आकाश, तारे, चॉद, अन्य आधुनिक अजूबे धर्म को मानने के लिए वाध्य करती है भूत की असफलता वर्तमान का संकट उज्जवल भविष्य हेतु अत्याधिक मात्रा मे सूचनादाता धार्मिक कर्मकाण्ड पर विश्वास रखते है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3.10 स्पष्ट करण है कि 192 छात्र एवं 183 छात्राओं क्रमांश: 96.00 91.50 प्रतिशत सूचनादाता धार्मिक कर्मकाण्ड मे विश्वास रखते है किन्तु 8 छात्रा 17 छात्र क्रमश: 4.00 एवं 8.50 प्रतिशत सूचनादाता धर्म तथा धार्मिक कर्म काण्ड में विश्वास नही रखते ।

प्रस्तुत अध्ययन मे धर्म मे मानने वालो की संख्या अधिक है क्योकि यह क्षेत्र पिछडा क्षेत्र एवं कृषि आधारित क्षेत्र है जहॉ सिचाई के साधन उपर्युक्त मात्रा मे नही है अत: यहॉ का समुदाय वर्षा मे निर्भर रहता है और वर्षा का सम्बन्ध धर्म से जोंडने के कारण धार्मिक कर्मकाण्डो मे विश्वास रखना पैत्रक बन चुका है।

सारणी क्रमांक 3.11

सूचनादाता को शुभकार्य मे जाते समय कोई न मिल जाये कोई छीक दे या बिल्ली रास्ता काट जाये तो क्या करेगा

क्र.स0	विवरण	छात्रा	प्रतिशत	छात्र	प्रतिशत
1.	उस रास्ते से नही जाते है।	45	22.50	8	4.00
2.	थोडी देर के बाद जाते है	38	19.00	21	10.5
3.	इससे कोई फर्क नही पडता है	117	58.50	171	85.5
	योग	200	100.00	200	100.00

मनुष्य को शिक्षा के माध्यम से ही जागृत किया जा सकता है चूँकि प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालयो की छात्र -छात्राओं मे राजनैतिक चेतना का अध्ययन है अर्थात महाविद्यालय मे पढ रहे छात्र -छात्राये वस्तुत: पढे लिखे होते

है परिणाम स्वरूप चेतना है कि बिल्ली के रास्ता काटने या काना मिलने अथवा किसी के छीक देने सें अपने मार्ग मे जाते समय कोई फर्क नही पडता ।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3.11 से प्रतीत होता है कि 117 छात्राये 171 छात्र क्रमशः 58.50, 85.50 प्रतिशत सूचनादाता जागृत है जो किसी भी अवरोध को नही मानते है ।

प्रस्तुत शोध 'महाविद्यालय के छात्र/छात्राओ मे राजनैतिक चेतना' के अध्याय तृतीय मे विश्वविद्यालय के सम्बद्ध महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं मे राजनैतिक चेतना जानने हेतु सामाजिक पृष्ठ भूमि जानना नितान्त आवश्यक है । चूंकि मनुष्य एक समाजिक प्राणी है । अतः राजनीतिक सामाजिकता का एक अंग है इस दृष्टिकोण से समाजिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित कुछ प्रश्न सूचनादाताओं से पूछे गये है। जिसमें सूचनादाताओ की आयु, धर्म, जाति, शिक्षा का स्तर, ग्रामीण नगरीय परिवेश, आय, वैवाहिक स्थिति इत्यादि के सम्बन्ध मे आकडें एकत्रित किये गये है।

सर्वप्रथम सूचनादाताओं की आयु पर प्रकाश डाला गया है जिसमें सर्वाधिक संख्या 21 वर्ष से 25 वर्ष के छात्र सूचनादाताओं 16 वर्ष से 18 वर्ष के छात्रा सूचनादाताओं को है। कुल 97.50 प्रतिशत सूचनादाता हिन्दू धर्म से सम्बन्धित है। शोधकर्ता ने सूचना संकलन मे जाति को भी आधार बनाया है जिसमें से 57. 25 प्रतिशत उच्चजाति, 29.50 पिछडी जाति 10.50 अनुसूचित जाति तथा 2.5 प्रतिशत अन्य सूचनादाता है वस्तुतः भारतीय समाजों के व्यवस्था मे जाति संरचना का प्रमुख महत्व है । यद्यपि शोधकर्ता की मान्यता थी कि छात्रों के स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर राजनैतिक चेतना से भिन्नता है इस दृष्टि से कक्षा/संकायों का भी वर्गीकरण किया जिसमे से मुख्य रूप से 67.50 प्रतिशत छात्र छात्राये स्नातक एवं 32.50 प्रतिशत छात्र। छात्राये परस्नातक स्तर के है

अध्ययन ने जन्म स्थान परिवेश भी करना आवश्यक था अतः 30.50 प्रतिशात छात्र/छात्राये ग्रामीण तथा 69.50 प्रतिशत छात्र छात्राये नगरीय परिवेश से सम्बन्धित है। सारणी क्रमांक 3.8 स्पष्ट करती है कि इस संसार मे एक ऐसी आदृश्य सत्ता है। जिसने सृष्टि का निर्माण किया है अतः उस आदृश्य सत्ता की भगवान ईश्वर अल्ला की पूजा नित्यप्रति की जानी चाहिये । यह बात स्पष्ट है कि आज वर्तमान समय मे अधिकांश अपराधो को धर्म से सम्बन्ध बनाकर अग्रसारित किया जाता है सारणी कमांक 3.9 यह प्रदर्शित करती है अत्याधुनिक विज्ञान विकसित हो जाने पर भी सूचनादाताओं के धर्म के प्रति मानसिकता को नही बदला जा सकता है। भूत की असफलता, वर्तमान का सकंट, उज्जवल भविष्य हेतु सारणी कमांक 3.10 सूचनादाताओं के धार्मिक कर्मकाण्डो में विश्वास को प्रदर्शित करती है।

छात्र छात्राओं की राजनैतिक चेतना की वास्तविक जानकारी के लिये आवश्यक था कि उनकी आयु, जाति, समूह संकाय/कक्षा धर्म/धर्म के प्रति विश्वास आदि समस्त सामाजिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित आकडे एकत्रित किये गये है।

: अध्याय चतुर्थ :

सूचनादाताओ की परिवारिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि

सूचनादाताओं की परिवारिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि

सूचनादाताओं की परिवारिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि –

प्रस्तुत अध्याय में सूचनादाताओं की पारिवारिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि की व्याख्या की गई है राजनैतिक चेतना के विकसित होने मे सूचनादाताओं का किस प्रकार समाजीकरण हुआ है यह जानना आवश्यक है क्या जो छात्र-छात्रायें उच्च आर्थिक स्तर पर है उनमें ही राजैतिक चेतना उच्चस्तर पर है।

छात्र-छात्राओं के माता पिता के व्यवसायों का वर्गीकरण किया गया है इनके साथ –साथ छात्र छात्राओं के परिवार, विवाह, दहेज के बारे में विस्तृत सूचनाये प्राप्त की गई है क्या अभी भी पढे लिखे छात्र छात्राये अपनी ही जाति एवं धर्म मे विवाह कर रहे है या विवाह करना पसन्द कर रहे है यह भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इस अध्याय में शिक्षित छात्र छात्राये दहेज जैसें अमानवीय एवं असमाजिक कुरूतियों के क्या अभी भी पक्षधर है।

प्रस्तुत अध्याय में छात्र/छात्राओ के राजनैतिक चेतना का मूल्यांकन तथा कारणो का पता लगाने का प्रयत्न किया गया है।

सारणी क्रमांक 4.1

सूचनादाताओं के माता पिता एवं संरक्षक की आय

क.स0	सूचनादाताओ की पिता /संरक्षक की मासिक आय	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	0 - 2000 रूपया	56	29.00	44	22.00
2.	2001 - 5000 रूपया	91	45.5	61	30.50
3.	5001 - 10000 रूपया	44	22.00	55	27.50

4.	10,001 - 20,000 रूपया	5	-2.50	36	2.00
5.	20,001 - 30,000 रूपया	2	1.00	.4	2.00
6.	30,001 - 40,00 रूपया	0	0.00	0	0.00
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी कमांक 4.1 सूचनादाताओं के पिता/सरंक्षक की मासिक आय प्रदर्शित करती है इसी सारणी को 6 आय वर्गसमूह मे विभक्त किया गया है जो न्यूनतम आय से अधिकतम आय को स्पष्ट करती है सबसे कम आय 2000 रूपया है जिसे छात्राओं जो 29 प्रतिशत एवं छात्र जो 22 प्रतिशत के सरंक्षक/पिता प्राप्त करते है 5000 रूपया प्रतिमाह प्राप्त करने वाले छात्राओं की संख्या 91जो 45.5 प्रतिशत एवं छात्रों की संख्या 61 जो 30.50 प्रतिशत है। 10000 रूपया प्राप्त करने वाले छात्राओं की संख्या 44 जो 22 प्रतिशत एवं छात्रों की संख्या 55 जो 27.5 प्रतिशत है तथा 20000 रूपया प्रतिमाह प्राप्त करने वालों छात्राओं की संख्या 5 जो 2.5 एवं छात्रो की संख्या 36 जो 18 प्रतिशत है तथा 30000 प्रतिमाह प्राप्त करने वालों छात्राआं की सख्या 2 जो 1 प्रतिशत एव छात्रों का संख्या 4 जो 2 प्रतिशत है।

स्पष्ट होता है कि सूचनादाताओं की सरंक्षको मे सबसे अधिक 5000 रूपया प्रतिमाह प्राप्त करने वालों की है एवं सबसे कम संख्या 3000 प्रतिमाह प्राप्त करने वाले सरंक्षको की है।

सारणी क्रमांक 4.2

सूचनादाताओं के माता का व्यवसाय

क.स0	सूचनादाताओ की माताओं की व्यवसाय के प्रति जागरूकता	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	सूचनादाता की मॉ व्यवसाय करती है।	29	14.5	63	31.5
2.	सूचनादाता की मॉ व्यवसाय नही करती है।	171	85.5	137	68.5
	योग	200	100.00	200	100.00

उपरोक्त सारणी क्रमांक 4.2 से प्रतीत होता है कि 29 जो 14.5 प्रतिशत छात्राओं एवं 63 जो 31.50 प्रतिशत छात्रों की मॉ व्यवसाय करती है एवं 171 जो 85.5 प्रतिशत छात्राओं एवं 137 जो 68.5 प्रतिशत छात्रों की मॉ व्यवसाय नही करती है।

स्पष्ट है कि कुल सूचनादाताओं के माताओ मे व्यवसाय करने वालो की अपेक्षा व्यवसाय न करने वालो की संख्या अधिक है ।

सारणी क्रमांक 4.3

सूचनादाताओं के परिवार की मासिक आय

क.स0	सूचनादाताओ की माताओं की व्यवसाय के प्रति जागरूकता	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	0 - 2000 रूपया	48	24.00	43	21.5
2.	201 - 5000रूपया	77	38.5	66	33.00
3.	5001 - 10,000 रूप्या	61	30.5	49	24.50

4.	10,001- 20,000 रूप्या	12	6.00	34	27.00
5.	20,001 - 30,000 रूपया	2	1.00	8	4.00
6.	3,001 - 40,000 रूपया	0	0.00	0	0.00
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी क्रमांक 4.1 की तरह ही इस सारणी को बाटा गया है ।इस सारणी क्रमांक 4.3 से स्पष्ट है कि सूचनादाताओं के परिवार की मासिक आय अधिकतम 30,000 सं0 न्यूनतम 2000 है। जिसमें से सर्वाधिक 77 जो 38.5 प्रतिशत छात्राओं एवं 66 जो 33 प्रतिशत छात्रो की संख्या 5000 रूपया प्राॅप्त कर रहे परिवारो की है जबकि 10,000 रूपया श्रेणी मे छात्राओं की अपेक्षा छात्रो की संख्या अधिक है 20000 रूपया मासिक आय की श्रेणी मे छात्राओं की 12 जो 6 प्रतिशत एवं छात्रो की 34 जो 7 प्रतिशत है जबकि 30,000 से 40000 रूपया प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं की संख्या शून्य है।

सारणी क्रमांक 4.4
सूचनादाताओं की वैवाहिक स्थिति

क.स0	सूचनादाताओ की माताओं की व्यवसाय के प्रति जागरूकता	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	विवाहित	8	4.00	49	24.50
2.	अविवाहित	192	96.00	151	75.50
	योग	200	100.00	200	100.0

सारणी क्रमांक 4.4 स्पष्ट होता है, कि विवाहित सूचनादाताओं की अपेक्षा अविवाहित सूचनादाताओं की संख्या अधिक है। अर्थात 8 जो 4 प्रतिशत छात्रायें

49 जो 24.50 प्रतिशत छात्र विवाहित है तथा 192 जो 96 प्रतिशत छात्रायें 151 जो 75.50 प्रतिशत छात्र अविवहित है ।

अत: स्पष्ट होता है कि विवाहितो में छात्राओ की अपेक्षा छात्रो की संख्या अधिक तथा अविवाहितो मे छात्रो की अपेक्षा छात्राओं की संख्या अधिक है।

सारणी क्रमांक 4.5

सूचनादाताओ की वैवाहिक आयु

क.स0	सूचनादाताओ की माताओं की व्यवसाय के प्रति जागरूकता	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	19 – से 22 वर्ष	37	18.50	32	16.00
2.	23 – से 25 वर्ष	105	52.50	52	26.00
3.	20 – से 18 वर्ष	40	20.00	64	32.00
4.	29 – से 30 वर्ष	17	8.50	28	14.00
5.	31 – से 35 वर्ष	1	050	20	10.00
6.	36 – से ऊपर	0	0.00	4	2.00
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी कमांक 4.5 से सूचनादाताओ ने स्वयं की विवाह की आयु को निर्धारित किया है जिसे स्पष्ट करने के लिए 6 आयु वर्ग समूह मे विभक्त किया है। 19 वर्ष से 22 के बीच के छात्राओं की 37 जो 18.5 एवं छात्रो की 32 जो 16 प्रतिशत है 23 वर्ष से 25 वर्ष तक विवाह की आयु वाली छात्राओं की संख्या 105 प्रतिशत है। 26 से 28 वर्ष के वीच विवाह रचाने वाले छात्राओं की संख्या 40 जो 20 प्रतिशत 64 जो 32 प्रतिशत है इसीप्रकार 30 वर्ष तक छात्राएं 17

जो 8.50 प्रतिशत 28 जो 14 प्रतिशत है छात्रा एवं 20 छात्रं ऐसे है जो चाहते है कि उनका विवाह 31 से 35 वर्ष के अन्तर्गत हो किन्तु 36 वर्ष से ऊपर विवाह करने वाले छात्राओं की संख्या शून्य एवं छात्रो की संख्या 4 जो 2 प्रशित है। यह स्पष्ट हो रहा है कि सर्वाधिक 105 जो 52.50 प्रतिशत छात्राये 64 जो 32 प्रतिशत छात्र चाहते है कि उनका विवाह कमशः 23 से 25 वर्ष एवं 26 से 28 वर्ष मे ही इसीप्रकार । जो .50 प्रतिशत छात्रा एवं 4 जो 2 प्रतिशत छात्र वैवाहिक आयु कमशः 31 से 35 वर्ष एवं 36 से ऊपर हों

सारणी क्रमांक 4.6

सूचनादाताओ के विवाह सम्बन्धी निर्णय कौन लेता है

क.स0	सूचनादाताओ के विवाह सम्बन्ध निर्णय	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	स्वयं	31	15.50	75	37.50
2.	माता पिता	150	79.00	80	40.00
3.	पारस्परिक	11	5.50	42	31.00
	योग	200	100.00	200	100.00

उपरोक्त सारणी क्रमांक 4.6 से स्पष्ट होता है कि सूचनादाता छात्र या छात्राओं किसके निर्णय से अपना विवाह नामक संस्था का प्रतिपादन करेगे । इसके लिए चार वर्ग समूह से विभक्त किया गया सर्वप्रथम 31 जो 15.50 छात्रायें एवे 75 जो 37.50 प्रतिशत छात्रो का निर्णय स्वयं पर आधारित है। 158 जो 79 प्रतिशत छात्राये एवं 80 जो 40 प्रतिशत छात्र माता पिता पर 3 जो 1.5 प्रतिशत छात्र सगे सम्बन्धीयो पर तथा 11 जो 5.5 प्रशित छात्रायें एवं 42 जो

21 प्रतिशत छात्रायें पारस्परिक सहमति के आधार पर विवाह का निर्णय करते है। स्पष्ट होता है।कि सबसे अधिक छात्र माता पिता पर एवं सबसे कम छात्र सगे सम्बन्धी के निर्णय पर अपना विवाह सुनिश्चित करना चाहते है जबकि छात्राओं का रूझान सबसे अधिक मातापिता एवं सबसे कम पारस्परिक सहमति के आधार पर विवाह का निर्णय है।

सारणी क्रमांक 4.7

सूचनादाताओ का विवाह किस जाति समूह के होने की सम्भावना है।

क.स0	विवाह हेतु जानकारी	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	अपनी ही जाति मे	194	97.00	187	93.50
2.	अन्तर जातीय	6	3.00	13	6.5
	योग	200	100.00	200	100.00

उपरोक्त सारणी क्रमांक 4.7 से प्रतीत होता है कि सर्वाधिक छात्राए एवं छात्र क्रमशः 194 जो 97 प्रशित एवं 187 छात्राये जो 93.50 प्रतिशत अपनी ही जाति धर्म में विवाह करना चाहते है किन्तु 6 छात्राये जो 3 प्रतिशत एवं 13 छात्र जो 6.50 प्रतिशत मानना है कि शाही किसी भी जाति अर्थात अन्तरजातीय भी की जा सकती है।

सारणी क्रमांक 4.8

सूचनादाताओ का विवाह किस रीति से होता है।

क.स0	विवाह हेतु जानकारी	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	परम्परागत धार्मिक रीति से	193	96.50	181	90.50
2.	कोर्टसिप	5	2.50	11	5.50
3.	अर्न्त धार्मिक एवं अर्न्तजातीय विवाह कोर्ट द्वारा	2	1.00	8	4.00
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी क्रमांक 4.8 से स्पष्ट होता है कि 193 जो 96.50 प्रतिशत छात्राये एवं 181 जो 90.50 प्रतिशत छात्रा का मानना कि विवाह परम्परागत धार्मिक रीति से होना चाहिए तथा 5 छात्राये जो 2.5 प्रतिशत एवं 11 छात्र जो 5.5 प्रतिशत का रूझाान विवाह पूरी तरह विधीक माध्यामो से विवाह सम्पादित कराने से है। इसके अतिरिक्त 2 छात्राये जो 1 प्रतिशत तथा 8 छात्र जो 4 प्रतिशत छात्रों की मान्यताय अर्न्तजातीय एवं अन्तधार्मिक विवाह कोर्ट के द्वारा हो ऐसी मान्यता है। स्पष्ट है कि कुल सूचनादाताओं मे परम्परागत धार्मिक रीति से विवाह करने वाले छात्र छात्राओं की संख्या अधिक है।

सारणी क्रमांक 4.9

सूचनादाता क्या अपने विवाह मे दहेज लेना पसन्द करेंगे ।

क.स0	विवाह हेतु जानकारी	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	नगर	17	8.50	56	28.00
2.	जेवरात	13	6.50	12	6.00
3.	सम्पत्ति	7	3.50	8	4.00
4.	कपडे	24	12.00	7	3.50
5.	अन्यलोगो	10	5.00	6	3.00
6.	दहेज नही लेगे	129	64.50	111	55.50
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी क्रमांक 4.9 जो प्रतीत हो रहा है कुछ 260 सूचनादाता ही दहेज लेना पसन्द कर रहे है जिसके नगद, जेवरात, सम्पत्ति कपडे क्रमशः 17 जो 8.5 जा 6.5 प्रतिशत छात्राये 12 जो 6.0 प्रतिशत छात्र 7 जो 3.5 प्रतिशत छात्राये छात्राये 7 जो 3.5 प्रतिशत छात्र लेना पसन्द कर रहे है। 10 जो 5.00 प्रतिशत छात्राये तथा 6 जो 3 प्रतिशत छात्र ऐसे है जिनका कहना है कि हम दहेज तो लेगे लेकिन उपरोक्त वस्तु न लेकर विभिन्न विशिष्ट दहेज लेना पसन्द करेंगे

तालिका में स्पष्ट हो रहा है कि 129 जो 64.5 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि दहेज लेना अथवा दहेज देना समाज विरोधी कार्य है अतः ऐसी होनी छात्राओ की संख्या अधिक है जो दहेज लेना देना पसन्द नही है साथ ही 111 जो

55.5 प्रतिशत छात्र भी दहेज को समाज विरोधी कृत्य मानते हुये दहेज को अस्वीकार करते है।

सारणी क्रमांक 4.10

सूचनादाताओ मे परिवार नियोजन आवश्यक समझते है।

क.स0	परिवारय नियोजन क्या आवश्यक है।	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	188	94.00	183	91.50
2.	नही	12	6.00	17	8.50
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी क्रमांक 4.10 से स्पष्ट प्रतीत है कि होता है कि वर्तमान युग की मांग परिवार नियोजन की आवश्यकता समझने वाले छात्राओं की संख्या 188जो 94 प्रेतिशत एवं छात्रों की सख्या 183 जो 91.5 प्रतिशत है तथा 12 जो 6 प्रतिशत छात्राये तथा 17 जो 8.5 प्रतिशत छात्र ऐसे हो जो परिवार नियोजन को आवश्यक नही मानते है।

स्पष्ट हो रहा है कि छात्रो की अपेक्षा छात्राये परिवार नियोजन को अधिक आवश्यक मानती है।

सारणी क्रमांक 4.11

सूचनादाताओ के अनुसार परिवार नियोजन आवश्यक न होने का कारण

क. स0	परिवार नियोजन कार्यो की आवश्यक नही है।	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	अधिक बच्चो का होना परिवार का प्रसन्न एवं खुशहाल रूप है।	4	2.00	9	4.50
2.	बच्चे प्रकृति की देन है	8	4.00	8	4.00
	योग	12	6.00	17	8.50

सारणी क्रमांक 4.11 जो स्पष्ट कर रहा है कि सूचनादाता परिवार नियोजन को क्यो आवश्यक नही मानते प्रमुखत: 4 जो 2 प्रतिशत छात्राये एवं 9 जो 4.5 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि अधिक बच्चो का होना परिवारों को समृद्धि प्रदान करती है जिससे परिवार खुशहाल रहता है तथा 8 जो 4 प्रतिशत छात्रो का मानना है कि बच्चे कोई कृतिम वस्तु नही है यह प्रकृति का देन है। अत: परिवार नियोजन पाप है।

तालिका से स्पष्ट है कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रो का यह मानना अधिक है कि परिवार नियोजन आवश्यक नही है क्योकि परिवार का बडा होना परिवार की समृद्धि एवं प्रसन्नता का रूप समझते है।

सारणी क्रमांक 4.12

सूचनादाताओ के अनुसार परिवार नियोजन के आवश्यक होने के कारण

क.स0	परिवार नियोजन आवश्यक होने के कारण	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	बच्चे की उच्चशिक्षा एवं अच्छी परिवेश के लिए	19	9.50	19.50	93.50

2.	जनसंख्या नियन्त्रण हेतु	121	60.50	97	48.50
3.	परिवार के उज्जवल भविष्य के लिए	48	24.00	47	23.50
	योग	188	940.00	183	91.50

सारणी क्रमांक 4.12 से यह कारण स्पष्ट होता है कि परिवार नियोजन आवश्यक क्यो है जिससे से 19 जो 9.5 प्रतिशत छात्राये 39 जो 19.5 प्रतिशत छात्र तथ 121 60.5 प्रतिशत छात्राये 97 जो 48.5 प्रतिशत छात्रो का क्रमश: यह मानना है कि बच्चो की उच्चशिक्षा एवं अच्छी परिवरिश तथा जनसंख्या के नियन्त्रण के लिए परिवार नियोजन आवश्यक है इसके अलावा 48 जो 24.0 प्रतिशत छात्राओं एवं 47 जो 25.5 प्रतिशत छात्रों का मानना है कि परिवार के उज्जवल भविष्य के लिए परिवार नियोजन आवश्यक है।

स्पष्ट है छात्रो की अपेक्षाकृत इस बात पर बहुत अधिक बल दे रही है कि जनसंख्या नियन्त्रण हेतु परिवार नियोजन नितान्त आवश्यक है।

सारणी क्रमांक 4.13

सूचनादाता क्या एक पुत्र का होना आवश्यक मानते है।

क.स0	पुत्र का होना आवश्यक मानते है या नही	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	ळॉ	87	49.50	124	62.50
2.	नही	113	56.50	76	38.00
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी क्रमांक 4.13 से स्पष्ट हो रहा है कि कुल सूचनादाताओं में 87जो 43.50 प्रतिशत छात्राये एवं 124 जो 62 प्रतिशत छात्र यह मानते है कि इस समाज मे एक पुत्र का होना नितान्त आवश्यक है दूसरी ओर 113 जो 56.5 प्रतिशत छात्राये तथा 76 जो 28 प्रतिशत छात्रो का मानना हैकि एक पुत्र का होना आवश्यक नही है उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि इस तथ्य मे छात्र और छात्राओं मे विरोधाभास है क्योकि क्योकि छात्रों की अपेक्षा छात्राये अधिक संख्या मे मानती है कि एक पुत्र का होना कोई आवश्यक नही है जबकि दूसरी ओर छात्र इस बात पर बल देते है कि आज के कठिन समाज मे एक पुत्र का होना नितान्त आवश्यक है।

सारणी क्रमांक 4.14

सूचनादाताओ के अनुसार एक पुत्र का होना आवश्यक (कारण)

क.स0	एक पुत्र होने के कारण	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	वंश बढाने के लिए	51	25.50	72	36.00
2.	परिवारिक उत्तरदायित्व	11	5.50	31	15.50
3.	दहेज लेने हेतु	13	6.50	6	3.00
4.	मोक्ष या अन्तिम संस्कार करने हेतु	12	6.00	15.00	7.50
5.	आवश्यक नही मानते	113	56.50	76	38.00
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी क्रमांक 4.14 से प्रतीत हो रहा है कि जो सूचनादाता एक पुत्र का होना आवश्यक मानते है तो क्या कारण है उनमें से प्रमुख रूप से 51 जो 25.5 प्रतिशत छात्रायें एव 72 जो 36 प्रतिशत छात्रो का मानना है कि वंश आगे बढाने के लिए एक पुत्र का होना आवश्यक है इसी प्रकार परिवारिक उत्तरदयित्व को पूरा करना एवं दहेज लेने हेतु क्रमशः 1 जो 5.5 प्रतिशत छात्राये 31 जो 15.5 प्रशित छात्र एवं 13 जो 6.5 प्रतिशत छात्राये 6से 3.0 प्रतिशत छात्र एवं 13 जो 6.5 प्रतिशत छात्राये 6 जो 3.0 प्रतिशत छात्र एक पुत्र का होना आवश्यक मानते है ।

स्पष्ट है कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रो का अधिक मानना है कि एक पुत्र का होना नितान्त आवश्यक है क्योकि इसमें वंश वृद्धि आधारित है।

सारणी क्रमांक 4.15

सूचनादाताओ के अनुसार एक पुत्र का होना आवश्यक नही है (कारण)

क.स0	एक पुत्र न होने के कारण	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	समानता का अधिकार	26	13.00	37	16.50
2.	परिवारिक उत्तरदायित्व को पूरा न करना	82	41.00	32	16.00
3.	आधुनिक परिवेश मे एक बच्चे को प्राथमिकता देते है।	5	2.50	7	3.50
4.	आवश्यक मानते हैं	87	43.50	124	62.00
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी क्रमांक 4.15 जो स्पष्ट करता है कि सूचनादाताओं के अनुसार एक पुत्र का होना आवश्यक क्यो नही है जिसमें 26 जो 13 प्रतिशत छात्रायें एवं 37 जो 18.5 प्रतिशत छात्रो का मानना है कि पुत्र एवं पुत्री को समान अधिकार प्राप्त होते है परिवारिक उत्तरदायित्व को पूरा न करना एवं आधुनिक परिवेश मे एक बच्चे को प्राथमिकता देना (जनसंख्या रोकने की दृष्टि से) को मानने वालो मे क्रमशः छात्राये 82 जो 41 प्रतिशत छात्र 32 जो 16 प्रेतिशत तथा 5 जो 2.5 प्रतिशत 7 जो 3.5 प्रतिशत है ।

तालिका से स्पष्ट है कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का मानना है कि एक पुत्र का होना आवश्यक नही क्योकि छात्राओं का यह भी मानना है कि आवश्यक नही है कि प्रत्येक पुत्र परिवारिक उत्तरदायित्व को पूरा करता है।

सारणी क्रमांक 4.16

सूचनादाताओ के परिवार का प्रकार

क.स0	परिवार का प्रकार	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	संयुक्त परिवार	32	16.00	57.	28.50
2.	एकांकी परिवार	168	84.00	143	71.50
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी क्रमांक 4.16 से प्रतीत हो रहा है कि प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालयों की छात्र छात्राओं मे राजनैतिक चेतना' मे सूचनादाताओं की एकांकी परिवार की संख्या की सख्या 168 छात्राओं एवं 143 छात्रो की है तथा 32 छात्राओं एवं 57 छात्र क्रमशः16 एवं 28.50 प्रतिशत सूचनादाता सयुंक्त परिवार में निवास करते है।

सारणी क्रमांक 4.17

सूचनादाता निम्न प्रकार के परिवार में रहना पसन्द करेगें।

क.स0	निम्न प्रकार के परिवार मे रहना पसन्द	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	संयुक्त परिवार	113	56.50	97	48.50
2.	एकांकी परिवार	87	43.50	103	51.50
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी कमांक 4.17 से स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध अध्ययन में सूचनादाताओं की सयुंक्त परिवार मे रहने का प्रतिशत अधिक है 113 छात्राये जो56.50 प्रतिशत 97 जो 48.50 प्रतिशत है ऐसे सूचनादाता है जो संयुक्त परिवार मे रहना पसन्द करते है किन्तु 87 छात्राये जो 43.50 प्रतिशत है एवं 103 छात्र जो 57.50 प्रतिशत है उनका मानना है कि एकांकी परिवार मे रहना ज्यादा उचित है।

स्पष्ट है कि अध्ययन के अन्तर्गत सूचनादाता किन्ही कारणो वश एकांकी परिवार मे रहते है किन्तु अत्यधिक मात्रा में सूचनादाता सयुंक्त परिवार मे रहना चाहते है ।

सारणी क्रमांक 4.18

सूचनादाताके पिता/सरंक्षक का व्यवसाय

क.स0	परिवार का प्रकार	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	उद्योगपति/बडा व्यवसाय	3	1.50	5	2.50
2.	आई0ए0स0	–	–	–	–
3.	डाक्टर	17	8.50	9	4.50

4.	इन्जीनियर	8	4.00	6	3.00
5.	वकील	12	6.00	8	4.00
6.	मैनेजर	3	1.00	9	4.50
7.	महाविद्यालय शिक्षक	4	2.00	2	1.00
8.	विद्यालय शिक्षक	29	14.50	21	10.50
9.	क्लर्क/नर्स	31	15.50	46	23.00
10.	छोटा व्यवसाय/दुकान	62	31.00	57	28.50
11.	सेल्समैन	9	4.50	22	11.00
12.	थ्मस्त्री	9	4.50	8	4.00
13	थ्रटायर्ड	13	6.50	7	3.50
14.	श्वेतपोशी व्यवसाय (योग)	197	98.50	195	97.50
	योग	200	100.00	200	100.00

सारणी ए0 क्रमांक 4.18 सूचनादाताओं के पिता/संरक्षक के व्यवसाय को प्रदर्शित कर रही है प्रस्तुत सारणी अध्ययन मे मात्र 3 छात्रा जो 1.50 प्रतिशत है तथा 5 छात्र जो 2.50 प्रतिशत है का बडा व्यवसाय है अर्थात उद्योग पति या फैक्ट्री मालिक के श्रेणी में आते है कुछ सूचनादाताओं के संरक्षक/पिता छोटे व्यवसाय दुकानदारी से सम्बन्धित है ऐसे सूचनादाता की संख्या छात्राओं की 62 जो 31 प्रतिशत एवं 57 जो 28.50 प्रशित है इसके अतिरिक्त सूचनादाताओ के पिता/सरंक्षक डाक्टर इन्जीनियर वकील मैनेजर ,शिक्षक नर्स क्लर्क आदि की भूमिका का निवार्ह कर रहे है।

सारणी क्रमांक 4.19

सूचनादाता के पिता/सरंक्षक की शिक्षा

क.स0	परिवार का प्रकार	छात्राओ की संख्या	प्रतिशत	छात्रो की संख्या	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	22	11.00	18	9.00
2.	पूर्व माध्यम शिक्षा	24	12.00	11	5.50
3.	माध्यमिक शिक्षा	10	5.00	19	9.50
4.	उच्चतर माध्यमिक	18	9.00	28	14.00
5.	स्नातक	52	26.00	47	23.50
6.	परास्नातक	37	18.50	41	20.50
7.	व्यवसायिक	5	2.50	13	6.50
8.	टेक्निकल	6	3.00	7	3.50
9.	विधी	18	9.00	13	6.50
10.	अन्य	8	4.00	3	1.50
11.	कुल शिक्षित	178	89.00	182	97.00
	कुल योग	200	100.00	200	100.00

सारणी कमांक 4.19 से स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय मे छात्र छात्राओं की राजनैतिक चेतना मे सूचना दाताओं के शिक्षित पिता/सरंक्षको की संख्या अधिक है प्राय: ऐसा प्रतीत है कि उच्चशिाक्षा को प्राप्त करने का प्रोत्साहन एक शिक्षित पुरूष कर सकता है। अध्ययन में सूचनादाता के पिता/संरक्षक अधिकतर मात्रा में स्नातक है अर्थात 52 छात्राये जो 26 प्रतिशत तथा 47 छात्र जो 23.50 प्रतिशत है जिनके के पिता/सरंक्षक स्नातक स्तर के शिक्षित है। इसके

अतिरिक्त 22 छात्राये जो 11 प्रतिशत है तथा 18 छात्र जो प्रतिशत ऐसे उत्तर सूचनादाता है जिसके पिता/सरंक्षक अशिक्षित है।

प्रस्तुत अध्याय चतुर्थ मे सूचनादाताओ की परिवारिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि की व्याख्या की गई है आज समाज मे आर्थिक विषमता पाई जाती है इन अलग-अलग आर्थिक दशाओं का प्रभाव क्या राजनीति मे पडता है यह जानने के लिये शोधार्थी ने सूचनादाताओं की आर्थिक पृष्ठ भूमि से सम्बन्धित कुछ प्रश्नो को रखा है। इसके अतिरिक्त दूसरी यह संकल्पना थी कि परिवार का स्तर, रहन सहन परिवारिक आय, विवाह नियोजन, सरंक्षक की शिक्षा इत्यादि से राजनैतिक चेतना पर क्या प्रभाव पडता है। इसके लिये शोधार्थी चेतना पर क्या प्रभाव पडता है। इसके लिये शोधार्थी ने सूचनादाताओं से परिवारिक एवं आर्थिक पृष्ठ भूमि से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जिसमें से प्रमुख रूप मे पाया कि कमशः 5000 रूपये एवं 10000 रूपये आय वाले कमशः 38.00एवं 28.75 प्रतिशत है राजनैतिक चेतना का उदघाटित करने हेतु कुल 87.75 प्रतिशत छात्र/छात्रायें अविवाहित एवं 14.25 छात्र/छात्राये विवाहित है। क्या विवाह मे दहेज-लेना या देना राजनीतिक को प्रभावित करता है यह प्रदर्शित करता है सारणी कमांक 4.9 जिसमें 64.50 छात्राये तथा 55.50 प्रतिशत छात्र दहेज लेना या दहेज लेना पसन्द नही करते अर्थात उक्त छात्र/छात्रा यह जानते है कि दहेज समाज विरोधी एवं कानून विरोधी कार्य है। सारणी कमांक 4.10 से स्पष्ट प्रतीत होता है। कि कुल 92.75 प्रतिशत छात्र छात्राओं को परिवार नियोजन की आवश्यकता तथा 7.25 प्रतिशत छात्र/छात्राओं कि मान्यता है परिवार नियोजन आवश्यक नही है उनमे से 3.25 प्रतिशत उत्तर दाता कहते है कि अधिक बच्चों का होना परिवार का प्रसन्न या सुशहाल रूप है एवं 4 प्रतिशत सूचनादाताओं की मान्यता है कि बच्चे प्रकृति की देन है परिवार

नियोजन एक तरह का पाप है अतः परिवार नियोजन आवश्यक नही है । इस अध्याय मे यह भी स्पष्ट है कि कुल सूचनादाताओं में 22.25 प्रतिशत का संयुक्त तथा 77.75 प्रतिशत छात्र छात्राओं का एकांकी परिवार है।

सारणी कमांक 4.18 से स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के छात्र /छात्राओं की राजनैतिक चेतना मे सूचनादाताओं के शिक्षित पिता/सरंक्षको की संख्याय अधिक है ।

इस अध्याय में सूचनादाताओं से पूछे गये प्रश्नो के द्वारा प्राप्त आकडो के आधार पर छात्र-छात्राओं के राजनैतिक चेतना का मूल्यांकन तथा कारणो का पता लगाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे है।

: अध्याय पंचम :

राजनैतिक चेतना का अध्ययन

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर

राष्ट्रीय स्तर पर

प्रादेशिक स्तर पर

क्षेत्रीय स्तर पर

मीडिया स्तर पर

राजनैतिक चेतना का अध्ययन

(अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर)
(राष्ट्रीय स्तर पर)
(प्रादेशिक स्तर पर)
(क्षेत्रीय स्तर पर)
(मीडिया स्तर पर)

वर्तमान आधुनिक समाज मे जहाँ पर बढती हुयी औद्योगिकीकरण के कारण समाज जटिल होता जा रहा है वही चेतना का महत्व बढता जा रहा है आज संस्थाये परस्पर एक दूसरे से अन्त: क्रिया करते हुये विकसित एवं जटिल होती जा रही है ऐसी स्थिति मे एक व्यक्ति जो कई प्रकार की संस्थायो से सम्बन्धित होता है स्वयं की स्थिति का दूसरो से अपनी तुलना के आधार पर करता है इस चेतना के फलस्वरूप वह अपने सामान्य लोगो से निकटता का अनुभव करता है। उनके बीच या सामूहिक सन्दर्भ मे अपने हितो के लिये सतत प्रयत्नशील रहता है।

यह सर्वमान्य सा हो गया है कि विभिन्न शासन तन्त्रो मे जनतन्त्र ही सबसे अधिक लोकप्रिय शासन तन्त्र है जैसा कि अमरीकी रष्ट्रपति इब्राहिमलिंकन ने कहा था कि ''प्रजातन्त्र का शासन जनता का जनता द्वारा जनता के लिये है जनतन्त्र का मूलभूत विशेषता मे जनसहभागिता सबसे महत्वपूर्ण रही है । जनसहभागिता चेतना पर आश्रित होती है इसीकारण से परिवर्तन की इस प्रक्रिया को अपनाने वाले देश अपने यहां जन संचार पर विशेष बल दे रहे है। जनसंचार से चेतना मे वृद्धि होती है और चेतना सक्रियता को बढाती है इस दृष्टि से वर्तमान समय मे संचार साधनो मे विशेष रूप से वृद्धि हुयी है। भारत जैसे देश मे लोगो मे राजनैतिक चेतना विकसित करने मे विभिन्न दलो, नेताओं के साथ जनसभाओं एवं अन्दोलनो एवं जनसंचार का विशेष महत्व है । विभिन्न राजनैतिक दल अपने

हित पूर्ति के लिए लोगो को अपने पक्ष में करते है सत्ता में आने पर लाभ पहुचातें है जिसमें नागरिको मे सक्रियता बढती है दूसरी ओर सत्ता से विपक्षियो एवं उनके समर्थको की उपेक्षा होने लगती है । परिणामतः कुछ प्रायः राजनीति से विरत होने की चेष्टा करने लगते है सक्रियता या विरत होना राजनैतिक चेतना के परिणाम है। आज व्यक्ति के पास समय का अभाव है मात्र मतदान व्यवहार के समय मे ही उसमें सक्रियता दिखायी पडती है। आज भारत देश मे भी राजनैतिक चेतना का प्रभाव शिक्षा आय, जाति, धर्म, आर्थिक स्तर आदि पर भिन्न-भिन्न रूपो पर दिखायी पड़ती है।

राजनैतिक चेतना :

प्रस्तुत शोध में डा. वी0एन0सेंठ द्वारा पी0एच0डी0 शोध मे अपनाये गये अध्ययन को आधार बनाया गया है अध्ययन मे महाविद्यलयों के छात्र/छात्राओं सूचनादाता के राजनैतिक चेतना का अध्ययन है शोध कर्ता का यह प्रयत्न है। कि चुने हुये सूचनादाताओं मे राजनैतिक चेतना शिक्षा के स्तर से सम्बन्धित है अधिक महत्वपूर्ण ये पता लगाना है कि क्या राजनैतिक चेतना का लिंग से भी कोई सम्बन्ध है क्या पढें लिखे छात्राओ की राजनैतिक चेतना उसी स्तर के पढे लिखे छात्र छात्राओं के बराबर, कम अधिक है । इसी दृष्टिकोण से प्रस्तुत अध्ययन किया गया है भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त 55वर्ष हो गये है और ये विश्व का सबसे बडा प्रजातन्त्र राष्ट्र है अतः ये आवश्यक है कि हमें उच्चशिक्षाओं मे रत छात्र एवं छात्राओं के राजनैतिक दृष्टिकोण का मूल्यांकन क्रिया जाये । इससे हमें यह भी पता लगेगा कि भारत के शिक्षित युवा वर्ग की सोच क्या है।

प्रस्तुत अध्ययन 'महाविद्यालयोा के छात्र छात्राओं में राजनैतिक चेतना' में इस बात का आधार बनाया गया है कि क्या राजनैतिक चेतना शिक्षा या उच्च शिक्षा

से विशेष सम्बन्ध है य नही तथा राजनैतिक चेतना केवल पुरूषो का अधिकार है इस ओर शोध दृष्टिकोण को ध्यान मे रखते हुये प्रस्तुत अध्ययन युवा पीढी के उच्चशिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र/छात्राओं की राजनैतिक चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन है।

धार्मिक समूहो, जातियो, बिरादरियो,नातेदारियो आर्थिक सरंचनाओ और परम्परागत संस्कृतिक मूल्यों तथा समाजिक उन्मेंशो का तथ्यात्मक विश्लेषण करके ही भारतीय राजनींतिक मे दिखाई देने वाले तनावो तथा सफलातओं के समझा जाता है ।

प्रत्येक अर्ध विकसित देश अथवा विकासशील देश के नागरिक का कर्तव्य होता है कि वह अपने देश को विकास के पथ पर आगे लाये तथा सुखसमृद्धि लाने मे अपना योगदान दे। जिसे करने के लिये अपने समाज की सरंचना को भली भांति समझना होगा । राजनैतिक समस्याओं आवश्यकताओ एवं अकांक्षाओं के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करनी होगी । ये सभी कार्य राजनैतिक चिन्तन अथवा राजनैतिक चेतना से ही सम्भव है।

भारत जैसे विकासशील देश मे राजनैतिक चेतना की अत्याधिक महत्ता पाई जाती है जिसका आधार धर्म निपेक्ष एवं समतावादी समाज की दिशा में आगे बढना तथा विकास योजनाओं को सफलतापूर्वक आगे बढाना है ।

प्रत्येक समाज के व्यक्तियों में यहॉ कि समाजिक परिवेश का प्रभाव उनके समाजिक एवं राजनैतिक चेतना पर पडता है इस चेतना के वृद्धि मे सम्पक्र शिक्षा संचार एवं ऐच्छिक प्रयासों का विशेष महत्व होता है । हमने देखा है कि विभिन्न संगठनो एवं संस्थानो के सम्पक्र एवं प्रयासो से विद्यालयों मे अध्ययनरत छात्रों मे भी समाज के प्रति चेतना बढती जा रही है छात्र अब समाजिक स्थितियो

एव समाज मे होने वाले परिवर्तनो को समझने मे सक्षम होते जा रहे है छात्र अब अपने परिवेश मे होने वाले राजनीतिक बदलाव से भी सुपरिचित होने जा रहे है। जनतात्रिंक प्रक्रिया को मजबूत बनाने में राजनीतिक दलो की अहम् भूमिका होती है। सत्ता पर काबिज होने के लिए उन्हे जनसहभागिता की आवश्यकता होती है । यह सहभागिता तभी सम्भव है जब उनमें राजनैतिक चेतना की पर्याप्त मात्रा हो । इस दृष्टि से आज विभिन्न दल अपने कार्यक्रमों की मद्द से न केवल नगर बल्कि ग्रामीण क्षेत्रो मे लोक प्रिय होने की चेष्टा कर रहे हैं ।स्थानीय समाजिक समस्याओं के सन्दर्भ मे विभिन्न दल नागरिको को चैतन्य बनाते हुये अपने राजनैतिक हित की पूर्ति भी करने मे सफल हो रहे है। अत: समाजिक चेतना क्रमश: राजनैतिक चेतना को भी विकसित करता है और चेतना वृद्धि मे सम्पक्र संचार शिक्षा के साथ साथ राजनैतिक दल एवं स्वैच्छिक संगठनो का भी योगदान होता है।

छात्र/छात्राओं मे राजनैतिक चेतना दृष्टि डालने पर पता चलता है कि अब धीरे-धीरे छात्रो मे भी राजनैतिक चेतना का विकास हो रहा है। इसका मुख्य कारण है प्रत्येक महाविद्यालय मे छात्रो द्वारा छात्र नेताओं का चुनाव तथा छात्र नेताओं के द्वारा विभिन्न राजनैतिक दलो मे भागीदार बनकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाना ।

इस प्रकार किसी समूह या समुदाय मे रहने वाले व्यक्ति की चेतना राजनैतिक एवं समाज व्यवस्था के रूप में अपना रूप ग्रहण करती है तब इसे राजनैतिक चेतना कहा जाता है ''व्यक्ति की राजनैतिक चेतना का सम्बन्ध उनके ज्ञानात्मक अभिमुखीकरण से है। जिसके द्वारा राजनैतिक घटनाओं राजनीतिक सांस्कृतिक की समान्य विशेषताओं और राजनैतिक व्यवस्था के आधारभूत अंगो के विषय मे जानकारी रखता है। इस राजनैतिक चेतना के परिणामस्वरूप राजनैतिक

सहभागिता विकसित होती है। ''वर्गचेतना भी राजनैतिक चेतना को विकसित करने में सहायक होती है भारत मे जहां परम्परागत जाति व्यवस्था पर आधारित व्यवस्था क्रमशः संसदात्मक व्यवस्था में परिवर्तित हुयी है एक लम्बे विवाद के पश्चात वर्तमान स्थिति को प्राप्त कर सकी है हमारी वर्तमान राजनैतिक संरचना ऐतिहासिक परिवर्तनो के लम्बे दौर के बाद विभिन्न कारणो के संवेद प्रभाव के परिणाम स्वरूप यहाॅ विकसित हुयी है।

राजनैतिक चेतना का अर्थ -

प्रस्तुत अध्ययन के अनुसार **राजनैतिक चेतना** को यहाॅ **राजनैतिकीकरण** के **समनार्थी** के रूप मे प्रयोग किया गया है।

राजनैतिक करण की परिभाषा **डोनिएल गोल्डरिच के द्वारा** (1968) मे परिभाषा की गयी है।

''एक व्यक्तिगत चेतना मे योगदान और संसार की राजनीतिक तथा सरकार मे सम्बद्ध के रूप मे की गयी है।

Denial gold rich (1968) "As a continulm of individual awareness and involvement in the word of politics and government.

"The term politicisation refer to the awareness and activities among the underpriviledged sections to use political means for off setting the asymmetrical relations".

राजनैतिकरण दो क्षेत्रो मे सम्बद्ध होता है।

1. सरकार की निरन्तर चेतना तथा अपने जीवन की योग्यता का प्रदर्शन ।

2- राजनीति के क्रियाशीलता में व्यवहारिक क्रिया कलाप ।

राजनीति भूमिका निरन्तर क्रियाहीनता असम्बद्धता तथा क्रियाशीलता श्रेष्ठता से सम्बद्ध योगदान के रूप मे हो सकती है इसीलिये Daniel Goldrich (1968) ने राजनीति को दो महत्वपूर्ण क्षेत्रो मे बांटा है जैसे राजनैतिक चेतना तथा राजनैतिक सहभागिता ।

राजनीति की सहभागिता जो राजनीतिकरण की विधि का दूसरा श्रेष्ठ है वह राजनीति क्रियाशीलता मे उत्तर दायित्वों से सम्बद्ध है। **डाउसे और ह्युज** के अनुसार (1972:290) राजनैतिक सहभागिता की परिभाषा करते है। ''वे इच्छापूर्ण कार्य जिनके द्वारा समाज के सदस्य प्रशासको के चयन मे योगदान करते है। और प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से जनता (समाज) नीति के निर्माण मे सहयोग देते है।''

Dowse and Hughes (1972 :290)" define political participation as those Voluantry activities by which member of a society share in the selection of rulers and directly or indirectly in the formation of public policy".

चूकि राजनैतिक क्रियाहीनता से श्रेष्ठ क्रियाशीलता हो सकती है Milbraths (1965) का राजनैतिक वर्गीकरण अधिक उचित प्रतीत होता है उस उसमे तीन प्रकार के राजनैतिक योगदान का उल्लेख किया है जैसे ग्रत्यक्ष दर्शक क्रियाये परिवर्तन क्रियाये दमन क्रियाये । प्रत्यक्ष क्रियाओ मे राजनैतिक क्रिया निपूर्ण कार्य शामिल किया जाता है इसमे निम्नतम स्तर के कार्य जैसे प्रतीक अथवा चिन्ह पहनना आदि। परिवर्तन कार्य में श्रेष्ठ प्रकार के राजनैतिक कार्य जैसे राजनैतिक सभाओं मे शामिल होना अथवा क्षणिक योगदान के लिये रैलियों मे सहयोग करना अथवा जन समान्य अधिकारी से सम्पर्क या राजनैतिक नेता से सम्पर्क स्थापित करना आदि। दमन क्रियाओं मे श्रेष्ठ माला के योगदान शामिल है जैसे कि एक सदस्य का नियमित रूप से किये जाने वाला कार्य जैसे पार्टी को अपनाना या शामिल होना या चुनाव आदि योगदान देना ।

राजनैतिक चेतना की क्रियाशील परिभाषा :

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य के लिए राजनैतिक करण राजनैतिक चेतना तथा राजनैतिक सहभागिता होना शामिल है तथा इन सब का एक ही उद्देश्य अथवा अर्थ है । इस प्रकार इस अध्ययन में राजनैतिक चेतना उन परिणामों को उजागर करती है। जिसमें महत्वपूर्ण राजनैतिक तत्वो को सपरिणाम चेतना शामिल है जैसे घटनाये और व्यक्तितत्व अथवा राजनैतिक विधि में सहभागिता ।

टाम बाटोमोर (1981) ने कहा है- ''कि राजनैतिक चेतना समान्यतया राजनैतिक क्रियायें दिशा देने में योगदान करती है। प्रारम्भ मे कुछ व्यक्तियों द्वारा ऐसी क्रियाओं को अपनाना दूसरी को भी उसके लिये प्रोत्साहित करता है जिससे के आगे अन्य समाजिंक क्रिया कलापों में भाग लेते रहे। आज जबकि समूचा संसार वृहद माध्यम आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप विकसित होते जा रहे है। **डैनियल लर्नर** (1955) ने कहा कि वृहद संचार के माध्यमों मे वृद्धि से समाजिक व्यवस्था से सभी क्षेत्रो मे व्यापक स्तर पर बढता हुआ महसूस किया जा सकता है।

विद्यार्थी और राजनैतिक चेतना :

Human Herbert & Lane robert (1959) ने अपनी पुस्तक Political sociology मे लिखा है कि युवा अवस्था वह है जिसमे अधिकांश लोग अपने राजनैतिक दृष्टि कोणो को अभिव्यक्ति करते है और अपने सम्पूर्ण जीवन मे युवा अवस्था मे ही विरोध एवं विद्रोह की भावना को अभिव्यक्ति देते है।

किसी भी समाज या देश की युवा पीढ़ी राष्ट्रीयता के निर्माण की मुख्य कड़ी होती है यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि भारत के स्वतन्त्रता की लड़ाई में हजारो युवक छात्र छात्राओं की सक्रिय भागीदार रही स्वतन्त्रता के पश्चात भी भारतीय युवक छात्र छात्राओं का अधिकांश अक्रोश महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों

के प्रति असन्तोष की अभिव्यक्ति रही है विद्यार्थी अन्दोलन राष्ट्रीय महत्व के प्रश्नो के स्थान पर स्थानीय प्रश्नो में उलझा रहा है। दूसरी ओर कुछ बड़े राजनैतिक दलो ने अपने निहित स्वार्थो की पूर्ति के लिऐ विद्यार्थी की सहभागिता सुनिश्चित की है और आज अधिकांश भारत के विश्वविद्यालयो और महाविद्यालयों मे विद्यार्थी संघीय चुनावों मे बडे-बडे दलो का हस्तक्षेप तथा सक्रिय भूमिकायें रहती है। Daniel goldrich (1968) ने राजनैतिक करण को राजनैतिक चेतना तथा राजनैतिक क्रिया सहभागिता के आधार पर परिभाषित किया इनका कहना है कि

"Political Awarness means the awarness of the inhabitants about the acts of the state and its government"

युवा लोगो ने राजनैतिक मे योगदान से अपने समूचे प्रस्तावित राजनैतिक प्रश्नो को आसानी से हल किया है न सिर्फ उन देशो मे जहॉ पर लम्बे अनुवांशिक शासन से मुक्त हुआ है बल्कि उन देशो मे भी जहॉ पर आजादी तथा समृद्धि की एक लम्बी परम्परा चली आ रही है वहॉ युवको ने सामाजिक राजनैतिक परिवर्तनो की मुख्य भूमिका निभायी है।

आधुनिक युग में विद्यार्थी न केवल शिक्षित है बल्कि साथ-साथ वे समाज मे श्रेष्ठ परिवर्तन के भी भागीदार है। छात्र सहभागिता का अधिक विस्तृत क्षेत्र है। जैसे कि मूल्यवान प्रभाव में संस्थाओं में न केवल शिक्षा के क्षेत्रों मे बल्कि पूरी तरह से सामाजिक क्षेत्रो में भी इसीलिए युवाओ के राष्ट्रीय विकास से सम्बन्धित होने पर मानसिक शारीरिक कार्यो की स्वतन्त्रता मे विचार अवश्य किया जाना चाहिये ।

विद्यार्थियों का महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में योगदान निर्माण ढांचा तक रहस्यात्मक श्रेष्ठ समप्रभुता स्थायित्व प्रतीत होता है क्योकि विद्याथियों की सभी समस्याये विश्वविद्यालयो से जुडी है विश्वविद्यालय महाविद्यालय प्रबन्ध समिति मे

छात्र सहभागिता को सामान्यतः विधार्थी आन्दोलन से अलग नही किया जा सकता। एक छात्र आन्दोलन सामाजिक तथा राजनैतिक गतिविधियों का देश या क्षेत्र सम्पूर्ण अंग है। छात्र आन्दोलन के लिए कठिन बात यह है कि इसकी शिक्षा को विश्वविद्यालय तक सीमित नही किया जा सकता। यह सामान्य रूप से समाजिक आर्थिक तथा राजनैतिक ढॉचे के लिये उचित है।

विद्यार्थियो की सहभागिता विश्वविद्यालय अनुदान एक्ट 1956 के विधेयक के प्रभावों के सुधारो के माध्यम से प्रस्तुत होना चाहिये क्योकि दूसरा कोई तरीका नही है जिससे यूनियन Parliament इस मामले को वैधानिक साबित हो चुके है। छात्रो के शैक्षिक सस्थाओं पर निर्णय की शक्ति को लेकर उनकी भूमिका इसमें बढ़ाये जाने की मांग चल रही है अथवा दूसरे शब्दो में महाविद्यालय विश्वविद्यालयो मे प्रजातन्त्र की व्यवस्था की मांग चल रही है विधेयक छात्रो की विश्वविद्यालयों मे अनेक प्रशासन और शैक्षिक सहभागिता से सम्बन्धित है छात्र शक्ति और छात्र सहभागिता सम्बन्धी विधेयक का क्षेत्र पूरी तरह से स्पष्ट है छात्र शक्ति को सभी महाविद्यालयो एवं विश्वविद्यालयो मे छात्र एकता के माध्यम से निश्चित रूप से मान्यता मिलना चाहिये। इसलिए जब हम छात्र सहभागिता पर बात करते है तब हम मूलरूप से इस तत्व को भी स्वीकार करते है कि शैक्षिक सस्था के युवा सदस्य उस समुदाय में अद्वितीय भूमिका निभाते हैं और इस अद्धितीय भूमिका को इनकी सभी कठिनाइयो के साथ स्वीकार किया जा सकता है जिससे की समुदाय का जीवन समृद्ध हो जाये ।

युवा क्रान्तिकारी शक्ति के प्रतीक के रूप में जैसा कि छात्र जानते है वे शताब्दी की राजनैतिक सक्रियता के स्रोत रहे है। आक्रामक छात्र आन्दोलनो का उभरना इस शताब्दी के अर्न्तरार्द्ध के दशको की नई तथा नाटकीय घटना रही है।

ऐसी सरकारो की लम्बी सूची है जिनका पतन छात्र आन्दोलनो के माध्यम से हुआ है। 1960 में जापान तथा 1960 मे ही साउथ कोरिया (सिग्मनरी) और 1964 बोलविया (सुकर्ण) आदि प्रमुख देश है जहॉ सत्ता परिवर्तन छात्र आन्दोलन के माध्यम से हुआ है।

राजनैतिक पैमाना :

प्रस्तुत शोध में डा0 वी0 एन0 सेठ के द्वारा पी0 एच0डी0 शोध में अपनाये गये राजनैतिककरण के पैमाने को आधार बनाया गया है जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि राजनैतिककरण मे दो प्रमुख तत्व है।

पहला राजनैतिक चेतना दूसरा राजनैतिकीकरण से सहभागिता विद्यार्थी मे राजनैतिक चेतना के मापन हेतु निम्न राजनैतिक करण पैमाने बनाये गये है।

1. अन्तर्राष्ट्रीय चेतना पैमाना
2. राष्ट्रीय चेतना पैमाना
3. प्रादेशिक चेतना पैमाना
4. क्षेत्रीय चेतना पैमाना
5. मीडिया चेतना पैमाना

उपर्युक्त पॉच तरह की चेतना पैमाना का आधार एक साक्षात्कार अनुसूची का है सर्वप्रथम साक्षात्कार अनुसूची तैयार की जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय प्रादेशिक एवं क्षेत्रीय स्तर की राजनीति से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये है। इन प्रश्नो को सूचनादाता के जवाब में राजनैतिक चेतना का मापना सुनिश्चित किया गया है। 8 महाविद्यालय के विभिन्न जाति धर्म वर्ग से सम्बन्धित छात्र /छात्राओं से राजनैतिक चेतना से सम्बन्धित पैमाना को तीन श्रेणियो मे बांटा गया है। उच्च्व, मध्यम, निम्न ।

अन्तर्राष्ट्रीय चेतना पैमाना :

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनैतिक चेतना को जानने हेतु छः (6) प्रश्न सुनिश्चित किये गये है जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्र संघ सचिव का नाम, विश्व के प्रमुख समाजवादी राष्ट्रो के नाम, ब्रिटेन की राजकुमारी डायना का विवाह किसके साथ हुआ । ईराक ईरान के बीच युद्ध कब शुरू हुआ आदि ।

सूचनादाताओं से प्राप्त सभी सूचनाये Scored (आकिंक) है गलत सूचना या सूचना न देने पर शून्य (0) एवं एक सही उत्तर पर स्कोर एक (1) तथा दो सही उत्तर देने पर स्कोर दो (2), एवं तीन सही उत्तर प्राप्त होने पर तीन (3) सुनिश्चित किया गया है । जहॉ पर तीन से अधिक उत्तरो की सम्भावना है वहां उसी स्कोर को भी बढ़ाया गया है।

Details of Scoring pattern -

1. गलत उत्तर /उत्तर न दे पाने पर	0(शून्य)
2. एक सही उत्तर दे पाने पर	1(एक)
3. दो सही उत्तर दे पाने पर	2(दो)
4. तीन सही उत्तर दे पाने पर	3(तीन)

अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक चेतना मे पूछे गये प्रश्नो मे कम से कम पाया गया स्कोर की संख्या एक है और कुछ ऐसे प्रश्न है जिनका स्कोर 4 या 6 भी है किन्तु अधिकतर प्रश्न एक से प्रारम्भ होकर तीन स्कोर मे समाप्त हो जाते है अन्र्राष्ट्रीय चेतना के अन्तर्गत कुल 6 प्रश्नो का स्कोर 13 है अतः सूचनादाताओ को कुल स्कोर 0 से 13 है।

राष्ट्रीय राजनैतिकीकरण पैमाना :

राष्ट्रीय स्तर मे सूचनादाता की राजनैतिक चेतना को जानने के लिये कुल 8 (आठ) प्रश्न पूछे गये है। जिसमें से प्रमुख भारत की तीन राष्ट्रीयकृत पर्टियो के नाम भारत मे दोबार बने अन्तरिम प्रधानमंत्री का नाम वर्तमान राष्ट्रपति का नाम संविधान समिति के अध्यक्ष का नाम मुख्य चुनाव आयुक्त का नाम आदि है।

राष्ट्रीय स्तर में सभी सूचनाये आकिंक है एक सही उत्तर मे एक (1) तथा दो सही उत्तर मे दो (02) तीन सही उत्तर (03) अंक -दिये गये है उत्तर न दे पाने की दशा मे या गलत उत्तर देने पर शून्य (0)अंक दिया गया है।

राष्ट्रीय राजनैतिक चेतना मे पूछे गये आठ (8) प्रश्नो मे कम से कम दिय गये अंकों की सख्या एक (1) तथा तथा अधिक से अधिक संख्याय तीन (03) है राष्ट्रीय चेतना के अर्न्तगत कुल आठ (8) प्रश्नो मे समाहित किया गया है और इस आठ प्रश्नो के अर्न्तगत कुल अधिकतम स्कोर बारह (12) है।

अतः राष्ट्रीय स्तर मे सूचनादाता का कुल स्कोर 0 से 12 है

प्रादेशिक राजनैतिक करण का पैमाना :

प्रादेशिक स्तर में सूचनादाता की राजनैतिक चेतना को जानने के लिये कुल दस (10) प्रश्नो का निर्माण कर सूचनाये संकलित की गयी है। जिसमें से प्रमुख प्रश्न प्रदेश के मुख्यमंत्री का नाम उच्च-न्यायालय के न्यायधीश का नाम पिछले आम चुनाव कब हुये उत्तर प्रदेश में कुल कितनी विधान सभाये है। अयोध्या प्रकरण के समय किस पार्टी की सरकार थी, क्षेत्रीय विधायक एवं सांसद का नाम पता, प्रदेश में कुल कितने विश्वविद्यालय स्थापित हैं, आदि ।

प्रादेशिक स्तर मे प्राप्त सभी महत्वपूर्ण सूचनाये आकिंक है इस सारणी में अधिकतर प्रश्न एक सही उत्तर वाले जिसमें एक अंक की प्राप्ति होती है तथा उत्तर न दे पाने पर या गलत उत्तर देने पर 0 शून्य अंक दिया गया है।

प्रादेशिक राजनैतिक चेतना में पूछे गये दस (10) प्रश्नो मे कम से कम एक (1) अधिक से अधिक तीन (03) अंक सुनिश्चित किये गये है। प्रादेशिक चेतना के अन्तर्गत कुल दस (10) प्रश्न पूछे गये है और इन दस प्रश्नो के जवाब मे अधिकतर स्कोर चौदह (14) है अतः प्रादेशिक स्तर मे सूचनादाता का कुल स्कोर 0 से 14 है।

क्षेत्रीय राजनैतिकीकरण का पैमाना

यह पैमाना क्षेत्रीय स्तर मे सूचनादाताओं की राजनैतिक चेतना को जानने के लिये तैयार किया गया है । इसमें कुल 10 प्रश्नो का निर्माण का सूचनाये संकलित की गई है इस पैमाना के प्रमुख प्रश्न नगरपालिका अध्ययन का नाम जिलाधिकारी, जिलाजज जिला शिक्षा अधिकारी का नाम एवं किसी राजनैतिक दल से सम्बन्ध रखते है महाविद्यालयय के प्राचार्य छात्र संध अध्यक्ष, सचिव नाम आदि हैं।

क्षेत्रीय स्तर मे पूछे गये कुल दस (10) प्रश्नो में अधिकतम 14 तथा न्यूनतम स्कोर शून्य (0) है । इस प्रकार क्षेत्रीय स्तर में सूचनादाता के राजनैतिककरण का कुल स्कोर 0 से 14 है।

मीडिया राजनैतिक करण का पैमाना :

मीडिया राजनैतिक करण का पैमाना सूचनादाताओं के अन्दर राजनैतिक ज्ञान, विज्ञान का जानने हेतु तैयार किया गया है इसमें कुल मीडिया से सम्बन्धित प्रश्नो

का रखा गया है। मीडिया के कुल चार प्रश्नो के सही उत्तर बताने पर अधिकतम 11 अंक निश्चित किये गये है। इस प्रकार मीडिया स्तर के सूचनादाता के राजनैतिकरण का कुल स्कोर 0 से 11 सुनिश्चित किया गया है।

सयुंक्त रानैतिककरण पैमाना का कुल अंक तालिका

क्र.स.	पैमाना के पद	प्रश्न	अंक
1.	अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिकीकरण का पैमाना	6	13
2.	राष्ट्रीय राजनैतिकीकरण का पैमाना	8	12
3.	प्रादेशिक राजनैतिकीकरण का पैमाना	10	14
4.	क्षेत्रीय राजनैतिककरण का पैमाना	10	14
5.	मीडिया राजनैतिककरण का पैमाना	4	11
	कुलयोग	38	64

प्रस्तुत अध्ययन के पॉचो पैमानो मे प्रश्नो के उत्तर सांख्यिकीय आधार पर निर्मित दिये गये और इनमें आर्थोडिक मीन निकाले गये। हमने निम्नलिखित प्रकार से श्रेणियॉ निर्धारित की है।

1. निम्न श्रेणी 0 - 21
2. माध्यम श्रेणी 22 - 43
3. उच्च्व श्रेणी 44 - 64

सारणी अंक 5.1

सूचनादाताओं के जाति के आधार पर अन्र्तराष्ट्रीय चेतना मे राजनैतिकीकरण उत्तरो के प्राप्त अंक

		छात्रा					छात्र				
क्र.स	राजनैतिक करण का मद	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत
1	अर्न्राष्ट्रीय चेतना	686	507	105	1298	16.71	952	304	120	1376	19.85
	प्राप्तांक का योग	686	507	105	1298	16.71	952	304	120	1376	19.85

सूचनादाताओ की अन्तर्राष्ट्रीय स्तंर पर राजनैतिक चेतना का अध्ययन करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय के सचिव का नाम समाजवादी राष्ट्रों का नाम, ब्रिटेन की राजकुमारी के विवाह के सम्बन्ध में ईराक, ईरान का युद्ध कब हुआ था आदि प्रमुख प्रश्न पूछे गये थे। कुल 6 प्रश्न के एवं प्रत्येक कुछ प्रश्नो के पूर्व सही उत्तरो को 3 एवं कुछ प्रश्नो को 2 अंक दिये गये थे गलत उत्तर को (शून्य) दिया गया था इस प्रकार कुल सही उत्तर देने वालो का अधिकतम अंक 13 प्राप्त हो सकते है। यह अन्तर्राट्रीय चेतना सारिणी संख्या 5.1 दिखाई गई है छात्र एवं छात्राओं को उच्च जाति पिछडा वर्ग एवं अनुसूचित जाति समूहो मे विभाजित किया गया है। सारणी के अनुसार प्रतीत होता है कि छात्रो की अपेक्षा छात्राओं में राजनैतिक चेतना कम है। यदि जातिगत आधार पर भी देखते है तो उच्चजाति के छात्रो मे राजनैतिक चेतना अधिक पायी जाती है छात्राओं में राजनैतिक चेतना कम होने के कई कारण हो सकते है चूकि प्रस्तुत अध्ययन पिछडे क्षेत्र से सम्बन्धित है स्वाभावत: ऐसा पाया जाता है कि यदि रहन सहन का स्तर पिछडा हो तो हो सकता है कि चेतना भी पिछडी हो। अत: स्पष्ट है कि छात्राओं मे राजनैतिक चेतना कम है

अर्थात छात्र सूचनादाताओं मे अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक चेतना 1376 अर्थात 19.85 प्रतिशत है जबकि छात्राओं मे अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक चेतना 1298 जो कि 16.71 प्रतिशत है।

सारणी अंक 5.2

सूचनादाताओं के जाति समूह के आधार पर राष्ट्रीय चेतना मे राजनैतिकी काव्य उत्तरो के प्राप्त अंक

	छात्रा						छात्र				
क्र.स	राजनैतिक करण का मद	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत
1	राष्ट्रीय चेतना	825	251	120	1196	17.26	807	473	204	1487	19.14
	प्राप्तांक का योग	825	251	120	1196	17.26	807	473	204	1487	19.14

प्रस्तुत अध्ययन 'महाविद्यालय के छात्र छात्राओं मे राजनैतिक चेतना मे राजनैतिक चेतना जानने के लिये राष्ट्रीय चेतनाय से सम्बन्धित कुल आठ प्रश्नो का निर्माण किया गया है । जिसमें ये सभी उत्तर देने मे 12 नवम्बर सुनिश्चित किये गये है इनमें से प्रमुख बोफोर्स तोप काण्ड से सम्बन्धित नेता का नाम राष्ट्रीयकृत पार्टीयो के नाम अन्तरिम प्रधान मंत्री का नाम, राष्ट्रपति, सविधान समिति के अध्यक्ष का नाम, चुनाव आयुक्त का नाम, राजनैतिक समस्योओं के बारे में पूछा गया है। सारणी प्रदर्शित करती है। राष्ट्रीय चेतना छात्राओं की अपेक्षा छात्रो मे अधिक है। सारणी के अनुसार जातिगत आधार पर उच्चवर्ग के छात्र एवं छात्राओं मे राष्ट्रीय स्तर की चेतना लगभग बराबर है उसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि सूचनादाता किसी भी जाति, धर्म, वर्ग,लिंग स्तर का हो सकता राष्ट्र से प्रेम स्वाभाविक है अत: वह राष्ट्र के प्रति जागरूक रहता है अत: अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के अपेक्षाकृत राष्ट्रीय राजनैतिक चेतना अधिक होना स्वाभाविक है।

सारणी अंक 5.3

सूचनादाताओं में प्रादेशिक चेतना जातिगत आधार पर राजनैतिकी उत्तरो के प्राप्त अंक

		छात्रा					छात्र				
क्र.स	राजनैतिककरण का मद	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत
1	प्रादेशिक चेतना	675	214	168	1057	15.25	874	579	234	1687	21.72
	प्राप्तांक का योग	675	214	168	1057	15.25	874	579	234	1687	21.72

सारणी क्रमांक 5.3 सूचनादाताओ के प्रादेशिक चेतना को स्पष्ट करती है प्रादेशिक राजनैतिक चेतना के अन्तर्गत कुल 10 प्रश्न निश्चित किये गये है जो सूचनादाता 10 प्रश्नो के सही जवाब उपलब्ध कराता है उसे 14 नम्बर देने का प्रावधान है। पूछे गये प्रश्नो मे प्रमुख प्रश्न वर्तमान मुख्यमंत्री का नाम, मुख्य न्यायाधीश का नाम, पिछले आम चुनाव कब हुये थे, प्रदेश मे कुल कितने विश्व विधायलय है क्षेत्रीय लोक सभा सदस्य का नाम, पार्ट्री का नाम निवास स्थान क्षेत्रीय विधान सभा सदस्य का नाम, पार्टी का नाम, निवास स्थान, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के कुलपति का नाम आदि सारणी से प्रतीत होता है कि कुल पूछे गये प्रश्नो के आधार पर प्रदर्शित राजनैतिक चेतना छात्रो मे अधिक है। यदि हम जातिगत आधार पर देखते है पिछडी वर्ग की जातियों मे प्रदेशिक चेतना लगभग सम दिखाई पड़ती है ।

सारणी अंक 5.4

सूचनादाताओं मे क्षेत्रीयी चेतना का जातिगत आधार पर राजनैतिकीकरण उत्तरो के प्राप्त अंक

	छात्रा						छात्र				
क्र.स	राजनैतिक करण का मद	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत
1	क्षेत्रीय चेतना	1106	403	187	1696	24.47	830	648	288	1766	22.74
	प्राप्तांक का योग	1106	403	187	1696	24.47	830	648	288	1766	22.74

प्रस्तुत अध्ययन को दृष्टिकोण रखते हुये सारणी क्रमांक 5.4 सूचनादाताओ मे क्षेत्रीय राजनैतिक चेतना को स्पष्ट करती है। क्षेत्रीय राजनैतिक चेतना के लिये कुल 10 प्रश्नो को बनाकर साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा पूछा गया है ।जो सूचनादाता पूछें गये 10 प्रश्नों का उत्तर सही देता है उसके लिये 14 अंक सुनिश्चित किये गये है या फिर प्राप्त उत्तरो के आधार पर अंक दिये गये है। पूछे गये प्रमुख प्रश्न सम्न्धित महाविद्यालय के प्राचार्य का नाम, महाविद्यालय के अध्यक्ष महामन्त्री उपाध्यक्ष का नाम, स्थानीय नगर पालिका अध्यक्ष का नाम सम्बन्धित जिलाधिकारी जिलाजज, जिला शिक्षाधिकारी का नाम क्या सूचनादता किसी दल से सम्बन्धित है या नही आदि है।

सारणी से स्पष्ट प्रतीत होता है कि क्षेत्रीय चेतना छात्र और छात्राओं के लगभग बराबर है। चूंकि क्षेत्रीयता का भाव प्रत्येक क्षेत्रवासी के अन्दर होता है इसके अलावा जब एक निश्चित क्षेत्र हो जाता है तो वहॉ के रहने वाले लोग एक दूसरे से निकटता एवं सक्रीयता के आधार पर जानकारी रखते है यही कारण

है कि क्षेत्रीय चेतना छात्र एवं छात्राओं सूचनादाताओ के लगभग बराबर दिखाई जा रही है।

सारणी अंक 5.5

सूचनादाताओं मे मीडिया चेतना का जातिगत आधार पर राजनैतिकीकरण उत्तरो के प्राप्त अंक

		छात्रा					छात्र				
क्र.स	राजनैतिक करण का मद	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत	उच्च जाति	पिछड़ी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत
1	मीडिया चेतना	1102	365	187	1604	23.14	791	507	230	1528	19.67
	प्राप्तांक का योग	1102	365	187	1604	23.14	791	507	230	1528	19.67

समाज के विकास के पथ प्रदर्शन से मीडिया का अभूतपूर्व योगदान है। समाज के किसी भी क्षेत्र मे यदि जानकारी प्राप्त करनी है तो उसका आधार मात्र मीडिया ही हो सकता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के छात्र छात्राओं मे राजनैतिक चेतना में मीडिया का क्या प्रभाव है इसके लिये मीडिया राजनैतिक पैमाने का निमार्ण किया गया जिसमें से प्रमुख क्या आप अखबार पढते है, आप अखबार मे क्या -क्या आप दूरदर्शन टी0वी0 देखते है आप टी0वी0 मे- क्या-क्या देखते है प्रश्न है।

सारणी को देखने से प्रतीत होता है कि मीडिया का प्रभाव प्रत्येक जाति, वर्ग, लिंग के लोगो को है। अर्थात अखबार और टेलीवीजन प्रत्येक व्यक्ति देखता है वे बात अलग है कि छात्राओं की अपेक्षाकृत छात्र कम प्रभावित हैं अर्थात

छात्रो मे मीडिया राजनैतिक चेतना कम और छात्राओं में मीडिया राजनैतिक चेतना अधिक पायी जाती है। इसके कई कारण हो सकते है हो सकता है कि प्रत्येक छात्र अखबार पढना चाहता हो या टी.वी0 देखना चाहता हो किन्तु अपने उद्देश्य (पढाई) को पूरा करने के पीछे समय न मिलता हो इसके अलावा तमाम ऐसे कारण हो सकते है जिसके आधार पर छात्रो मे मीडिया राजनैतिक चेतना कम पाई जाती है।

सारणी अंक 5.6

सूचनादाताओं जातिगत आधार पर सम्पूर्ण राजनैतिकीकरण के उत्तरो के प्राप्तांक

		छात्रा					छात्र				
क्र.स	राजनैतिक करण का मत	उच्चजात	पिछडी जाति	अनु. जाति	योग	माध्य	उच्च जाति	पिछडी जाति	अनु. जाति	योग	माध्य
1.	अन्तर्राट्रीय चेतना	666	507	105	1298	6.49	952	304	120	1370	6.86
2.	राष्ट्रीय चेतना	825	251	120	1196	5.98	807	473	204	1467	7.44
3.	प्रादेशिक चेतना	675	214	168	1057	5.28	874	579	234	1687	8.44
4.	क्षेत्रीय चेतना	1106	403	187	1196	8.48	830	648	288	1766	883
5.	मीडिया चेतना	102	365	187	1604	8.02	791	507	230	1528	7.63
	राजनैतिक करण अंको का योग	4394	1740	767	6851	34.25	4254	2511	1076	7844	39.20
	राजनैतिक करण के माध्यम	34.06	35.52	34.87	34.25	–	42.54	36.39	34.70	39.20	
	सूचनादाताओं की सख्या	129	49	22	200	–	100	69	31	200	

प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालयो के छात्र छात्राओं मे राजनैतिक चेतना का उद्देश्य महाविद्यालय के छात्र /छात्राओं मे राजनैतिक चेतना के स्तर का मापन छात्र छात्राओं मे जातिगत आधार पर तुलनात्मक अध्ययन चेतना आदि था।

प्रस्तुति सारणी क्रमांक 5.6 लगभग सभी उद्देश्यों की पूरी करती है इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय प्रादेशिक क्षेत्रीय स्तर के राजनीति_ से सम्बन्धित कुछ प्रश्न साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा पूछने हेतु बनाये गये थे। जिसकी अलग अलग प्रश्न के अनुसार स्कोरिंक की गयी थी । प्रस्तुत सारणी से प्रतीत होता है कि जाति , लिंग आय,शिक्षा, संकाय आदि राजनैतिक चेतना को प्रभावित करते है । सामाजिक पृष्ठभूमि भी राजनैतिक चेतना को प्रभावित करते है प्रायः देखा गया है कि स्नातक स्तर के छात्र छात्राओं मे राजनैतिक चेतना कम और परास्नातक स्तर के छात्र छात्राओं में राजनैतिक चेतना अधिक पायी जाती है जबकि राजनैतिक सहभागिता एक दम विलोम है अर्थात स्नातक स्तर के छात्र छात्राओं मे सहभागिता अधिक तथा परास्नातक स्तर के छात्र छात्राओं मे सहभागिता कम पायी जाती है सारणी के अनुसार कुल 200 छात्राओं से साक्षात्कार के दौरान पूछो प्रश्नो की स्कोरिंग 6851 थी जबकि छात्रो की 7844 अर्थात छात्राओं की अपेक्षा छात्रो की राजनीतिक चेतना अधिक है।

सारणी क्रमांक 5.7

सूचनादाताओं मे राजनैतिक चेतना का स्तर

		छात्रा					छात्र						
क्र.स.	राजनैतिक करण का स्तर	उच्च जाति	पिछडी जाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत	उच्च जाति	पिछड ीजाति	अनु. जाति	योग	प्रतिशत	कुल योग	कुल प्रतिशत
1.	निम्न स्तर (0-20)	5	3	–	8	4.00	1	–	2	3	1.50	11	2.75
2.	मध्यम स्तर (21-42)	97	43	22	162	81.00	69	50	21	140	70.00	302	75.50
3.	उच्च स्तर (43-64)	27	3	–	30	15.00	30	19	08	57	28.50	87	21.75
	योग	129	49	22	200	100.00	100	69	31	200	100.00	400	100

जनैतिकीकरण के पैमाने का स्तर

एक सूचनादाता यदि राजनैतिक करण के सभी प्रश्नो को सही उत्तर मे सर्वाधिक अंक 64 प्राप्त होगे और न्यनतम 0। ये मानते है हुये कि वितरण समान्य है।68.26 प्रतिशत केसेस दो आर्डिनेटके बीच मे होगे ये मध्यिका के दोनो ओर एक स्टर्डड डिवीजन होगे ।अतः हमने कुल 64 अंको को तीन हिस्सों मे विभाजित किया है। निम्न, मध्यम, उच्च । प्रस्तुत अध्ययन'' महाविद्यालयो के छात्र छात्राओं मे राजनैतिक चेतना '' मे शोधकर्ताकी उपकल्पना थी कि छात्राओं की अपेक्षा छात्रो के राजनैतिक चेतना अधिक हो सकती है यह जाति या लिंग के आधार पर भी राजनैतिक चेतना का स्तर सुनिश्चित किया जा सकता है वास्तव मे क्या परिवारिक आर्थिक, सामाजिक पृष्ठ भूमि राजनैतिक चेतना को प्रभावित कर सकती है। आदि बातो का सारणी क्रमांक 5.7 प्रदर्शित करती है यह सारणी राजनैतिक चेतना में राजनैतिक करण के पैमाने का स्तर प्रदर्शित करती है जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से कुल 38 प्रश्न चेतना से सम्बन्धित सूचनादाताओं से पूछे गये और प्राप्त उत्तरो को संकलित कर तीन श्रेणियों मे बांटा गया है निम्न । माध्यम ।उच्च।जिन सूचनादाताओं ने 0 से 20 अंको के उत्तर बताये उन्हे निम्न श्रेणी मे तथा जिन्होने 21 से 42 अंको तक के तक के जवाब दिये उन्हे मध्यम श्रेणी में तथा 43 से 64 अंको तक दिये गये जवाब वाले सूचनादाताओ की उच्च श्रेणी मे रखा गया है इसके अलावा यह सारणी जातिगत आधार अनुसूचित जाति पिछडी जाति उच्चजाति के लोगो को भी आधार बनाया गया ।

सारणी से ज्ञात होता है कि छात्राओं की राजनैतिक चेतना का निम्न स्तर से मध्यम स्तर छात्रो के स्तर से अधिक अच्छा है किन्तु छात्राओं की राजनैतिक चेतना

का उच्च स्तर छात्रों की अपेक्षा बहुत कम है अर्थात छात्रो की राजनैतिक चेतना का उच्च स्तर अच्छा है।

प्रस्तुत अध्याय पंचम मे राजनैतिक चेतना को प्रदर्शित किया गया है इस अध्ययन''महाविद्यालयो के छात्र छात्राओं मे राजनैतिक चेतना'' ये इस बात का आधार बनाया गया है कि क्या राजनैतिक चेतना शिक्षा या उच्चशिक्षा से विशेष सम्बन्ध है या नही तथा क्या राजनैतिक चेतना में केवल पुरूषों का अधिकार है इस ओर शोध दृष्टिकोण को ध्यान मे रखते हुये प्रस्तुत अध्ययन में विवेचना की गयी शोधकर्ता का यह भी प्रयत्न है कि चुने हुये सूचनादाताओ मे राजनैतिक चेतना शिक्षा के स्तर से सम्बन्धित है या लिंग,जाति, धर्म, आय आदि भी प्रभावित करता है। भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुये 55 वर्ष हो गये और ये विश्व का सबसे बडा प्रजातन्त्र राष्ट्र है अतः ये आवश्यक है कि उच्च शिक्षा मे रत छात्र छात्राओं के राजनैतिक दृष्टिकोणो का मूल्यांकन किया जाये ।

प्रस्तुत अध्याय मे राजनैतिक चेतना को राजनैतिकीकरण को समनार्थी के रूप मे प्रयोग किया गया है राजनैतिक करण के बारे डेनिएल गोल्डरिच (1968) ने कहा कि ''एक व्यक्तिगत चेतना में योगदान और संसार की राजनीति तथा सरकार से सम्बद्ध के रूप मे की गयी है।''जबकि राजनैतिक सहभागिता के सन्दर्भ मे डाउजे एवं ह्यूज (1972) मे कहा कि'' वे इच्छापूर्ण कार्य जिनके द्वारा समाज के सदस्य प्रशासको के चयन मे योगदान देते हेतु और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जनता का (समाज) नीति के निर्माण मे सहयोग देते है ।

इस अध्ययन मे छात्र छात्राओ की वास्तविक राजनैतिक चेतना का पता लगाया गया है। अर्थात अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने के लिये एवं जो हमारी उपकल्पनायें थी उन उपकल्पना को सार्थकता सिद्ध करने के लिये अत्यन्त

उपयोगी अध्याय है इसके लिए हमने अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं मीडिया , राजनैतिक सम्बन्धित कुल 38 प्रश्न पूछे जिनका उत्तरय सम्बन्धित महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं से प्राप्त हुआ इसमें न्यूनतम स्कोर 0 एवं अधिकतम स्कोर 64 निश्चित किया गया ।

अंत में उपर्युक्त विवेचना के आधार पर राजनैतिक चेतना का स्पष्ट रूप दिखाई पडता है।

: अध्याय षष्ठ :

निष्कर्ष

सारांश

विश्लेषण

निष्कर्ष

सरांश :

प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के छात्र छात्राओ की राजनैतिक चेतना का समाज शास्त्रीय अध्ययन से सम्बन्धित है उत्तर प्रदेश मे बुन्देलखण्ड आर्थिक दृष्टि कोण से पिछडा क्षेंत्र है तथा प्रस्तुत अध्ययन मे बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कुछ महाविद्यालयो के छात्र-छात्राओं के राजनैतिक चेतना का अध्ययन किया गया है ।

राजनैतिक दलो का उदय तथा एक दल का दूसरे दल मे विलय राजनीतिक सक्रियता मे तेजी आन्दोलन राजनीतिक हिंसा की बढती लहर, विभिन्न वर्गी एवं समूहों मे राजनीतिक बेचैनी, बढती शिक्षा के साथ राजनीतिक जागरूकता दलो एवं नेतृत्व की तीब्र प्रतिस्पर्धा आदि राजनीति के ऐसे अनेक पहलू है जो देश मे बढते राजनीतिकरण के विभिन्न अंग बन गये है। राजनीतिकरण का अभिप्राय एक समूह या एक व्यक्ति का राजनीतिक व्यवस्था के साथ जुडना हैं इसमें व्यक्ति व्यावहारिक रूप से नही वैचारिक रूप से भी राजनैतिक व्यवस्था मे जुडता है इसके द्वारा व्यक्ति का राजनीति से सम्बन्धित अभिवृत्तियों, दृष्टिकोणो, विचारो,एवं व्यवहार तथा क्रिया कलापो मे विकास वृद्धि एवं परिवर्तन होता है । इस प्रकिया कें अर्न्तगत व्यक्ति केवल राजनीति मे शिक्षित एवं प्रशिक्षित ही नही होता साथ ही वह राजनीति को भलीभॉति सीखता विचारो के अनुसार व्यक्तिगत व सामाजिक हितो की पूर्ति के लिये प्रयत्न शील होता है।

भारतीय समाज मे आर्थिक एवं सामाजिक विषमता अन्य साधनो की तुलना मे बहुत अधिक है भौगोलिक एवे प्राकृतिक की दृष्टि से भी यहॉं अनेक विषमतायें

दिखाई देती है। ऊँच नीच एवं जाति के स्तरो पर ही नही मानव समुदाय विभाजित है बल्कि शिक्षित प्रशिक्षित धनवान, निर्धन, नगरीय, ग्रामीण भिन्न भिन्न प्रकार के समूहों मे विभक्त है। भौगोलिक एवं परिस्थिति दृष्टि से नगरीय लोगो का भी विभाजन महानगरीय, नगरीय उपनगरीय एवं कस्बे के रूप मे दिखाई पडता है। दूसरी ओर नगर और ग्राम के रूप मे भी मानव समुदाय विभक्त दिखाई पडता है और यही नही सभ्य और जंगल में बसे हुयें आदिवासी के रूप में भी विभक्त है। राजनीतिक प्रभाव अधिक है तो वहाँ राजनीतिक चेतना भी अधिक दिखाई पडती है इसके विपरीत जहाँ पर विकास की किरण पूर्णतया नही पहुची है, वहां राजनीतिक प्रभावकारिता एवं चेतना अपेक्षाकृत कम दिखाई पडती है।

प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के द्वारा छात्र एवं छात्रओं मे राजनैतिक चेतना का समाजशास्त्रीय अध्ययन करने का प्रयास है।

प्रमुखता अध्ययन के दो प्रमुख उद्देश्य है पहला यह कि विद्यार्थी मे राजनीतिकरण का किस स्तर तक प्रचार महाविद्यालय मे हुआ है। दूसरा यह कि क्या राजनैतिक चेतना का स्तर लिंग, शिक्षा जाति एवं वर्ग से प्रभावित होता है अतः प्रस्तुत अध्ययन में महाविद्यालय द्वारा छात्र एवं छात्राओं के स्नातक एवं परास्नातक विद्यार्थियों का उच्चजाति, पिछडे वर्ग एवं अनुसूचित जातियों का तथा विभिन्न वर्गो के आधार पर अध्ययन किया गया है।

यह अध्ययन आर्थिक रूप से पिछडे क्षेत्र में किया गया है बुन्देलखण्ड उ0प्र0 का आर्थिक दृष्टिकोण से पिछडा क्षेत्र है एवं यह जानने का प्रयास किया गया है कि क्या पिछडे क्षेत्र मे राजनैतिक चेतना कम होती है अथवा अधिक होती है ।

1. महाविद्यालय के विद्यार्थियों में राजनैतिक चेतना के स्तर का मापन ।
2. राजनैतिक चेतना का छात्र एवं छात्राओ का तुलाना अध्ययन ।

3. परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की राजनैतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन ।
4. उच्च जाति पिछडे वर्ग एवं अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों की राजनैतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन
5. राजनैतिक चेतना का संख्यात्मक मापन

शोध प्रश्न :

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को प्रस्तुत करते हुए निम्न शोधय प्रश्न के प्रति उत्तर प्राप्त किये गये है।

1. महाविद्यालय मे राजनैतिक चेतना का स्तर क्या है ?
2. क्या महाविद्यालय के छात्रों की अपेक्षा छात्राओं मे राजनैतिक चेतना अधिक है?
3. क्या राजनैतिक चेतना पर भी निर्भर करती है ? क्या राजनैतिक चेतना मे उच्च जाति पिछडा वर्ग अनुसूचित जाति वर्ग में अन्तर होता है?
4. क्या धर्म भी राजनैतिक चेतना को प्रभावित करता है ?
5. क्या सामाजिक वर्ग राजनैतिक चेतना को प्रभावित करता है ?
6. क्या जो विद्यार्थी आम समाजिक संगठनो और समितियें मे सदस्य रहते है। उनमें राजनैतिक चेतना अधिक होती है ?
7. क्या जो विद्यार्थी राजनीतिक दलो के सक्रिय सदस्य है उनमें राजनैतिक चेतना अधिक होने की सम्भावना है ?

प्रस्तुत अध्याय द्वितीय मे विश्व विद्यालय एवं महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं की राजनैतिक चेतना का समाज शास्त्रीय अध्ययन है एवं प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत शोध मे प्रयोग किये गये पद्धति का वर्णन किया गया है ।विश्व के अनेक

रहस्यात्मक तथ्य दिये है और तथ्यों मे कुछ पुरानापन होता है फलस्वरूप मनुष्य अपनी जिज्ञासामय प्रवृत्ति से प्रेरित होकर उन तथ्यो को खोजने अथवा उनमें नयापन, नई झलक, और दृष्टिकोण लाने के लिऐ प्रयत्नशील रहता है ।और इसी प्रयत्न के उद्देश्य मानकर स्पष्टीकरण करना ही शोध कहलाता है।

शोध के उद्देश्य को आधार मानकर अध्ययन विषय के विभिन्न पक्षो को उदघाटित करने के लिए पहले से एक बनाई गई योजना की रूपरेखा को शोध प्ररचना कहते है । वस्तुतः शोध प्ररचना तीन प्रकार की होती है किन्तु प्रस्तुत अध्ययन मे अन्वेषणात्मक एवं परीक्षाणात्मक शोध प्ररचना की प्रयोग किया गया है।

चूँकि अध्ययन बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय एवं उससे सम्बद्ध समस्त महाविद्यालय के छात्र/छात्राओ के राजनैतिक चेतना के राजनैतिक चेतना के सन्दर्भ मे है जिनकी संख्या 60-70 हजार है संशोधनो एवं शोध उपाधि मे समय सीमा को दृष्टिगत रखते हुये मात्र 8 महाविद्यालयों से 400 सूचनादाता चयनित किये गये है जिसमें स्नातक एवं परास्नातक स्तर के क्रमशः 25-25 छात्र छात्राये हैं साथ-साथ यह भी ध्यान मे रखा गया है कि सूचनादाता उच्च, पिछडी जाति एवं अनु.जाति के हो ।

इस अध्याय के अर्न्तगत सूचनादातओ से सूचनाओ के संकलन हेतु विभिन्न प्रविधियो का उल्लेख किया गया है और मुख्य रूप से सूचना सकंलन साक्षात्कार अनुसूची का निमार्ण कर उत्तरो को प्रापत किया गया है जिसमे सूचनादाताओ से परिवारिक पृष्ठभूमि आर्थिक पृष्ठभूमि, सामाजिक पृष्ठभूमि तथा राजनैतिक चेतना के सम्बन्ध में प्रश्न पूछें गये है।

प्रस्तुत अध्याय मे छात्र/छात्राओं की राजनैतिक चेतना जानने हेतु राजनैतिकीकरण पैमाना बनाया गया है। जिसमे अन्तर्राष्ट्रीय,राष्ट्रीय, प्रदेशिक क्षेत्रीय

एवं मीडिया स्तर के प्रश्नो को पूछा गया हैं जिसमे न्यूनतम अंक शून्य तथा अधिकतम अंक 64 अंक निर्धारित किये गये ।

प्रस्तुत महाविद्यालय के छात्र/छात्राओ मे राजनैतिक चेतना के **अध्याय तृतीय में** विश्वविद्यालय के सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओ में राजनैतिक चेतना जानने हेतु सामाजिक पृष्ठभूमि जानना नितान्त आवश्यक है। चूँकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है अतः राजनीति, सामाजिकता का एक अंग है इस दृष्टि कोण से सामाजिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धितकुछ प्रश्न सूचनादाताओं से पूछे गये है। जिसमें सूचनादाताओं की आयु धर्म, जाति, शिक्षा का स्तर, ग्रामीण नगरीय परिवेश, आय, वैवाहिक स्थिति इत्यायिद के सम्बन्ध मे आकडे एकत्रित किये गये है।

सर्वप्रथम सूचनादाताओ की आयु पर प्रकाश डाला गया है जिसमें सर्वाधिक **संख्या** 21 वर्ष से 25 वर्ष के छात्र सूचनादाताओं 16 वर्ष से 18 वर्ष के छात्र सूचनादाताओ को है। कुल 97.50 प्रतिशत सूचनादाता हिन्दू धर्म से समबन्धित है । शोधकर्ता ने सूचनाये संकलन मे जाति को भी आधार बनाया है जिसमें से 57.25 प्रतिशत उच्चजाति, 29.50 पिछडीजाति 10.75 अनुसूचितजाति तथा 2.5 प्रतिशत अन्य सूचनादाता है वस्तुतः भारतीय समाजों के व्यवस्था मे जाति संरचना का प्रमुख महत्व है। यद्यपि शोधकर्ता की मान्यता थी कि छात्रो के स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर राजनैतिक चेतना मे भिन्नता है। इस दृष्टि से कक्षा /संकायो का भी वर्गीकरण किया जिसमें से मुख्य रूप से 67.50 प्रतिशत छात्र छात्राये स्नातक एवं 32.50 प्रतिशत छात्रा/छात्रायें परास्नातक स्तर के है अध्ययन मे जन्मस्थान परिवेश भी स्पष्ट करना आवश्यक था अतः 30.50 प्रतिशत छात्र/छात्राये ग्रामीण तथा 69.50 प्रतिशत छात्र छात्राये नगरीय परिवेश से सम्बन्धित है। सारणी क्रमांक 3.9 स्पष्ट करती है कि इस संसार में एक ऐसी आदृश्य सत्ता है जिसने

सृष्टि का निर्माणय किया है। अतः इस आदृश्य सत्ता की भगवान, ईश्वर अल्ला की पूजा नित्य प्रति की जानी चाहिये । यह बात स्पष्ट है कि आज वर्तमान समय मे अधिकांश अपराधो को धर्म से सम्बन्ध बनाकर अग्रसारित किया जाता है। सारणी कमांक 3.10 यह प्रदर्शित करती है कि अत्याधुनिक विज्ञान विकसित हो जाने पर भी सूचनादाताओ के धर्म के प्रति मानसिकता को नही बदला जा सकता है । भूत की असफलता वर्तमान का संकट उज्जवल भविष्य हेतु, सारणी कमांक 3.11 सूचनादाताओं के धार्मिक कर्मकाण्डो मे विश्वास को प्रदर्शित करती है ।

छात्र/छात्राओ की राजनैतिक चेतना की वास्तविक जानकारी के लिये आवश्यक था कि उनकी, आयु, जाति, समूह, संकाया, कक्षा धर्म, के प्रति विश्वास आदि समस्त समाजिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित आकडें एकत्रित किये गये है।

प्रस्तुत अध्याय चतुर्थ में सूचनादाताओं की परिवारिक एवं आर्थिक पुष्ठभूमि की ब्याख्या की गई है आज समाज में आर्थिक विषमता पाई जाती है इन अलग -अलग आर्थिक दशाओ का प्रभाव क्या राजनीति में पडता है यह जानने के लिये शोधार्थी ने सूचना दाताओ की आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित कुछ प्रश्नो को रखा है। इसके अतिरिक्त दूसरा यह संकल्पना थी कि रहन सहन का स्तर परिवारिक आय, विवाह, परिवार नियोजन , संरक्षक की शिक्षा, इत्यादि से राजनैतिक चेतना पर क्या प्रभाव पडता है इसके लिये शोधार्थी ने सूचनादाताओं से परिवारिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जिसमें से प्रमुख रूप से पाया कि कमशः 5000 रूपये एवं 10,000 रूपये आय वाले कमशः 38.00 एवं 28.75 प्रतिशत है राजनैतिक चेतना का उदघाटित करने हेतु कुल 87.75 प्रतिशत छात्र/छात्रायें अविवाहित एवं 14.25 छात्र/छात्रायें विवाहित है क्या विवाह मे दहेज, लेना या देना राजनीति को प्रभावित करती है, यह प्रदर्शित करती है सारणी

क्रमांक 4.9 जिसमं 64.50 छात्रायें तथा 55.50 प्रतिशत छात्र दहेज लेना या दहेज लेना पसन्द नही करते अर्थात उक्त छात्र/छात्रायें यह जानते है कि दहेज समाज विरोधी एवं कानून विरोधी कार्य है। सारणी क्रमांक 4.10 से स्पष्ट है प्रतीत होता है कि कुल 92.75 प्रतिशत छात्र/छात्राओ को परिवार नियोजन की आवश्यकता तथा 7.25 प्रतिशत छात्र/छात्राओं की मान्यता है कि परिवार नियोजन आवश्यक नही उनमें 3.25 प्रतिशत उत्तरदाता कहते है कि अधिक वच्चें का होना परिवार का प्रसन्न या खुशहाल रूप से एवं 4 प्रतिशत सूचनादाआओ की मान्यता है कि बच्चे प्रवृत्ति की देन है परिवार नियोजन एक तरह का पाप है अतः परिवार नियोजन आवश्यक नही है। इस अध्याय मे यह भी स्पष्ट है कि कुल सूचनादाताओ मे 22.25 प्रतिशत का संयुक्त 77.75 प्रतिशत छात्र/छात्राओ का एकांकी परिवार है सारणी क्रमांक 4.18 से स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के छात्र छात्राओं की राजनीतिक चेतना मे सूचनादाताओ के शिक्षित पिता/ सरंक्षको की सख्या अधिक है।

इस अध्याय मे सूचनादाताओ से पूछे गये प्रश्नो के द्वारा प्राप्त आकंडो के आधार पर छात्र छात्राओ के राजनैतिक चेतना का मूल्यांकन तथा कारणो का पता लगाने मे अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे है।

प्रस्तुत पचंम अध्याय मे राजनैतिक चेतना को प्रदर्शित किया गया है इस अध्ययन ''महाविद्यालय के छात्र छात्राओं मे राजनैतिक चेतना '' मे इस बात का आधार बनाया गया है कि क्या राजनैतिक चेतना शिक्षा या उच्च शिक्षा से विशेष सम्बन्ध है या नही तथा क्या राजनैतिक चेतना केवल पुरूषो का अधिकार है इस ओर शोध दृष्टि कोणो को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत अध्याय मे विवेचना की गयी है शोधकर्ता का यह भी प्रयत्न है कि चुने हुये सूचनादाताओं मे

राजनैतिक चेतना शिक्षा के स्तर से सम्बन्धित है या लिंग,जाति, धर्म, आय, आदि भी प्रभावित करता है भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुये 55 वर्ष हो गये है और ये विश्व का सबसे बडा प्रजातन्त्र है अतः ये आवश्यक है कि उच्चशिक्षा मे रत, छात्र छात्राओं के राजनैतिक दृष्टिकोणो का मूल्यांकन किया जाये ।

प्रस्तुत अध्याय में राजनैतिक चेतना को राजनैतिकीकरण के समनार्थी के रूप मे प्रयोग किया गया राजनैतिककरण के बारे मे डोनियल गोल्डरिच (1968) मे कहा है कि ''एक व्यक्तिगत चेतना में योगदान और संसार की राजनीति तथा सरकार से सम्बद्ध के रूप मे की गयी है''जबकि राजनैतिक सहभागिता के सन्दर्भ मे डाउजे एवं ह्यूज (1972) ने कहा है कि वे इच्छापूर्ण कार्य जिनके द्वारा समाज के सदस्य प्रशासको के चयन मे योगदान देते हेतु और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जनता का (समाज) नीति के निर्माण मे सहयोग देते है ।

इस अध्याय में छात्र/छात्राओ की वास्तविक राजनैतिक चेतना का पता लगाया गया है अर्थात, अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने के लिए एवं जो हमारी उपकल्पनाये थी उन उपकल्पनाओ को सार्थकता सिद्ध करने के लिये अत्यन्त उपयोगी अध्याय है इसके लिये हमने अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रदेशिक, क्षेत्रीय एवं मीडिया, राजनैतिक, सम्बन्धित कुल 38 प्रश्न पूछे जिनका उत्तर सम्बन्धित महाविद्यालयो के छात्र छात्राओं से प्राप्त हुआ इसमें न्यूनतम स्कोर 0 एवं अधिकतम स्कोर 64 निश्चित किया गया है।

अंत मे उपर्युक्त विवेचना के आधार पर राजनैतिक चेतना का स्पष्ट रूप दिखाई पडता है।

(प्राप्त तथ्यो का विश्लेषण)

(Analysis of finding)

अध्ययन मे प्रस्तुत सैद्धान्तिक मत एवं उद ्देश्यो को ध्यान मे रखते हुये निम्न लिखित प्राकल्पनाओ का निर्माण किया गया था वस्तुतः प्राकल्पना के सन्दर्भ मे जार्ज लुण्ड वर्ग (1957) ने कहा है कि " प्रकल्पना एक काम चलाऊ निष्कर्ष अथवा समान्यीकरण है जिसकी सत्यता की परीक्षा करना शेष होता है "

1. छात्राओ की तुलना मे छात्रो की राजनैतिक चेतना अधिक होने की सम्भावना है।
2. स्नाकोत्तर विद्यार्थियो मे स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की तुलना मे अधिक होने की सम्भावना है।
3. उच्च जाति के विद्यार्थियो मे पिछडे वर्ग एंव अनुसूचित जाति के विद्यार्थियो से अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है
4. उच्च वर्ग के विद्याथियों मे मध्यम या निम्न वर्ग विद्यार्थियों की तुलना मे अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है।
5. जो विद्यार्थी राजनैतिक दलो मे सक्रीय सहभागिता करते है उन विद्यार्थियो मे गैर राजनैतिक दलो वाले विद्यार्थियो की तुलना मे अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है।

<u>प्रथम प्रकल्पना</u>

प्रथम प्रकल्पना छात्राओ की तुलना में छात्रो की राजनैतिक चेतना अधिक होने की सम्भावना हैं, को सिद्ध करती है सारणी कमांक 5.7 ।इस सारणी से स्पष्ट होता है कि राजनैतिककरण के पैमाने के आधार पर आठ माहविद्यालयो के

200 छात्राओ एवं 200 छात्रो मे सर्वाधिक राजनैतिक चेतना छात्रो की है । सारणी क्रमांक 5.6 प्रदर्शित करती है कि पांचो पैमानो के योग मे कुल 6851 अंक छात्राओ को मिले है और 7844 अंक छात्रो को मिले है अर्थात छात्राओं का माध्य 34.25 तथा छात्रो का माध्य 39.20 है अत: पहली परिकल्पना सिद्ध होती है । **छात्राओ की तुलना मे छात्रो की राजनैतिक चेतना अधिक है ।**

द्वितीय परिकल्पना

द्वितीय परिकल्पना स्नाकोत्तर विद्यार्थियो, में स्नातक स्तर के विद्यार्थियो की तुलना मे अधिक होने की सम्भावना है, सिद्ध करती है सारणी क्रमांक 3.4, 3.5. 3.6 । साक्षात्कार के दौरान पाया गया है कि स्नातक स्तर का विद्यार्थी अत्यन्त चचंल एवं शरारती प्रकृति का होता है अर्थात इन्टर कालेज से पढने के बाद स्नातक विद्यार्थियो को महाविद्यालय परिसर मे ऐसा माहौल मिलता है जो इन्टर कालेज मे उपलब्ध नही होता, अत: उसकी प्रकृति चंचल हो जाती है प्रस्तुत अध्ययन मे हमने राजनीतिक चेतना के 2 आधार बनाये है पहले राजनैतिक करण दूसरा राजनैतिक सहभागिता । महाविद्यालय के छात्र संघ चुनाव या परिषद के चुनाव मे देखा जाता है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मतदान का प्रतिशत अधिक होता है, या जुलूस कक्षाओं मे सभा, प्रचार, पोस्टर, बैनर लगाना अर्थात राजनैतिक सहभागिता प्रबल होती है। बल्कि स्नातकोत्तर विद्यार्थियो के प्रतिशत उपरोक्त कार्यो में कम रहता है । क्योकि वे विद्यार्थियो ने अपने संयम में उपरोक्त कार्य कर चुके होते है जिससे उन्हे दिलचस्पी नही होती है वह अपनी दिलचस्पी केवल पढाई या अन्य कार्यो मे लगाते है।

दूसरी ओर स्नातक विद्यार्थियो में राजनैतिकी करण नही हो पाता क्योकि ये राजनीति को नही जानते उसका कारण है अनुभव की कमी, कम उम्र, कम

ज्ञान, आदि जबकि परास्नातक विद्यार्थियो का राजनैतिक करण अच्छा होता है अर्थात उन्हे राजनीति के बारे मे ज्ञान हो जाता है चूँकि परास्नातक विद्यार्थी निरन्तर प्रतियोगिताओ की तैयारी करते है और इन्हे विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त हो जाते है। जिस आधार पर इनका राजनैतिक ज्ञान प्रबल होता है।

उपरोक्त दोनो बिन्दु दूसरी उपकल्पना को सिद्ध करते है कि **स्नातकोत्तर विद्यार्थियो मे स्नातक विद्यार्थियो की तुलना मे राजनैतिक चेतना अधिक होती है।**

तृतीय प्रकल्पना

तीसरी परिकल्पना क्या राजनैतिक चेतना जाति पर निर्भर करती है ? क्या राजनैतिक चेतना में उच्च जाति, पिछडी जाति, अनु. जाति वर्ग मे अन्तर है, को सारणी क्रमाक 3.3 एवं 5.6 स्पष्ट करती है सारणी क्रमांक 3.3 में सूचनादाताओ को जाति समूह मे वर्गीकृत किया गया है तथा सारणी क्रमांक 5.7 प्रदर्शित करती है कि उच्चजाति एवं पिछडी जाति एवं अनुसूचित जाति की राजनैतिक चेतना के स्तर को वर्गीकृत किया गया है। और 5.6 सारणी के अनुसार उच्चजाति के छात्र छात्राओ ने राजनैतिक करण पैमाने के आधार पर क्रमशः 4254 एव 4394 अंक प्राप्त किये है जिनमा समान्तर माध्य क्रमशः **42.54** एवं **34.06** है। जब कि पिछडी जाति के छात्र/छात्राओं ने क्रमशः 2511 एवं क्रमशः 1740 जिनका समान्तर माध्य क्रमशः **36.39** एवं **35.52** है और इसीप्रकार अनुसूचित जाति के छात्र/छात्राओ ने क्रमशः 1076 एवं 767 अंक प्राप्त किये है जिनका समान्तर माध्य क्रमशः **34.70** एवं **34.87** है अर्थात पिछडी जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्र छात्राओ के अपेक्षा उच्चजाति के छात्र छात्राओ की राजनैतिक चेतना अधिक है। इसका मुख्य आधार यह माना जा सकता है कि सारणी क्रमांक 4.3 जो परिवार

की मासिक आय प्रदर्शित करती है अर्थात पिछडा वर्ग अनुसूचित जाति की आर्थिक स्थिति अच्छी नही है जिससे राजनैतिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु उचित साधन नही मिल पाते । परिणाम स्वरूप पिछडी जाति एवं अनुसूचित जाति की राजनैतिक चेतना कम है।

इस प्रकार सारणी कमांक 3.3एवं 5.6,5.7 से उपकल्पना कमांक तीन सिद्ध करती है **उच्च वर्ग की अपेंक्षा पिछडा वर्ग एवं अनुसूचित वर्ग की राजनैतिक चेतना कम है।**

चतुर्थ प्रकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालय के छात्र छात्राओं के राजनैतिक चेतना में हमने चौथी उपकल्पना बनाई है कि उच्चवर्ग के विद्यार्थियो मे मध्यम या निम्न वर्ग के विद्यार्थियो की तुलना में अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है इसे सारणी कमांक 5.7 स्पष्ट करती है । सारणी 5.6 मे उच्च जाति के छात्र छात्राओ की राजनैतिक चेतना कमशः 4254 एवं 4394 जिनका समान्तर माध्य **42.54** एवं **34.06** है इसी प्रकार निम्नवर्ग के छात्र/छात्राओ में कमशः 1076 एवं 767 अंक प्राप्त किये है जिनका समान्तर माध्य कमशः **34.70** एवं **34.87** अर्थात निम्न वर्ग के तुलना मे उच्चवर्ग की राजनैतिक चेतना अधिक है इस परिप्रेक्ष्य मे यह कहना है कि साक्षात्कार के दौरान उच्चाजाति के सूचनादाताओं की मानसिकता, सोच है विस्तृत है हर कुछ नया जानने के इच्छुक है किन्तु स्थानीयता क्षेत्रवाद, निर्धनता के कारण निम्न जाति के सूचनादाता मात्र क्षेत्रीयता पर ही जीवनयापन कर रहे है, परिणाम स्वरूप इनकी राजनीति सम्बन्धित चेतना शून्य कुछ हद तक सीमित रहती है। अतः उपरोक्त बिन्दु चौथी उपकल्पना को सिद्ध करते है

उच्चवर्ग के विद्यार्थियों मे मध्यम या निम्न वर्ग के विद्यार्थी जो की तुलना में अधिक राजनैतिक चेतना पायी जाती है।

पॉचवी प्रकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन महाविद्यालयो की छात्र /छात्राओं मे राजनैतिक चेतना मे ''पाचॅवी उपकल्पना जो विद्यार्थी राजनैतिक मे सहभागिता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भाग लेते है उन विद्यार्थियों मे गैर राजनैतिक सहभागिता वाले विद्यार्थियो की तुलना में अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है। इस सम्बन्ध मे हमने साक्षात्कार अनुसूची में कुछ प्रश्न पूछे थे जिस आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि यह आवश्यक नही है कि जो छात्र या छात्राये राजनीति में सहभागिता करते हो उन्ही की राजनैतिक चेतना ज्यादा अच्छी हो। प्राय: देखा गया है कि छात्र जीवन मे छात्र छात्राये अपने उद्देश्य (अध्ययन) को प्राप्त करने हेतु सलंग्न रहते है ।उस अध्ययन प्रतियोगिताएं आदि में राजनीति का ज्ञान भी आवश्यक है अत: प्रत्येक अच्छा पढने वाले छात्र या छात्रा प्रातियोगिताओ की तैयारी करने वाले छात्र या छात्राओं को राजनैतिक चेतना अच्छी होती है वह चाहे राजनीति मे सहभागिता ले अथवा न ले ।

उपरोक्त बिन्दु के आधार पर पांचवी उपकल्पना सिद्ध नही होती है कि जो विद्यार्थी राजनीति मे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष भाग लेते है उन विद्यार्थियो में गैर राजनीति सहभागिता वाले छात्र एवं छात्राओं की तुलना मे अधिक राजनैतिक चेतना होने की सम्भावना है।

यह आवश्यक नही की जो विद्यार्थी राजनैतिक दलो में सक्रिय सहभागिता करते है उनविद्यार्थियो में गैर राजनीतिक दलो वाले विद्यार्थियो की तुलना मे राजनैतिक चेतना अधिक हो।

प्रस्तुत अध्ययन 'महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं में राजनैतिक चेतना' के इस अध्याय मे शोध अध्ययन का सरांश और तथ्यो के विश्लेषण के साथ निष्कर्ष है वास्तव में भौगोलिक प्रकृतिक दृष्टि से समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे विषमताऐ दिखायी पडती है। यह अध्ययन आर्थिक रूप से पिछडे क्षेत्र बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत महाविद्यालयो के छात्र/छात्राओं मे किया गया है प्रमुख रूप से यह जानने का प्रयास किया गया है। क्या पिछडे क्षेत्र में राजनैतिक चेतना कम होती है ? सैद्धान्तिक मत एवं उद्देश्यो को ध्यान मे रख कर पॉच प्रकल्पनाओ का निर्माण किया गया था प्रस्तुत अध्ययन में चार प्रकल्पनाऐ सिद्ध होती है । और एक प्रकल्पना अस्पष्ट एवं सिद्ध नही होती है ।

: अध्याय सप्तम :

परिशिष्ट

पुस्तक विवरण एवं सन्दर्भ

सक्षात्कार अनुसूची

REFERENCES

Alberto Martinelli	(2001)	Globsal Governance Power Accountability and the European Union Sociological Bulletein, 50 (i) March 2001.
Apter Davide E.	(1965)	The politics of modernization. (Chicago : The university of Chicago Press 1965)
Almond R. Rowel		Comparabine Politics
Andy barnard and Terry burgls	(1995)	Sociology Explained 248 Combridge University Press - 1996
Ahmed Sarfaroj	(1991)	Impact of Area of Residence and SES the Aequisition of Prejudice Among Collage Student. Indian Journal of Socio Research (Sep 1991) P 2000 - 205.
Baoluizhang	(2000)	The Political Economy of China's 1994 fiscal Reborm Vol.-28 No.-4 Asiciam Profile August 2000.
Bottomare Tom	(1981)	राजनीतिक समाजशास्त्र हिन्दी अनुवाद 1981
Baviskar B.S.	(2001)	N.G.U.S. and Civil Society in India Sociological Bulletein, 50 (i) March 2001.
C.E.G. Catlin		Systematic Politics (1960)
Colman, G. Almond		Politics of developing Areas.
Craing Calhoun	(1990)	The Ideology of Intellectuals and the Chinese student Protest movement of 1989, Praxis Internationa, 1990, 10, 1-2 APS July, 131-160.

Dahl, R.A. (1968) Power International Encyclopedia of the Social Science Val 12 (1968)

Dowse, Robert E & Honghsy Jhon, A (1972) Political Sociology London, New York, Syd Ney, Toronto, John Wiley and Sons.

Davis, Kingslay (1949) The sociology of the Parent, Youth Conflice, American Sociology revien (August 1940) & Adolescence and Social Structure Amnals of the American Academy of Political and Social Science 230 November (1944)

David Easton (1953) The Political System (New York: Alfred A. Knopf, Inc., 1953)

Dr. Dharmavir राजनैतिक समाजशास्त्र

Grant Jordan (1990) The Pluralism Plualism An Anti Theory? Um Polytical Studies 1990, 38 2 June 286-301.

Humen, Herbert H & Lane, Robert (1959) Political Sociology (Glancoe: ILL Press, 1959) and Political life why people Get Involved in politics ? (glancoeill Free Press 1959).

I Thiel De Solopool The role of Communication in the process of the modernization and Technological change in best F. Houselitz.

Inkeless, Aelx - (1973) The School as a Centext for modernisation Internal Journal of Comparative Sociology XIV 3-4: 163-179

Inkeless, Alex and David H Smith	(1974)	Becoming modern Combridze Harvard University Press.
KaviraySudipta	(1997)	Politics in India Delhi Oxford university Press - 01-09-1997
Kothari,Rajani	(1970)	Caste in Indian politics (New Delhi) Orient Lengman .
Libset, S.M.		The political man : The social Base of Politics.
Larnel, Doniel	1963	The Passing of Tradition -al Society : Modernising the middle East Glencae, ILL : Free Press
Lewis A Cozer (ed)		Political Sociology
Milibrath,Lester	(1965)	Political participation Chicago : Rand Mc Mally.
Malik Yogendra Kumar & Jesso F. Marquette	(1974)	'Changing Social Values of College Students in Punjab Asian Survey 4 (9) 795 - 806.
Mukhopadhyay A.K.		Political Sociology
Pye		"Introduction" to Communicate and political development.
Pearson, Karl (1949)		The methodology of social sciences
Rudalph, L.I. Rudolph, S.H. 1967		The Modernity of Indian Tradition, New Delhi Orient Longman.
Rondall Vicky and The obold Ro bin	(1998)	Political Change and under development (1998)
R.T. Jangan		A Test book of Political Sociology
Robert A. Dabl		Modern Political Analysis
Reddy T. Chandramohan - ( )		Class imagery and political ideology: Some further observation in India,

Indian Journal of Social research Vol. 40 (4) (255-265)

Sock B.V. (1964) Social Changes and College students of Gujrat - Barode Maharajganj Shivaji Rao University.

S.P. Huntington, (1965) Political development an Political Decay,World Politics,(1965)

Sullivan, Edward Eugene, (1968) Education in Social Change Bombay, Asian Publishing House.

Seth V. N. (1982) "Sociological Study of Harijan Protest" 1982 Punjab University Chandigarh.

Sharma, S.L. (1978) "Concept of modernisation Rationality as an alternative Interception" Social Action Vol-28 January- March

Singh Yogendra (1968) "Caste and Class: Some Aspects of continuity and charge, sociological Bulletin (Vol. xvii) No. 2, September

Souza, D. Victor (1992) Social structure and political Institution: The Panchayat Raj Indian Journal of Social Research (1992).

Singh Mahendra Prasad (1994) Political Parties and political Economy of federation A Paradigm Shift in Indian Politis The Indian Journal of Social Science, Vol. - 17 Vol.-2 (1994) Page Dage Publication New Delhi Oake / Wonder.

Stimson C. Shannon (1993) Utility Property and Political Participation fames will on democratic reform American Publican Science Review Vol.-87,No. 4 Dec. 1993.

Schofield Barry (2002) Partner's in Power Governing the self sustaing community Sociology Vol. 36-3: 66 3-683 Sage Publication wonder - Thousand Oaks New Delhi.

Sklais Laslie (2002) The Transnational Capitalist Class and global politics Deconstructing the corporatestate connection, International political science Review 2002 Vol. 23

Weber max (1952) From max weber : Essays in sociology trans and edited by H.H Gerth and mills C. hvight (under :Rout) ledge and kegan poultitd 1952

Young P.V. (1966) Scientific Social surveys and Research

साक्षात्कार अनुसूची

महाविद्यालयो के छात्र एवं छात्राओं की राजनैतिक चेतना का समाज शास्त्रीय अध्ययन (बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की राजनैतिक चेतना का तुलनात्मक समाज शास्त्रीय अध्ययन)

शोध कर्ता – प्रमोद कुमार शिवहरे

शोध निर्देशक – डा0 वी0 एन.सेठ
डायरेक्टर
छत्र0 साहू जी महा0 वि0वि0 कानपुर

1. सूचनादाता का नाम
2. सूचनादाता का आयु

16 से 20 वर्ष - 1
20 से 25 वर्ष - 2
25 से 30 वर्ष 3
30 से ऊपर - 4

3. सूचनादाता का धर्म

हिन्दू -1
मुस्लिम - 2
ईसाई -3
सिक्ख - 4
अन्य कोई (बताइये) -5

4. जाति

उच्चजाति (बताइये) -1
पिछडाजाति (बताइये) -2
अनुसूचित (बताइये) -3
मुस्लिम (बताइये) - 4

5. आप किस कक्षा/संकाय के विद्यार्थी है।

	स्नातक	परास्नातक
कला		
विज्ञान		
वाणिज्य		
कृषि		
इन्जीनियरिंग		
मेडिकल		
विधि		

6. आपका जन्म स्थान कहा है।

ग्रामीण -1
नगरीय -2

7. आपके पिता/संरक्षक का व्यवसाय (बताइये)

8. क्या आपकी माॅ भी कोई व्यवसाय करती है (बताइये)

9. आपके पिता के शिक्षा का स्तर (बताइये)

10. आपकी माता के शिक्षा का स्तर (बताइये)

11. आपके परिवारो की मासिक आय (बताइये)

12. क्या आप विवाहित है

हाॅ - 1
नही - 0

13. यदि नही तो आप किस उम्र मे विवाह करना पसन्द करेगे ।

19-22 -1
23-25 -2
26-28 -3
29-30 -4
अन्य कोई-5

14. आप विवाव किसके निणर्य से करेगे

स्वयं	1
मातापिता	2
सगे सम्बन्धी	3
पारस्परिक सहमति	4

15. क्या आप अपना विवाह

केवल अपनी ही जाति मे करेगे।	1
अपने ही धर्म मे करेगे	2
अन्तर जातीय	3
किसी मे नही	4

16. आप विवाह किस रीति से करेगे -

परम्परागत धार्मिक रीति से	1
कोर्ट द्वारा	2
अन्य	3

17. आप विवाह मे क्या लेना, क्या देना पसन्द करेगे -

नगद	1
जेवरात	2
सम्पत्ति	3
कपड़े	4
अन्यकोई	5
कुछ नही	6

18. क्या आप विवाह के पश्चात परिवारिक नियोजन की आवश्यक मानते है।

यदि हॉ तो क्यो (कारण बताइये)

यदि नही तो क्यो (कारण बताइये)

19. क्या आप एक लडके का होना आवश्यक मानते है -

यदि हॉ तो क्यो (कारण बताइये)

20. आप किस प्रकार के परिवार मे रहना पसन्द करते है।

एकांकी परिवार	-1
संयुक्त परिवार	-2

21. क्या आप नित्य पूजा करते है।

हॉ	-2
कभी कभी	-1
नही	-0

22. क्या आप धार्मिक कर्मकाण्ड करने मे विश्वास करते है।

हॉ	-1
नही	-0

23. क्या आप दूसरे धर्म के पूजा स्थलो मे जाना पसन्द करते है।

हॉ	-1
नही	-0

24. क्या आप भूतप्रेत मे विश्वास करते है ।

हॉ	-1
नही	-0

25. आप किसी शुभकार्य मे जा रहे है यदि कोई छीक देता है बिल्ली रास्ता काट जाती है या कोई काना, अन्धा मिल जाता है तो आप क्या करते है।

उधर से नही जाते है	-1
थोडी देर रूक जाते है	-2
इससे कोई फर्क नही पडता	-3

अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक करण का पैमाना

26. अन्तर्राष्ट्रीय संध के सचिव का नाम

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

27. हाल मे हुये भारत के हवाई जहाज के अपहरण का विमान किस स्थान पर रूका था जहॉ से अपहर्ता वापस दिल्ली आये ।

सही -1

गलत -0

28. निम्न मे से कौन सा राष्ट्र समाजवादी है।

रसा

अमेरीका

ईरान

अल्बेनिया

फ्रान्स

तीन सही उत्तर -1

दो सही उत्तर -2

एक सही उत्तर -3

गलत उत्तर -4

29. व्रिटेन की राजकुमारी डायना की मृत्यु कब हुई ।

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

30. ईराक और ईरान के बीच युद्ध कब हुआ था ।

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

31. आप लम्बे अवकाश के समय क्या करते है

पिकनिक जाना -1

तीर्थस्थल जाना -2

राजनीति करना -3

अन्य -4

राष्ट्रीय राजनैतिक करण का पैमाना

32. भारत के दो बार बने अन्तरिम प्रधान मंत्री का नाम बताइये

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

33. भारत के वर्तमान राष्ट्रपति का नाम बताइये

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

34. भारत के संविधान समिति के अध्यक्ष का नाम बताइये ।

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

35. बोफोर्स तोप किस राजनेता से सम्बन्धित है।

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

36. भारत की निम्न तीन पार्टियो के चुनाव निशान बताइये

पार्टी	चुनाव निशान	
1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	तीन सही उत्तर	-3
2. समता पार्टी	दो सही उत्तर	-2
3. बहुजन समाज पार्टी	गलत उत्तर	-0

37. भारत की मुख्य तीन राजनैतिक समस्याओं के नाम बताइये

समस्या		
1.	तीन सही उत्तर	-3
2.	दो सही उत्तर	-2
3.	एक सही उत्तर	-1
4.	गलत उत्तर	-0

38. भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त का नाम बताइये

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

39. भारत के पिछडे आम चुनाव कब हुये

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

प्रादेशिक राजनैतिकीकरण का पैमाना

40. प्रदेश के वर्तमान मंत्री का नाम बताइये

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

41. उच्चन्यायालय के मुख्य न्यायाधीश का नाम बताइये ।

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

42. प्रदेश के पिछले आम चुनाव कब हुये थे ।

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

43. उत्तरप्रदेश में कुल कितने विधान सभा सदस्य है।

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

44. प्रदेश मे कुल कितने विश्व विद्यालय है।

सही उत्तर -1

गलत उत्तर -0

45. मानवीय सलमान खुर्शीद किस राष्ट्रीय पार्टी से सम्बन्धित है।

सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

46. क्षेत्रीय लोक सभा सदस्य का नाम , पार्टी, निवास स्थान का नाम बताइये ।

नाम	पार्टी का नाम	निवास स्थान
1.		
2.		
3.		

तीन सही उत्तर -3
दो सही उत्तर -2
एक सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

47. क्षेंत्रीय विधान सभा सदस्य का नाम पार्टी , निवास स्थान का नाम बताइये।

नाम	पार्टी का नाम	निवास स्थान
1.		
2.		
3.		

तीन सही उत्तर -3
दो सही उत्तर -2
एक सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

48. अयोध्या प्रकरण के समय किस पार्टी की सरकार थी

सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

49. अपने विश्वविद्यालय के कुलपति का नाम बताइये -

सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

क्षेत्रीय राजनेतिकीकरण का पैमाना

50. अपने महाविद्यालय के प्राचार्य का नाम बताइये

सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

51. महाविद्यालय के अध्यक्ष सचिव एव उपाध्यक्ष का नाम बताइये

1.
2.
3.

तीन सही उत्तर -3
दो सही उत्तर -2
एक सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

52. क्या आपके महाविद्यालय मे छात्र नेता चुनाव उचित है।

सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

53. आपके क्षेत्र मे किस पार्टी का धनाधार अधिक है।

सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

54. क्या आप राजनीति मे दिलचस्पी रखते है -

हॉ -1
नही -0

55. क्या आप राजनैतिक दल से सम्बन्धित है।

हॉ -1
नही -0

56. क्या आप महाविद्यालय के संविधान से परिचित है ।

हॉ -1
नही -0

57. स्थानीय नगर पालिका अध्यक्ष का नाम बताइये

सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

58. अपने जिलाधिकारी जिला जज एवं उच्चा शिक्षाधिकारी का नाम बताइये

1.
2.
3.

तीन सही उत्तर -3
दो सही उत्तर -2
एक सही उत्तर -1
गलत उत्तर -0

मीडिया राजनैतिक का पैमाना

59. क्या आप अखबार पढते है।

प्रतिदिन -3
रविवार या छुट्टी के दिन-1
कभी-कभी -1
कभी- नही -0

60. आप अखबार मे प्रमुखता क्या पढते है।

स्थानीय खबरे -1
राष्ट्रीय खबरे -2
अन्तर्राष्ट्रीय खबरे -2
सभी -3
कुछ नही -0

61. क्या आप दूरदर्शन टी0वी0 देखते है ।

प्रतिदिन	-3
रविवार छुट्टी के दिन	-2
कभी कभी	-1
कभी नही	-0

62. आप टी0वी0 मे क्या देखते है ।

समाचार	-2
धारावाहिक	-1
फिल्म	-1
अन्ताक्षरी	-1
अन्य	-1
कुछ नही	-0

दिनांक :...................

हस्ताक्षर:...................